दारुल ऊ़लूम देवबन्द के महान उलमा और विद्‌वान

By:

मौलाना मुहम्मदुल्लाह क़ासमी

Translation

प्रोफेसर मुहम्मद सुलैमान

(8)

दारुल उ़लूम के महा पुरूष और विद्वान

1. दारुल उ़लूम के सरपरस्त (संरक्षक)
2. दारुल उ़लूम के कुलपति (मोहतमिम)
3. दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रिस और शैखुलह़दीस
4. दारुल उ़लूम के वर्तमान उलमा
5. दारुल उ़लूम के प्रसिद्ध उलमा

दारुल उ़लूम के सरपरस्त (संरक्षक)

1	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी (1832–1880)
2	ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही (1827–1905)
3	शेख़ुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी (1851–1920)
4	ह़ज़रत मौलाना अबदुर्रहीम रायपूरी (0000–1919)
5	ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी (1863–1943)

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी

(1832–1880)

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी दारुल उ़लूम के प्रथम संस्थापक और सरपरस्त (संरक्षक) थे। वह वलीयुल्लाही इ़ल्म व ज्ञान के बहुत बड़े विद्वान थे। ह़ज़रत नानौतवी के समकालीन व्यक्ति सर सय्यद अह़मद खां ने विद्यार्थी जीवन में आप की बुद्धिमत्ताा का वर्णन करते हुए अपने विचारों को इस प्रकार व्यक्त किया हैं: ''लोगों का विचार था कि मोलवी मुह़म्मद इसह़ाक़ साह़ब के बाद कोई व्यक्ति उनका उदाहरण तथा उनके गुणों में पैदा होने वाला नहीं जन्म लेगा। मगर मोलवी मुह़म्मद क़ासिम साह़ब ने अपनी नेकी, दीनदारी, परहेज़गारी, सज्जनता से सिद्ध कर दिया कि मोलवी मुह़म्मद इसह़ाक़ साह़ब के बदले में अल्लाह ने और व्यक्ति को भी उत्पन्न कर दिया है बल्कि कुछ बातों में उन से भी अधिक। बहुत लोग ज़िन्दा हैं जिन्होंने मोलवी मुह़म्मद क़ासिम को बहुत छोटी उम्र में दिल्ली में भी शिक्षा प्राप्त करते देखा है। आरम्भ ही से नेकी भलाई, तक़्वा ख़ुदा परस्ती झलकने लगी थी। ...... इस युग

में सब लोग मानते हैं और सम्भवतः वह लोग भी जो उन से शत्रुता और विरोध करते थे मानते हैं कि मोलवी मुह़म्मद क़ासिम इस दुनियां में अद्धितीय थे। उनका स्तर इस युग में सम्भवतः शिक्षा के क्षेत्रों में शायद शाह अ़ब्दुल अ़ज़ीज़ से कुछ कम हो मगर और दूसरी तमाम बातों में उन से बढ़ कर था। विनम्रता और नेकी और सादगी में यदि उन का स्तर मोलवी मुह़म्मद इसह़ाक़ से बढ़ कर न था, तो कम भी न था। वास्तविकता यह है उनका स्वभाव फ़रिश्तों जैसा था। ऐसे मनुष्य से युग का वंचित हो जाना लोगों के लिये जो उनके बाद ज़िन्दा हैं बहुत अफ़सोस का कारण है।" (अ़लीगढ़ इंस्टिटयू गज़ेट 24, 4, 1880)

1832 ई. को आप सहारनपुर ज़िले के क़स्बा नानौता में जन्मे। आरम्भिक शिक्षा कस्बा नानौता ही में हुई। मकतब की शिक्षा के बाद देवबन्द में कुछ दिनों तक मौलाना महताब अ़ली के मकतब में पढ़ा। फिर अपने नाना के पास सहारनपुर में चले गये और वहां मोलवी नवाज़ से अ़रबी सर्फ़ व नह़व (व्याकरण) पढ़ा। 1843 के आखिर में आप को ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली नानौतवी अपने साथ दिल्ली ले गये और पढ़ाना आरम्भ किया। इस के बाद उन को दिल्ली कॉलेज में दाख़िल कर दिया गया। मगर ह़ज़रत नानौतवी वार्षिक परीक्षा में सम्मिलित नहीं हुए।

दिल्ली कालेज में दाख़ले से पहले मौलाना ममलूकुल अ़ली से मंतिक़ व फ़लसफ़ा और कलाम की किताबें मीर जाहिद, क़ाज़ी मुबारक, सदरा वग़ैरह उन के मकान पर पढ़ चुके थे। अन्त में इस पढ़ाई में सम्मिलित हुए जो कुरआन और ह़दीस में सारे हिन्दुस्तान में केन्द्रीय स्थान रखता था। ह़ज़रत शाह वलीयुल्लाह की शिक्षा संस्था में उस समय शाह अब्दुल ग़नी मुजद्दिदी इंचार्ज थे। उन से ह़दीस की शिक्षा प्राप्त की। विद्यार्थी जीवन में ही उन के ज्ञान की प्रसिद्धि हो गयी थी।

सह़ीह़ बुख़ारी का ह़ाशिया (फ़ुटनोट) लिखना

शिक्षा प्राप्ति के पश्चात मौलाना नानौतवी ने जीवन यापन के लिये ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद अ़ली मुह़द्दिस सहारनपुरी के प्रेस अह़मदी दिल्ली में अपने लिये पुस्तकों को एडिट करने का कार्य अपनाया। उसी समय में ह़ज़रत मौलाना अह़मद अ़ली के कहने पर सह़ीह़ बुख़ारी के

अन्तिम के पांच छह सिपारों के फ़ुटनोट भी लिखे। ह़ज़रत नानौतवी की किसी जीवनी में इस का ख़ुलासा मौजूद नहीं है कि उन्होंने तालीम से कब फ़राग़त हासिल की और सह़ीह़ बुख़ारी की तसह़ीह़ (एडिट) और ह़ाशिया (फ़ुटनोट) लिखने की घटना किस सन में घटित हुई। सवानेह़ क़ासमी (ह़ज़रत मौलाना सय्यद मनाज़िर ह़सन गीलानी) से इतना पता चलता है कि उस समय आप की उ़मर बाईस तेईस साल होगी। मौलाना सहारनपुरी का महत्वपूर्ण कारनामा यह है कि उन्होंनं ह़दीस की हस्तलिखित किताबों को बड़े कठोर प्रयत्न से ठीक करके छाप कर आ़म किया। अतः 1848 ई. में जामे तिरमिज़ी और 1850 ई. में सह़ीह़ बुख़ारी प्रकाशित की। जो लोग ह़ज़रत नानौतवी के निकट न थे उन को सह़ी बुख़ारी की तसह़ीह़ व तहशीहा (एडिट करने और फ़ुटनोट लगाने) जैसा सावधानी रखने वाला इ़ल्मी काम एक अल्पायु को सौंप दिये जाने पर आश्चर्य होना चाहिए मगर ह़ज़रत मौलाना अह़मद अ़ली जैसे विद्वान ने अपने बुद्धिमान शागिर्द को पहचान लिया था।

इसलाम की सुरक्षा, सेवा, और मदरसों का विकास

ह़ज़रत नानौतवी का सबसे महान कार्य हिन्दुस्तान में दीन की शिक्षा को जीवित करने के लिये मदरसों के द्वारा एक आन्दोलन चलाना था। ह़ज़रत नानौतवी ने मदरसों के लिये उसूले हश्त गाना (आठ नियम) बनाये थे, जिन के आधीन उन को चलना था। उन के प्रयत्न से विभिन्न स्थानों पर दीनी मदारिस जारी हो गये, अतः थाना भवन, ज़िला मुज़फ़रनगर, गुलावठी ज़िला बुलन्दशहर, कैराना ज़िला मुज़फ़्फ़रनगर, बुलन्दशहर, मेरठ, मुरादाबाद आदि स्थानों पर मदरसे स्थापित हो गये जिनमें से अधिकतर आज तक स्थिर हैं और अपने आस–पास में इ़ल्म व दीनी ख़िदमत कर रहे हैं। आज भारत, पाकिस्तान और बंगलादेश में जो दीनी मदरसों का जाल बिछा हुआ है वास्तव में ह़ज़रत नानौतवी के उसूले हश्त गाना की रौशनी में क़ायम हैं।

वर्तमान समय में आज जो पढ़ने पढ़ाने का कक्षा वार तरीक़ा प्रचलित है, पुराने समय में ऐसा नहीं था बल्कि इसके ख़िलाफ़ था। साधारण रूप से आ़लिम (विद्वान) अपने मकानों और मस्जिदों में बैठ कर अल्लाह के नाम पर पढ़ाते थे और जीवन चलाने के लिये कोई व्यापार

या दूसरा काम करते थे। या अल्लाह पर भरोसा रख कर जीवन गुज़ारते थे। ह़ज़रत नानौतवी ने अपने बड़ों के इस रिवाज को जारी रखा। ह़ज़रत नानौतवी साह़ब जीवन निर्वाह के साधन के साथ–साथ पठन–पाठन का सिलसिला भी सदैव जारी रखा। ह़दीस की 6 मशहूर किताबों 'सिह़ाह़–ए–सित्ता' के अ़लावा मसनवी मौलाना रूम और दूसरी किताबें भी पढ़ाते थे। मगर पढ़ाना किसी मदरसे के बजाये, प्रेस की चार दीवारी, मस्जिद या मकान पर होता था जहां विशेष शिष्य ही उपस्थित होते थे।

1860 ई. में ह़ज के लिये तशरीफ़ ले गये। वापसी के बाद मुजतबाई प्रेस मेरठ में नौकरी करली 1868 ई. तक इसी प्रेस से सम्बद्ध रहे। इसी ज़माने में दूसरी बार ह़ज के लिये जाना हुआ और इस के बाद हाशमी प्रेस से सम्बन्ध हो गया। इस बीच पठन–पाठन बराबर जारी रहा, मगर किसी मदरसे की नौकरी कभी पसन्द नहीं की, सवानेह़ क़ासमी मख़्तूतः के लेखक लिखते हैं– "यह सबको मालूम है कि इसलामी मदरसा देवबन्द आप ही का स्थापित किया हुवा है, मगर कभी लाभ उठाने का प्रयत्न नहीं किया। आरम्भ में मजलिस–ए–शूरा ने प्रयत्न किया भी कि इस मदरसे की मुदर्रसी स्वीकार कर लें और उस के बदले वेतन लें, मगर स्वीकार नहीं किया। और कभी किसी प्रकार से भी एक पाई के लिये भी मदरसे से नहीं चाहा। हांलाकि रात–दिन मदरसे की भलाई के लिये तल्लीन रहे और तालीम में लगे रहे। अगर कभी मदरसे की क़लम दवात से अपना कोई ख़त लिखते तो तुरन्त एक आना मदरसे के ख़ज़ाने में जमा कर देते।

आवभगत और संतोष, विनम्रता इस सीमा तक थी कि आ़मिल के बनाव श्रंगार, पगड़ी, आदि का भी प्रयोग नहीं करते थे। सम्मान से बहुत घबराते थे। कहा करते थे– "इस नाम को इ़ल्म ने ख़राब किया नहीं तो अपनी दशा को ऐसी मिट्टी में मिलाता कि यह भी न जानता कि क़ासिम नामी कोई व्यक्ति पैदा भी हुवा था।" जिन कामों में प्रदर्शन होता उन से दूर रहते थे।

अन्य धार्मिक सेवायें

हिन्दुस्तान में अंग्रेज़ी साम्राज्य के शासन के साथ–साथ ई़साईयत ने

भी पैर फै़लाना आरम्भ कर दिया था और हर प्रकार से हिन्दुस्तान के लोगों और विशेष रूप से मुसलमानों को ईसाई बनाने की ज़बर दस्त कोशिश की गई। कम्पनी के समर्थन और सहायता से मुल्क के प्रत्येक क्षेत्र में ईसाईयत का प्रचार लागू कर दिया और 1857 ई. के इन्क़लाब के बाद इस बात ने बड़ा ज़ोर पकड़ा। पादरी बाज़ारों, मेलों और आम जन समूहों में इस्लाम और ह़ज़रत मुह़म्मद सल. पर आरोप लगाने लगे। ह़ज़रत नानौतवी ने दिल्ली में रहते हुए जब यह ह़ालत देखी तो अपने शागिर्दों से फ़रमाया कि वह भी इसी प्रकार खड़े होकर बाज़ार में भाषण दिया करें और पादरियों की काट करें। एक दिन स्वयं अपने आप को प्रकट किये बग़ैर जन समूह में पहुंचे और पादरी तारा चन्द से मुनाज़रा (वादविवाद) किया और उस को भरे बाज़ार में हराया।

अंगरेज़ सरकार ने एक ख़त़रनाक चाल चली कि हिन्दुओं को मुसलमानों के मुक़ाबले खड़ा किया। हिन्दुस्तान में मुसलमानों को सियासी बढ़ोतरी प्राप्त थी। अंग्रेज़ों ने अपनी नीति के तह़त हिन्दुओं को बढ़ाया और मुसलमानों को घटाया। जब समाजी और आर्थिक क्षेत्र में हिन्दू आगे बढ़ गये तो उन को धार्मिक बड़ाई समझाई और हिन्दुओं को मुसलमानों के साथ वाद–विवाद पर उतार दिया और इस के लिये अवसर भी दिया ताकि हिन्दू मुसलमानों से खुले आ़म मुनाज़रा करें।

शाहजहांपुर (यू.पी.) के समीप चान्दपुर गांव में वहां के ज़मींदार प्यारे लाल कबीर पंथी पादरी नौलिस की सरबराही और राबर्ट जार्ज कलक्टर शाहजहांपुर की आज्ञा से 8 मई 1876 ई. को एक मेला खुदा शनासी लगाया गया, जिस में ईसाई, हिन्दू और मुसलमन तीनों धर्मों के सदस्यों को इश्तहार के द्वारा बुलाया गया कि वह अपने–अपने धर्मों की सच्चाई को सिद्ध करने के लिये आयें। मौलाना मुनीर नानौतवी और मोलवी इलाही बख़्श रंगीन बरेलवी के अतिरिक्त मौलाना अबुल मंसूर देहलवी मिर्ज़ा मोहिद जालंधरी, मोलवी अह़मद अ़ली, मीर हैदर देहलवी, मोलवी नोअ़मान बिन लुक़मान भी सम्मिलित हुए। इन तमाम आ़लिमों ने इस मेले में भाषण दिये और इन का बड़ा प्रभाव हुआ। ह़ज़रत नानौतवी ने तसलीस व शिर्क के ख़िलाफ़ और तौह़ीद (अद्वैत) के समर्थन में ऐसा भाषण दिया कि जलसे के मुख़ालिफ़ (विरोधी) व मुवाफ़िक़ (समर्थक) सब मान गये। एक अख़बार लिखता है– "8 मई 1876 ई. के जलसे में

मौलाना मुह़म्मद क़ासिम साह़ब ने भाषण दिया और इसलाम की अच्छाईयां बयान कीं। पादरी साह़ब ने तसलीस का बयान विचित्र अंदाज़ में बयान किया कहा कि एक ख़त में तीन गुण पाये जाते हैं, लम्बाई, चौड़ाई, और गहराई तो तसलीस (तीन) हर प्रकार से सिद्ध है। मोलवी साह़ब ने इस का खण्डन उसी समय कर दिया। फिर पादरी साह़ब और मोलवी साह़ब भाषणों द्वारा विवाद करते रहे। इसी पर जलसा बरख़ास्त (ख़त्म) हो गया। तमाम समीप और दूर चारों ओर शोर मच गया कि मुसलमान जीत गये। जहां एक इसलामी विद्वान खड़ा हो तो उस के आस पास हज़ारों आदमी इकट्ठा हो जाते थे। पहले दिन के जलसे में जो आरोप इसलाम की ओर से थे उन का जवाब इसाइयों ने कुछ नहीं दिया। मुसलमानों ने इ़साइयों के सभी उत्तर दिये और सफलता पाई।"

ह़ज़रत नानौतवी मेला ख़ुदा शनासी में दोनों साल सम्मिलित हो कर इ़साईयों के षड़यन्त्र को असफल बनाया। इस अवसर पर प्रोफ़ेसर अय्यूब क़ादरी ने मौलाना अह़मद ह़सन नानौतवी की सवानेह़ में लिखा हैः "एक बात यहां ख़ास तौर पर गौरतलब है कि मेला ख़ुदा शनासी शाहजहांपुर ऐलान व इश्तिहार के साथ दो साल हुआ और उस में एक तरह़ से इस्लाम धर्म को चैलेंज किया गया था। शाहजहांपुर से बरेली और बदायूं बिल्कुल समीप है। मगर इस मेले बदायूं और बरेली के किसी उ़लमा की दिलचस्पी का कोई सुराग नहीं मिलता।"

इसी तरह पंडित दयानन्द सरस्वती ने मुसलमानों को चैलंज किया। ह़ज़रत मौलाना नानौतवी मुनाज़रे के लिये गए मगर पंडित जी इस के लिये तैयार नहीं हुए और रूड़की से चले गये। ह़ज़रत मौलाना नानौतवी ने आ़म जलसे में उनके आरोपों का खण्डन किया।

इस के बाद पंडित जी मेरठ पहुंचे वहां भी उन्हों ने यही अंदाज़ अपनाया। मेरठ के मुसलमानों ने ह़ज़रत नानौतवी से प्रार्थना की जिस पर आप मेरठ तश्रीफ़ ले गये। पंडित जी ने वहां भी बातचीत करने से मना कर दिया। मजबूरन ह़ज़रत नानौतवी ने आ़म जलसे में बहुत ज़ोर का भाषण देकर आरोपों के उत्तर दिये।

स्वतन्त्रता संग्राम में भाग लेना

1857 ई. के स्वतन्त्रता संग्राम में इन्हों ने बढ़—चढ़ कर भाग लिया

और ज़िला मुज़फ़रनगर की शामली तह़सील फ़तह़ कर डाली। मगर उस समय के बिगड़े हुए सियासी ह़ालात ने शामली से आगे बढ़ने का अवसर नहीं दिया। स्वतंत्रता संग्राम में ह़ज़रत नानौतवी के कार्यों का इतिहास में एक प्रकाशमान अध्याय है। आप ने हिन्दुस्तानियों के दिलों में आज़ादी की शमा रोशन की और अंग्रेज़ों से हिन्दुस्तान को आज़ाद करने के लिये एक ठोस प्रोग्राम तैयार किया जिस को आप के बाद आप के शागिर्दों में से ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने पूरा कर के अंग्रज़ों की ईंट से ईंट बजादी।

पुस्तकें: ह़ज़रत नानौतवी की दो दर्जन से अधिक पुस्तकें हैं। उन्हों ने अपने ज़माने में उन घटनाओं पर क़लम उठाया है जो उस समय अधिकतर वादविवाद के अधीन थीं। उनकी तमाम किताबें किसी न किसी के जवाब में लिखी गयी हैं।

मृत्यु: ह़ज़रत नानौतवी ने 49 साल की उ़मर में 4 जुमादल ऊला 1297 हि. (15 अपरैल 1880) को जुमेरात (बृहस्पतिवार) के दिन वफ़ात पाई। दारुल उ़लूम के उत्तर की ओर क़ासमी क़ब्रिस्तान में आप दफ़न हैं।

ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही
(1827–1905)

ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही दारुल उ़लूम के दूसरे सरपरस्त (संरक्षक) थे। दारुल उ़लूम से ह़ज़रत गंगोही का आरम्भ ही से गहरा लगाव रहा है। हजरत गंगोही अनेक अवसरों पर दारुल उ़लूम का दौरा करते, मदरसे का निरीक्षण करते आौर विद्यार्थियों की परीक्षा लेते। दारुल उ़लूम के जलसों में शामिल होते। वह ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी के गहरे दोसत थे। दोनों ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब मुहाजिर मक्की के प्रसिद्ध ख़लीफ़ा थे। 1292/1875 में दारुल उ़लूम की प्रथम इमारत नौदरा और अहाता मौलसरी की नींव अन्य उलमा के याथ हजरत गंगोही ने रखी। दारुल उ़लूम की स्थापना के बाद दारुल उ़लूम के विद्यार्थी शिक्षा प्राप्त करने के बाद गंगोह ह़ाज़िर होते और ह़ज़रत गंगोही के ह़दीस के सबक़ में ह़ाज़िर हो कर लाभ प्राप्त करते थे।

ह़ज़रत गंगोही 6 ज़ीक़ादा 1242 हि. (जून 1827) को पीर के दिन गंगोह में पैदा हुए। इनके पिता मौलाना हिदायत अह़मद अपने समय के महान विद्वान थे। वह दिल्ली के ह़ज़रत शाह गु़लाम अ़ली मुजद्दिदी के ख़लीफ़ा थे। ह़ज़रत गंगोही क़ुरआन शरीफ़ घर पर ही पढ़कर अपने मामूं के पास करनाल चले गये और उन से फ़ारसी की किताबें पढ़ीं। फिर मोलवी मुह़म्मद बख़्श रामपुरी से सर्फ़, व नहव की शिक्षा प्राप्त की। 1261 हि. में दिल्ली पहुंच कर ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली नानौतवी से शिक्षा प्राप्त की। यहीं पर ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी से मुलाक़ात हुई जो फिर सारी उ़मर क़ायम रही। दिल्ली में मअ़क़ूलात विषय की कुछ किताबें मुफ़्ती सदरूद्दीन आज़ुर्दह से भी पढ़ीं। अन्त में ह़ज़रत शाह अब्दुल ग़नी साह़ब मुजद्दिदी की ख़िदमत में रह कर ह़दीस का ज्ञान प्राप्त किया।

शिक्षा प्राप्ति के बाद ह़ज़रत ह़ाजी इम्दादुल्लाह साह़ब की खिदमत

में रहकर बैअत हुए। ह़ज़रत मौलाना याकूब नानौतवी साह़ब ने 'सवानेह़ क़ासमी' में लिखा है: "जनाब मोलवी रशीद अह़मद साह़ब गंगोही और मोलवी मुह़म्मद क़ासिम साह़ब से उसी समय से सहपाठी और मित्रता रही है। अन्त में ह़दीस जनाब शाह अ़ब्दुल ग़नी साह़ब की ख़िदमत में पढ़ी और उसी ज़माने में दोनों महापुरूषों ने जनाब क़िबला ह़ज़रत ह़ाजी इम्दादुल्लाह साह़ब से बैअत (दीक्षा) की ओर सुलूक आरम्भ किया। उन्हों ने बड़ी तीव्रता से उपासना का मार्ग तय किया। अतः चालीस दिन की थोड़ी मुद्दत में ख़िलाफ़त मिल गयी। फिर गंगोह वापस आकर शेख़ अ़ब्दुल क़ुद्दूस गंगोही के हुजरे (कमरे) क़याम किया। उस बीच मतब (दवाखाना) जीवन का साधन था।"

1857 ई. में ख़ानक़ाह क़ुद्दूसी से निकल कर कर अंग्रेज़ों के विरूद्ध मोर्चा खोला और अपने पीर ह़ज़रत ह़ाजी इमदादुल्लाह साह़ब और दूसरे साथियों के साथ शामली के मैदान में जिहाद बोल दिया। इस जंग में ह़ाफ़िज़ ज़ामिन साह़ब शहीद हो गये तो आप उन की लाश को उठा कर समीप की मस्जिद में ले गये। शामली की लड़ाई के बाद गिरफ़्तारी का वारन्ट जारी हुआ और उन को पकड़ कर सहारनपुर की जेल में बंद कर दिया गया। फिर वहां से मुज़फ़रनगर बदल दिया गया। छह महीने जेल में रहे। वहां बहुत से क़ैदी आप के अनुयायी हो गये और जेलख़ाने में जमात के साथ नमाज़ होने लगी।

रिहाई के बाद गंगोह में पढ़ाने का कार्य आरम्भ किया। 1299 हि. तीसरे ह़ज के बाद अपने यहां प्रबन्ध किया कि तीसरे साल में पूरी सिह़ाह़–ए–सित्ता (ह़दीस की 6 मशहूर किताबें) समाप्त करा देते थे। नियम यह था कि प्रातः 12 बजे तक विद्यार्थियों को पढ़ाते थे। आप के पढ़ाने की प्रसिद्धी सुन–सुन कर ह़दीस पढ़ने वाले विद्यार्थी दूर–दूर से आते थे। कभी–कभी उनकी संख्या 70–80 तक पहुंच जाती थी जिनमें भारत और विदेशी विद्यार्थी भी होते थे। विद्यार्थियों के साथ बड़े प्रेम का व्यवहार करते थे। पढ़ाने का ढंग ऐसा होता था कि एक साधारण व्यक्ति भी समझ लेता था। आपके ह़दीस पढ़ाने की एक विशेषता यह थी कि ह़दीस के विषय को सुन कर उस पर अ़मल करने का शौक़ पैदा हो जाता था। जामे तिरमिज़ी की दरसी तक़रीर 'अल–कौकबुदुर्री' छप चुकी है जो संक्षिप्त होने के बावजूद तिरमिज़ी की ठोस कुंजी (शरह़) है।

1314 हि. तक आप का दर्स जारी रहा। तीन सौ से अधिक ह़ज़रात ने आप से दौरा–ए–ह़दीस पढ़ी। ह़दीस पढ़ने वालों में आपके अंतिम शागिर्दों में मौलाना ज़करया कांधलवी के पिता मौलाना मुह़म्मद यह़या कांधलवी थे।

अंत में बीमारी के कारण पढ़ाई बन्द हो गई मगर उपदेश और फ़तावा का कार्य बराबर जारी रहा। अल्लाह की याद पर बड़ी तवज्जोह थी। जो लोग सेवा में उपस्थित होते तो आख़रत के लिये कुछ न कुछ लेकर जाते। सुन्नत के पालन करने का विशेष प्रबन्ध करते थे। 1297 हि. में ह़ज़रत नानौतवी की वफ़ात के बाद दारुल उ़लूम देवबन्द के संरक्षक हुए। मुश्किल ह़ालात में दारुल उ़लूम की गुत्थी को सुलझा देना उनकी एक बड़ी विशेषता थी। 1314 हि. से मदरसा मजाहिर उ़लूम सहारनपुर की संरक्षता भी स्वीकार करली थी। फिक़ह व तसव्वुफ़ में तक़रीबन 14 पुस्तकें लिखीं।

9 जुमादस्सानिया 1323 हि./11 अगसत 1905 ई. को जुमे के दिन 78 साल की आयु में वफ़ात पाई। आप के शिष्यों का एक बहुत बड़ा हल्क़ा है जिसमें असीरे मालटा ह़ज़रत शेख़ुल इसलाम मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी सहित बड़े–बड़े नामवर उलमा (विद्वान) शामिल हैं। इसी प्रकार आप के ख़लीफ़ाओं की भी एक लम्बी फ़ेहरिस्त है। आपके तफ़सीली ह़ालात लेखक मौलाना अ़ाशिक इलाही मेरठी ने 'तज़किरतुर्रशीद' लिखे हैं। यह पुस्तक दो खण्डो में है।

ह़ज़रत शेखुल हिन्द मौलाना मह़मूद ह़सन (1851–1920)

शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी दारुल उ़लूम के तीसरे सरपरस्त (संरक्षक) और तीसरे सदर मुदर्रिस (प्रधानाध्यापक) थे। वह दारुल उ़लूम के सबसे पहले विद्यार्थी थे, उन के सम्बन्ध में कहा गया है कि जिसने सबसे पहले उस्ताद के सामने किताब खोली वह मह़मूद था।

ह़ज़रत शेखुल हिन्द का जन्म 1851 ई. में बरेली में हुवा था जहां उनके पिता मौलाना ज़ुलफ़क़ार अ़ली सरकारी शिक्षा विभाग में डिप्टी इन्स्पेक्टर थे। आप ने आरम्भिक शिक्षा प्रसिद्ध विद्वान मौलाना महताब अ़ली साह़ब से प्राप्त की क़ुदूरी और शरह़ तहज़ीब पढ़ रहे थे कि दारुल उ़लूम की स्थापना हो गयी। और आप को उस में दाखिल करा दिया गया। दारुल उ़लूम की शिक्षा प्राप्त करने के बाद ह़ज़रत नानौतवी की सेवा में रह कर ह़दीस का ज्ञान प्राप्त किया। दूसरे विषयों की उच्च पुस्तकें अपने पिता मौलाना ज़ुलफ़क़ार अ़ली से पढ़ीं।

1873 में ह़ज़रत नानौतवी के हाथों पगड़ी पहनी। पढ़ते समय आप की गणना ह़ज़रत नानौतवी के प्रिय शिष्यों में होती थी। ह़ज़रत नानौतवी इन से विशेष प्रेम करते थे। अतः उनकी तीव्र बुद्धि और योग्यताओं को दृष्टि में रखकर दारुल उ़लूम की मुदर्रिसी के लिये आप को चुन कर 1291 हि. में चौथे स्तर के उस्ताद के रूप में आप को नियुक्त कर दिया। जिससे उन्नति करते–करते 1890 ई. में आप सदर मुदर्रस के पद पर पहुंच गये।

प्रत्यक्ष ज्ञान की भांति आन्तरिक (आत्मिक) ज्ञान भी काफ़ी था। ह़ज़रत ह़ाजी इम्दादुल्लाह मुहाजिर मक्की से ख़िलाफ़त प्राप्त थी। दारुल उ़लूम में सदर मुदर्रसी की माहवार तनख्वाह 75 रूपये थी मगर आपने 50 रूपये से अधिक कभी स्वीकार नहीं किया। बाक़ी 25 रूपये दारुल उ़लूम के चन्दे में दिया करते थे। आपकी ज़बरदस्त इ़ल्मी शख्सियत के

कारण असंख्य विद्यार्थियों ने ह़दीस की शिक्षा प्राप्त की। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के विद्यार्थियों में मौलाना सय्यद अनवर शाह कशमीरी, मौलाना उ़बैदुल्लाह सिन्धी, ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी, मौलाना मंसूर अंसारी, मौलाना हुसैन अह़मद मदनी, मौलाना किफ़ायतुल्लाह देहलवी, मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी, मौलाना सय्यद असग़र हुसैन देवबन्दी, मौलाना सय्यद फ़खरुद्दीन अह़मद, मौलाना ऐजाज़ अ़ली अमरोहवी, मौलाना इब्राहीम बलयावी, मौलाना सय्यद मनाज़िर अह़सन गीलानी जैसे प्रसिद्ध उ़लमाओं की जमात शामिल थी।

बहुत से योग्य और बुद्धिमान विद्यार्थी जो विभिन्न उस्तादों की सेवा करने के बाद ह़ज़रत की सेवा में उपस्थित हो कर अपनी शंकायों का समाधान करते और ह़ज़रत मौलाना की ज़ुबान से क़ुरआन शरीफ़ की आयतें और ह़ज़रत मुह़म्मद सल. की ह़दीसों के अर्थ और व्याख्या सुन कर उन को स्वीकार करते और कहते यह ज्ञान किसी में नहीं है और ऐसा महान विद्वान दुनिया में नहीं देखा।

अंतिम उ़मर में जब तराबलुस और बलक़ान का युद्ध छिड़ गया तो इस के कारण मुसलमानों में बेचैनी फैल गयी। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने हिन्दुस्तान से ब्रिटिश सरकार के प्रभुत्व को समाप्त करने के लिये एक योजना तैयार की। इस के लिये 1913 ई. के समय में उन्होंने सुसंगठित रूप से अपना प्रोग्राम बनाया था। उन के शागिर्दों और साथियों की एक बड़ी जमात जो देश और विदेशों में फैली हुई थी उन की योजना को सफल बनाने के लिये हर प्रकार तैयार थी। शागिर्दों में, मौलाना उ़बैदुल्लाह सिंधी, मौलाना मुह़म्मद मियां मंसूर अंसारी और दूसरे बहुत से उलमा इस में शामिल थे जिन्हों ने ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के सियासी क्रांतिकारी प्रोग्राम के लिये अपनी ज़िन्दगी वक़्फ़ कर दी। उस समय आम विचार यह था कि शक्ति के बिना हिन्दुस्तान से अंग्रेज़ों को निकाला नहीं जा सकता। इसके लिये सिपाही और शस्त्र की आवश्यकता है। इन वस्तुओं को प्राप्त करने के लिये अफ़ग़ानिस्तान और तुर्की को चुना गया।

ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द अपनी योजना को सफल बनाने के लिये बृद्धावस्था के बावजूद 1915 ई. में हिजाज़ (अ़रब) की यात्रा पर गये। वहां तुर्की के गवर्नर ग़ालिब पाशा और अनवर पाशा जो उस समय तुर्की

के युद्ध मन्त्री थे उन से मुलाक़ात की और कुछ महत्व पूर्ण कार्य पूरे किये। आप अ़रब से सीधे बग़दाद, बिलोचिस्तान होते हुए सीमा प्रांत के स्वतन्त्र क़बाइल में पहुंचाना चाहते थे कि अचानक शरीफ़ हुसैन मक्का ने अंग्रेज़ों की हिमायत में आप को बन्दी बना कर अंग्रेज़ों को सौंप दिया। ह़ज़रत शेखुल हिन्द के साथ मौलाना हुसैन अह़मद मदनी, मौलाना उ़ज़ैर गुल, ह़कीम नुसरत हुसैन और मौलाना वह़ीद अह़मद को भी गिरफ़तार कर लिया। आप को पहले मिश्र और फिर वहां से मालटा ले जाया गया। जो ब्रिटिश सरकार में युद्धबन्दियों के लिये सुरक्षित स्थान था। ह़ज़रत शेखुल हिन्द के इस क्रांतिकारिय आन्दोलन को तह़रीक रेशमी रूमाल के नाम से जाना जाता है।

महा युद्ध की समाप्ति पर आप को हिन्दुस्तान आने की इजाज़त मिली और जून 1920 ई. को आप बम्बई पहुंचे। यद्यपि मालटा से वापसी पर स्वास्थ्य बिगड़ गया था वृद्धावस्था के कारण कमज़ोर हो गये थे फिर भी आपने बड़ी हिम्मत से काम लिया। आप के महान कार्य को तबीअ़त सहन न कर सकी इस लिये 18 रबीउल अव्वल 1339 हि. (30 नवमबर 1920 ई.) को दिल्ली में शरीर त्याग दिया। जनाज़ह देवबन्द लाया गया। अगले दिन ह़ज़रत नानौतवी की क़ब्र के पास दफ़ना दिये गये।

ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब रायपुरी (1850–1919)

ह़ज़रत शाह अब्दुलर्रहीम साह़ब रायपुरी दारुल उ़लूम के चौथे सरपरस्त (संरक्षक) थे। 1333/1615 में जिस वक्त शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी क्रांतिकारी आन्दोलन 'तह़रीक रेशमी रूमाल' के सिलसिले में अ़रब चले गए उस के बाद आप ने दारुल उ़लूम की सरपरस्ती की।

ह़ज़रत शाह अब्दुर्रहीम साह़ब की वास्तविता गाँव तिगरी था जो हरियाणा प्रान्त में स्थित है। वहीं आप एक बड़े ज़मीदार घराने में पैदा हुए थे। आप के पिता का नाम राव अशरफ अली था। 1857 ई0 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में शामली युद्ध के विफल हो जाने के पश्चात 1858 ई0. में हजरत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही जब अपने गुरू ओर शामली युद्ध का नेतृत्व करने वाले ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब की तलाश में तिगरी पहुंचे तो ह़ज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साह़ब केवल तीन वर्ष के छोटे बच्चे थे। इस घटना से पता चलता है कि आप का जन्म 1855 ई0 में हुआ है ह़ज़रत शाह अब्दुर्रहीम साह़ब के पिता भी ह़ज़रत गंगोही के साथ पंजलाशा जा कर हाजी इम्दादुल्लाह साह़ब से मिले थे। बाद में हाजी साह़ब मक्का चले गये थे और आजीवन वहीं रहे।

ह़ज़रत शाह अब्दुलर्रहीम साह़ब की आरम्भिक शिक्षा गांव में हुई। कुरान शरीफ उर्दू और कुछ फारसी भी गांव ही में पढ़ ली थी। इसके पश्चात् आप ने अ़रबी, फारसी और इस्लाम धर्म की शिक्षा सहारनपुर के अ़रबी मदरसा मज़ाहर उ़लूम में प्राप्त की।

जिन दिनों आप मजाहिर उ़लूम में शिक्षा ग्रहण कर रहे थे, आप का संपर्क मियां अब्दुर्रहीम साह़ब से हो गया। यह मियां अब्दुर्रहीम साह़ब सीमा प्रांत के एक व्यक्ति से मुरीद थे जिन को अखुंद साह़ब कहतें थे। यह अखुंद साह़ब मुजाहिद क्रांतिकारी थे जो अंग्रेजों के सख्त ख़िलाफ़

थे। हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब को मियां अब्दुर्रहीम साहब सहारनपुरी ने अंग्रेजों कें विरूद्ध कार्य करने के लिये ही मुरीद बनाया था।

हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब का ननिहाल और ददिहाल रायपुर गांव में ही था इस कारण अपनी पढ़ाई के समय से ही आप वहां आया जाया करते थे, लेकिन शिक्षा प्राप्ति के पश्चात जब आप ने अपने गुरू मियां अब्दुर्रहीम से आध्यात्मिक शिक्षा प्राप्त कर ली तो उनके आदेशानुसार आप रायपुर चले गए और नहर के किनारे पर बाग में एक फूंस के मकान में रहने लगे जो बाद में 'रायपुर खानकाह' से मशहूर हुई। खानकाह में रहने लगे तो आप के मन में हज करने की इच्छा जागी। हजरत शाह अब्दुर्रहीम साहब मक्का शहर में हजरत हाजी इमदादुल्ला साहब की खिदमत में गए। उनसे क्रांतिकारी की दीक्षा ली फिर हज करके खैरियत से स्वदेश लौट आए।

पीर अब्दुर्रहीम साहब का इंतकाल हो गया तो आपने हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही को अपना पीर बनाया। हज़रत गंगोही ने आपको खिलाफत भी इनायत की। अब आपका आना जाना हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही के दरबार में हो गया। हज़रत गंगोही की मृत्यु के पश्चात जिस व्यक्ति का शाह अब्दुर्रहीम साहब पर गहरा प्रभाव पड़ा वह हज़रत शैखुल हिंद थे तथा हज़रत शैखुल हिंद जिस पर अटूट विश्वास करते थे और जिनसे दिली मशवरा करते थे वह हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी थे। इस प्रकार हज़रत गंगोही और शैखुल हिंद के संपर्क में आने से मुस्लिम क्रांतिकारियों से पुर्ण रूप से जुड़ गए। धन और प्रचार का काम हज़रत ने अपने हाथ में लिया, क्रांतिकारी, मुजाहिद और विश्वास पात्र साथी तलाश करना हज़रत शैखुल हिंद को सौंपा जिन्होंने यह कार्य दारुल उ़लूम देवबंद के माध्यम से किया। अ़रब जाने से पहले हज़रत शैखुल हिंद रायपुर तशरीफ लाए। दो दिन हज़रत के पास ठहरे। हज़रत शैखुल हिंद ने अपने तमाम लोगों, दिल्ली, कलकत्ता, बंबई, लाहौर आदि सभी मुरीदों को यह फरमा गए थे कि मेरे बाद मेरा कायम मुकाम हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब रायपुरी को समझना।

हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम साहब अपने ज़माने के माने जाने

शैख और पीर थे। उन को दुनिया की इज्जत, बड़ाई और माल व जायदाद से कोई लगाव नहीं था न ही कभी आपने इस बात के लिये कोई प्रयत्न किया था।

हज़रत शाह अब्दुर्रहीम साहब की वफात 26 रबीउस्सानी 1337 हि. (29 जनवरी 1919 ई.) को हुई। आखिर आप को उसी बाग में जहां आप की हयात का आखिरी हिस्सा गुज़रा था मस्जिद के दक्षिणी ओर दफन किया गया। मालटा में हज़रत रायपुरी के वफात की खबर पहुंची हज़रत शेखुल हिंद को बहुत सदमा हुआ और उन के मरसिये में एक कसीदा भी लिखा था जो आपके कसाइद में है।

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी (1863–1943)

हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थानवी हकीमुल उम्मत के नाम से प्रसिद्ध और महान लेखक हैं। दीन के प्रत्येक शोबे पर आप अधिकारी रखते हैं। आप उच्च स्तर के लेखनकार्य है। आप दारुल उ़लूम के पांचावें सरपरस्त (संरक्षक) थे।

हज़रत थानवी का जन्म 1280 हि. (1863 ई.) में हुआ। आपका तारीख़ी नाम करम अज़ीम है। ददिहाल की ओर से आपका नाम अब्दुल ग़नी रखा गया था। लेकिन हज़रत हाफ़िज़ गुलाम मुर्तज़ा पानीपती ने अशरफ़ अली नाम रखा। इसी नाम से आप मशहूर हुए। आप थाना भवन के फ़ारूक़ी शयूख़ में से थे। पांच साल की आयु में माता जी का स्वर्गवास हो गया था इसलिये आपका पालन पोषण आपके पिता ने किया। कुरान शरीफ़ हाफ़िज़ हुसैन अली से हिफ़्ज़ किया। फारसी अ़रबी की शुरूआती किताबें वतन ही में पढीं। फारसी की बडी किताबें अपने मामा वाजिद अली साह़ब से पढीं। 1295 हि. में आप दारुल उ़लूम में पढने आये जहां से आपने 1301 हि. में शिक्षा पूरी की।

1301/1884 में मदरसा फ़ैज़–ए–आम कानपुर में अध्यापक बने और फिर मदरसा जामिउल उ़लूम कानपुर के अध्यापक हुए जहां आपकी बडी शोहरत हुई। हज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के द्वारा हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की से 1299 हिजरी में बैअत हो गये थे। 1301 हिजरी में हज के समय ह़ज़रत हाजी इमदादुल्लाह साह़ब से मिलकर बैअत की। 1310/1893 में दोबारा हज किया और ह़ज़रत हाजी साह़ब की ख़िदमत में हाज़िर हुए। इस समय आपको ख़िलाफ़त मिल गई।

हजरत हाजी साह़ब के आदेश के अनुसार 1315/1897 में कानपुर छोड़ कर ख़ानक़ाह थानाभवन में आ बसे और वहीं स्थाई रिहायश इख़्तियार की। यहां आप 47 सालों तक रहे। अल्लाह ने आपकी

नसीहतों में बडा प्रभाव रखा था। बडे मजमों में आपने तक़रीरें कीं। उस समय के बडे–बडे विद्वान आप की सेवा में रहे। आपके द्वारा इस्लाम की इतनी सेवा गई कि ऐसे काम बहुत कम लोगों के हिस्से में आते हैं।

आपकी तक़रीरें और लेखों ने हजारों क्या लाखों इन्सानों को नेक बना दिया। आपके कारण असंख्य बुराईयां समाज से दूर हुइें। विशेष व्यक्तियों की संख्या जितनी आपकी मुरीद हुई उतनी कम ही लोगों से होइ है। आपके मुरीदों में हकीमुल इस्लाम ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब मोहतमिम दारुल उ़लूम देवबन्द, ह़ज़रत मुफ़्ती शफ़ी उस्मानी देवबन्दी, मौलाना ज़फ़र अह़मद उस्मानी, मौलाना अब्दुल माजिद दरियाबादी, सय्यद सुलैमान नदवी, ह़ज़रत मौलाना अब्दुल बारी नदवी, ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद ईसा इलाहाबादी, ह़ज़रत मौलाना वसीउल्लाह इलाहाबादी, ह़ज़रत मौलाना अब्दुल ग़नी फूलपुरी, ह़ज़रत मौलाना अबरारूल हक़ हरदोई, ह़ज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ान साह़ब जलालाबादी आदि शामिल हैं।

आपका ज्ञान बडा ही विस्तृत था। आपकी पुस्तकें ऐसी थी कि दीन का कोई शोबा उनसे छुपा नहीं था। उनकी छोटी बडी पुस्तकों की सख्या लगभग 350 है। इनके अलावा तीन सौ से अधिक तक़रीरें हैं जो छप चुकी हैं। इन साब को मिलाकर आपकी पुस्तकें व रिसाले लगभग आठ सौ के आसपास हो जाते हैं। इन पुस्तकों में बहुत मक़बूल बहिश्ती ज़ेवर, तफ़सीर बयानुल कुरान आदि मुख्य हैं। आपकी छोटी पुस्तकों और भाषणों के कई मजमुए आ चुके हैं।

आपकी ज़िन्दगी बडी मुनज़्ज़म थी। कामों के अवक़ात निश्चित थे और हर काम अपने समय पर करते थे। मिलने आने वालों के पत्रों के उत्तर अपने हाथों से लिखते थे। सच यह है कि आपके जीवन की सफलता का राज़ इसी समय की पाबन्दी में छुपा था। नहीं तो 47 वर्षों के समय में आठ सौ से अधिक पुस्तकें आदि लिखना महान कार्य और ज़िन्दा करामात है।

ह़ज़रत थानवी की विशेषता यही रही है कि अपनी पुस्तकों से कभी एक पैसा भी नहीं लिया। तमाम किताबों का कोइ कापी राइट नहीं है और जिसका जी चाहे उसको छाप सकता है। पुस्तकों की गैर मामूली मक़बूलियत के बावजूद आपने कभी किसी किताब छापने के अधिकार

को अपने लिये सुरक्षित नहीं रखा।

दारुल उ़लूम की सरपरस्ती

1320/1902 में हकीमुल उम्मत ह़ज़रत थानवी को दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा का सदस्य बनाया गया। 1344/1925 में ह़ज़रत थानवी दारुल उ़लूम देवबन्द के सरपरस्त बने। आपने अपनी सूझबूझ से दारुल उ़लूम को झगडों से बचाया। 1354 हिजरी में आपने अपनी व्यस्तता के कारण इस पद से इस्तीफ़ा दे दिया। इसके बाद दारुल उ़लूम के सरपरस्त के नाम से किसी का चुनाव नहीं हुआ।

मृत्यु

15–16 रजब 1362 हिजरी/19–20 जुलाई 1943 ई. की दरमियानी रात को थाना भवन में आपकी मृत्यु हुई। थाना भवन में हाफ़िज़ ज़ामिन शहीद के मज़ार के पास आप को अपने निजी बाग़ में दफ़ना दिया गया।

दारुल उ़लूम के मोहतमिम

क्र.	मोहतमिम का नाम	आरम्भ व अन्त	समय
1.	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब (1835–1913)	1283 / 1866–1284 / 1867 1286 / 1869–1288 / 1871 1306 / 1888–1310 / 1893	10 वर्ष
2.	ह़ज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब (1836–1891)	1284 / 1867–1285 / 1868 1288 / 1872–1306 / 1888	19 वर्ष
3.	ह़ज़रत हाजी फ़ज़ल हक़ साह़ब	1310 / 1893–1311 / 1894	1 वर्ष
4.	ह़ज़रत मौलाना मुनीर साह़ब नानौतवी (जन्म 1831)	1311 / 1894–1313 / 1895	डेढ वर्ष
5.	ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद (1862–1928)	1313 / 1895–1347 / 1928	34 वर्ष
6.	ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी (मृ. 1929)	1347 / 1928–1348 / 1929	सवा साल
7.	ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब (1897–1983)	1348 / 1930–401 / 1981	52 वर्ष
8.	ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान बिजनौरी (1914–2010)	1402 / 1982–1432 / 2010	32 वर्ष
9.	ह़ज़रत मौलाना गुलाम मुह़म्मद वुस्तानवी (जन्म 1950)	1432 / 2010	7 माह
10.	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी (ज. 1947)	1432 / 2011– जारी	जारी

ह़ज़रत ह़ाजी सय्यद मुह़म्मद आ़बिद साह़ब (1835–1913)

ह़ाजी साह़ब देवबन्द के निहायत मुत्तक़ी, परहेज़गार और प्रभावशाली महापुरूष थे। दारुल उ़लूम के सरगर्म संस्थापकों में थे। दारुल उ़लूम की सर्वप्रथम पदवी आप ही को सौंपी गई थी।

ह़ाजी साह़ब का जन्म 1835 ई. में हुआ। कु़रआन शरीफ़ और फ़ारसी पढ़कर दीनी तालीम की शिक्षा के लिये आप दिल्ली गये। शिक्षा प्राप्ति के समय आप को तसव्वुफ़ का ऐसा शौक़ हुआ कि शिक्षा प्राप्ति को छोड़ कर अनेक सूफ़ियों से ख़िलाफ़त प्राप्त की। मियांजी करीम बख़्श रामपुरी और ह़ज़रत ह़ाजी इमदादुल्लाह साह़ब मुह़ाजिर मक्की से भी ख़िलाफ़त प्राप्त की थी।

ह़ज़रत ह़ाजी आ़बिद साह़ब का 60 वर्ष तक छत्ते की मस्जिद में क़याम रहा। प्रसिद्ध है कि 30 साल तक आपकी तकबीर ऊला नहीं छूटी। साहि़बे कश्फ़ व करामत बुज़ुर्ग थे। अत्यधिक कार्यों के कारण समय की पाबन्दी का पूरी तरह ध्यान रखते थे। प्रत्येक कार्य अपने समय पर ठीक–ठाक होता था। सुन्नत की पूरी पाबन्दी थी। उनका कथन है कि "बेअ़मल दरवेश ऐसा है जैसे सिपाही बग़ैर हथयार के।" एक बार ज्ञात हुआ कि मुरीदों में ह़ाजी मुह़म्मद अनवर देवबन्दी ने नफ़्सकुशी के तौर पर खाना–पीना बिल्कुल छोड़ दिया, आपने चेतावनी स्वरूप लिखा कि यह कार्य सुन्नत के ख़िलाफ़ है सुन्नत के मुताबिक़ खाना–पीना ज़रूर होना चाहिए। चाहे थोड़ा ही क्यों न हो। (तजकिरतुल आ़बिदीन पृष्ठ 67)

अनवार–ए–क़ासमी में लिखा है: "ह़ाजी साह़ब देवबन्द में एक बड़े सम्मनित प्रभावशाली, उपासक हस्ती थी। आपकी बुज़ुर्गी का सिक्का प्रत्येक छोटे–बड़े औरत–मर्द बच्चे व बूढ़े के दिल पर था। उनके आत्मिक फ़ैज़ ने देवबन्द और उसके आस पास बल्कि दूसरे प्रांतों के दिलों को भी मोह लिया था। आप की सूरत को देख कर अल्लाह याद आता था।" (अनवारे क़ासमी खण्ड प्रथम पृष्ठ 350, 351)

सवानेह़ क़ासमी में लिखा हैः "देवबन्द के निवासी आपसे बहुत अक़ीदत रखते थे। आपसे लोगों को बहुत अनेकों प्रकार का लाभ है। घर–बार, ज़मीन बाग़ जितना भी आपकी मिलकियत में था सब का सब अल्लाह की राह में देकर केवल अल्लाह पर विश्वास किये हुए थे।" (सवानेह़ कासमी भाग दो पृष्ठ 239,241)

समय और कार्यक्रम की बहुत सावधानी बरती जाती थी। ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद या़कूब नानौतवी साह़ब कहा करते थे कि जानने वाला हर वक्त यह बता सकता है कि ह़ाजी साह़ब अमुक कार्य में लगे हैं अगर कोई जाकर देखे तो उसी काम में उनको लगा हुआ पायेंगे।

दारुल उ़लूम की सेवा में

दारुल उ़लूम देवबन्द के लिये सार्वजनिक चन्दे का आन्दोलन आपही ने शुरू किया था, ह़ाजी फ़ज़ले ह़क़ ने ह़ज़रत नानौतवी की सवानेह़ मह़फ़ूज़ में लिखा है "एक रोज़ इश्राक़ के समय ह़ज़रत ह़ाजी सय्यद मुह़म्मद आ़बिद सफ़ेद रूमाल की झोली बनाकर और उस में तीन रूपये अपने पास से डाल कर छत्ता मस्जिद से अकेले मोलवी महताब अ़ली के पास पधारे, मोलवी साह़ब ने प्रसन्नता पूर्वक छह रूपये डाले और दुआ़ की, बारह रूपये मोलवी फ़ज़्लुर्रह़मान साह़ब ने और छह रूपये सवानेह़ मख़्तूता के लेखक ह़ाजी फ़ज़्ले ह़क़ साह़ब ने दिये। वहां से उठकर मोलवी ज़ुलफ़कार साह़ब के पास आये मोलवी साह़ब ने तुरन्त बारह रूपये दिये। सौभाग्य से वहां सय्यद ज़ुलफ़कार अ़ली सानी देवबन्दी मौजूद थे उनकी ओर से भी बारह रूपये मिले। वहां से उठकर यह दरवेश बादशाह मुह़ल्ला अबुल बरकात पहुंचे। दो सौ रूपये जमा होगये और शाम तक तीन सौ रूपये की रक़म जमा हो गई। फिर धीरे–धीरे चर्चा हुई और जो फल–फूल इसको लगे वह ज़ाहिर हैं। (सवानेह क़ासमी भाग 2, पृष्ठ 258 से 259)

दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा की रुकनियत के अ़लावा कई बार एहतमाम आप के सुपुर्द हुआ। पहली बार स्थापना के समय 1283/1866 से 1284/1867 तक, दूसरी बार 1286/1869 से 1288/1871 तक और तीसरी बार 1306/1888 से 1310/1893 तक मोहतमिम रहे। यह कुल दस साल का समय है।

जामा मस्जिद देवबन्द की तामीर भी आप ही के प्रयत्नों का परिणाम है। अन्त में कार्य की अधिकता के कारण अपने एहतमाम से इस्तीफ़ा दे दिया था। इन के प्रभाव से दारुल उ़लूम को बहुत लाभ हुआ है और इस संस्था का क़दम हर समय उन्नति की ओर बढ़ता रहा।

27 ज़ुलहिज्ज 1331 हि. तद्नुसार 27 नवमबर 1913 ई. को 81 साल की उम्र में इस संसार को अलविदा कहा।

ह़जरत मौलाना रफ़ीउ़द्दीन साह़ब

(1836—1891)

ह़ज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब 1252 हि. तद्नुसार 1836 ई. में पैदा हुए। शाह अब्दुल ग़नी मुजहिदी के मशहूर ख़लीफ़ा थे। यद्यपि इनकी शैक्षिक योग्यता मामूली थी लेकिन प्रशासनिक कामों का बेह़द अनुभव था और इस काम में उनकी विशेष योग्यता थी। उनकी गिनती अपने समय के कामिल वली—अल्लाह लोगों में थी। आप दो बार दारुल उ़लूम के मोहतमिम नियुक्त हुए। पहली बार 1284 हि./1867 ई. से 1285 हि./1868 ई, तक ह़ाजी साह़ब के ह़ज को चले जाने के समय मोहतमिम हुए। और दूसरी बार इसके लगभग तीन साल के बाद 1288 हि./1871 ई. में मोहतमिम नियुक्त हो गये, और 1306 हि./1888 ई. के आरम्भ तक इस पद पर रहे। उन्नीस साल तक आप मोहतमिम रहे।

प्रसिद्ध है कि दयानत व अमानत के साथ प्रशासनिक योग्यता बहुत कम होती है मगर आपमें यह गुण बहुत अधिक थे। दारुल उ़लूम की आरम्भिक अधिकतर इ़मारतें आप ही के समय में बनाई गयीं। उन के भवन निर्माण की रूचि का पता इन इ़मारतों विशेषकर नौदरे से चलता है। यह इ़मारत दारुल उ़लूम की इ़मारतों में विशेष स्थान रखती है।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़ज़ीज़ुर्रह़मान (मृत्यु 1347 हि./1928 ई.) को मौलाना रफ़ीउ़द्दीन से ख़िलाफ़त प्राप्त थी। 1306 हि./1888 ई. में आप हिजरत के उद्देश्य से मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले गये और वहीं दो साल के बाद 1308 हि./1890 ई. में देहान्त हो गया। और वहीं जन्नतुल बक़ी में दफ़न हुए।

ह़ज़रत ह़ाजी सय्यद फ़ज़्ले ह़क़ देवबन्दी

हाजी फ़ज़्ल हक़ देवबन्दी, देवबन्द के सादात परिवार में से थे। दारुल उ़लूम की स्थापना में आरम्भ से ही शरीक रहे थे। ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी से बैअ़त थे। आरम्भ से ही दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के सदस्य थे। दारुल उ़लूम की स्थापना के बाद दफ़्तर के कामों के ज़िम्मेदार बनाये गये। 1310 हि./1893 हि. में ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब के कार्यों की अधिकता के कारण त्यागपत्र देने के बाद दारुल दलूम के मोहतमिम बनाये गये। लगभग एक साल तक इस सेवा को पूरा करके त्याग पत्र दे दिया।

हाजी फ़ज़्ल ह़क़ साह़ब ने ह़ज़रत नानौतवी की एक सवानह उमरी (जीवनी) लिखी थी जो छप नहीं सकी। सवानह क़ासमी के लेखक मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी ने कई स्थान पर इसका ज़िक्र किया है। इससे अन्दाज़ा होता है कि जीवनी पूर्ण होगी। लिखने की योग्यता के साथ–साथ उनमें प्रबन्धात्मक योग्यता भी काफी थी।

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मुनीर नानौतवी

ह़ज़रत मौलाना मुनीर साह़ब नानौतवी प्रसिद्ध विद्वान व लेखक मौलाना मुह़म्मद अह़सन नानौतवी और मौलाना मुह़म्मद मज़हर नानौतवी के छोटे भाई थे। 1247 हि./1831 ई. में नानौता में पैदा हुए। प्रारम्भिक शिक्षा अपने पिता ह़ाफ़िज़ लुत्फ़ अ़ली से प्राप्त की, फिर दिल्ली कालेज में दाख़िल हो गये। वहां ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली नानौतवी, मुफ़्ती सदरुद्दीन और ह़ज़रत शाह अब्दुल ग़नी देहलवी से इल्मी लाभ प्राप्त किया। मौलाना मुनीर साह़ब स्वतंत्रता संग्राम 1857 के एक कर्मठ सदस्य और मुजाहिद रहे थे। शामली युद्ध में दूसरे लोगों के कन्धों से कन्धा मिला कर युद्ध में शरीक रहे। शामली युद्ध के बाद रूपोश होगये और आ़म माफ़ी के बाद अपने बड़े भाई मौलाना मुह़म्मद अह़सन के पास बरेली चले गये वहां आप 1861 में बरेली कॉलेज में मुलाज़िम हो गये। बरेली में रहते समय अपने भाई मौलाना मुह़म्मद अह़सन के सिद्दीक़ी प्रेस बरेली के प्रबन्धक भी रहे। मौलाना मुह़म्मद मुनीर नक़्शबन्दी सिलसिले में बैअ़त थे। इन्होंने इमाम ग़ज़ाली की किताब 'मिनहाजुल आ़बिदीन' का उर्दू अनुवाद 'सिराजुस्सालिकीन' के नाम से किया है, जो सिद्दीक़ी प्रेस बरेली से 1864 ई. में छपा है। इन की दूसरी किताब 'फ़वाइदे ग़रीबह' है यह भी तसव्वुफ़ के विषय पर लिख़ी गई है।

एक साल से कुछ अधिक समय तक मोहतमिम रहे। ख़ारजी समय में विद्यार्थियों को अ़रबी अदब बढ़ाते थे। दयानतदारी और अमानत में आप बड़े सावधान थे। एक बार मौलाना दारुल उ़लूम की रूदाद छपवाने दिल्ली गये उसके ख़र्च के लिये ढ़ाई सौ रूपये साथ थे। दुर्भाग्यवश रूपये चोरी हो गये। मौलाना यह घटना किसी को बताये बिना अपने घर नानौता आये। अपनी ज़मीन बेच कर रूपये लिये फिर उन से रूदाद छपवाई। मजलिसे शूरा के सदस्यों को जब इस का पता चला तो उन्होंने ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही से इस सम्बन्ध में मसला पूछा, वहां से जवाब आया–"मोहतमिम साह़ब अमीन थे और धन चूंकि बिना उनकी ग़लती के चोरी हुआ इसलिये उन पर तावान नहीं

आसकता" मजलिस ने फ़तवा दिखाकर मौलाना मुनीर से दर्ख़ास्त की कि अपना रूपया वापस लेलें, मौलाना ने फ़रमाया "फ़तवे की बात नहीं है, अगर स्वयं मौलाना रशीद अह़मद साह़ब को ऐसी घटना का सामना पडता तो क्या वह रूपये ले लेते?" अतः बहुत कहने पर भी रूपया नहीं लिया, इन्कार करदिया" (अरवाहे सालासाः ह़िकायत 453 पृष्ठ 157, 160)

ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब (1862–1928)

ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद साह़ब, ह़ज़रत नानौतवी के बेटे थे। 1279 हि/1862 ई. में नानौता में जन्मे। क़ुरआन शरीफ़ ह़िफ़्ज़ करने के बाद आरम्भिक शिक्षा प्राप्त करने के लिये गुलावठी गये, ह़ज़रत अब्दुल्लाह अम्बेहटवी उस मदरसे में अध्यापक थे। इसके बाद आगे बढ़ने के लिये मुरादाबाद मदरसा शाही में गये। यहां ह़ज़रत नानौतवी के शागिर्द ह़ज़तर मौलाना अह़मद ह़सन अमरोहवी पढ़ाते थे। उनसे विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ीं। इसके बाद देवबन्द आये, और ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द से पढ़ना आरम्भ किया। मौलाना मुह़म्मद याक़ूब साह़ब से तिरमिज़ी शरीफ़ के कुछ पाठ पढ़े। फिर दौरह ह़दीस गंगोह पहुंच कर ह़ज़रत गंगोही से पढ़ा।

1885 ई. में दारुल उ़लूम में अध्यापक पद पर नियुक्ति हुई और विभिन्न विषयों की पुस्तकें पढ़ाईं। 1892 ई. में जब ह़ज़रत ह़ाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब ने दारुल उ़लूम के एहतमाम से इस्तीफ़ा दे दिया तो एक के बाद दूसरे मोहतमिम हुए (ह़ाजी फ़ज़ले ह़क़ देवबन्दी और मौलाना मुनीर नानौतवी) मगर एक साल से अधिक एहतमाम न कर सके। प्रत्येक वर्ष के परिवर्तन के कारण दारुल उ़लूम के प्रबन्ध में अस्थिरता उत्पन्न होने लगी।

1313 हि./1895 ई. में ह़ज़रत गंगोही ने एहतमाम के लिये ह़ज़रत ह़ाफ़िज़ साह़ब की नियुक्ति करदी। ह़ाफ़िज़ साह़ब बहुत अच्छे प्रबन्धक और प्रभावशाली व्यक्ति थे। उन्होंने बहुत शीघ्र दारुल उ़लूम के इन्तज़ाम पर उबूर हासिल कर लिया और नियुक्ति के समय उन से जो आशायें थी वे पूरी हुई।

ह़ाफ़िज़ साह़ब के एहतमाम के समय दारुल उ़लूम ने बड़ी उन्नति की। जब उन्होंने दारुल उ़लूम का एहतमाम संभाला था तो दारुल उ़लूम की आमदनी का औसत 5-6 हज़ार रूपये सालाना था। आपके समय में

यह बजट 90 हज़ार तक बढ़ गया। इसी प्रकार तलबा का औसत दो ढ़ाई सौ से उन्नति कर के लागभग नौ सौ तक पहुंच गया। उस समय पुस्तकालय में 5 हज़ार किताबें थी, आप के समय में किताबों की संख्या 40 हज़ार पहुंच गयी। 1895 ई. तक इ़मारत दारुल उ़लूम की मालियत 36 हज़ार थी, आप के समय में यह मालियत 40 लाख पहुंच गयी।

आपके एहतमाम के समय दारुल उ़लूम ने बहुत अधिक उन्नति की। आप के एहतमाम से पहले, विभागों और द़फ़्तरों का कोई साफ़ प्रबन्ध न था। आप ही के समय में मदरसे से दारुल उ़लूम बना। विभाग और द़फ़्तरों की शक्ल व्यवहारिक बनाई गयी। प्रतिदिन दारुल उ़लूम का क़दम आगे ही आगे बढ़ता चला गया। आपके एहतमाम का समय दारुल उ़लूम की तारीख़ में बड़ा महत्वपूर्ण है।

दारुल उ़लूम की दारुल ह़दीस की इ़मारत जो अपनी कि़स्म की हिन्दुस्तान भर में पहली इ़मारत है आप ही के समय में बनाई गयी थी। जदीद दारुल इक़ामह का आग़ाज़ (आरम्भ) और मस्जिद क़दीम व कुतबख़ाने की तअ़मीर (निर्माण) भी हाफ़िज़ साह़ब के ज़माने की यादगारें हैं। 1910 ई. में एक बहुत बड़ा दस्तार बन्दी का जलसा आपके ज़माने की यादगार है जिस में एक ह़ज़ार से अधिक फ़ुज़ला (विद्वान) की दस्तार बन्दी हुई थी। दारुल उ़लूम की तरक़्क़ी के सम्बन्ध में ह़ाफ़िज़ साह़ब ने मुल्क के विभिन्न शहरों की यात्रा करके दारुल उ़लूम के लिये बहुत से स्थाई चन्दे नियुक्त कराये। विशेष रूप से पूर्व रियासत भोपाल, बहावलपुर और हैदराबाद की यात्रायें कीं जो दारुल उ़लूम के इतिहास में हमेशा याद रहेंगे।

ब्रिटिश सरकार की ओर से आप को शम्सुल उ़लमा का ख़िताब दिया गया था। मगर आपने दारुल उ़लूम के स्वतन्त्रता के समर्थन के कारण सरकार का ख़िताब (सम्मान) प्राप्त करना पसन्द नहीं किया अतः पदक वापस कर दिया। यह भी आप ही के समय की विशेषता थी कि दोबार उत्तरप्रदेश के राज्यपाल दारुल उ़लूम में आये।

ह़ाफ़िज़ साह़ब की सबसे बड़ी ख़ूबी यह थी कि दारुल उ़लूम की बड़ी से बड़ी समस्या आसानी से सुलझा दिया करते थे। विद्यार्थियों की छोटी से छोटी समस्या पर नज़र रहती थी। उन पर रोक टोक और डांट–डपट रखते थे। वहीं उनपर दयालु और मेहरबान थे। विद्यार्थियों

की छोटी से छोटी आवश्यक्ता पर प्यार से नज़र रखते थे। बीमार विद्यार्थियों के इ़लाज पर विशेष ध्यान देते थे। अध्यापकों और विद्यार्थियों पर ह़ाफ़िज़ साह़ब का रोब (दबदबा) अतिथि सत्कार बहुत ऊंचा था। दारुल उ़लूम के अतिथियों का ख़र्च स्वयं उठाते थे। आरम्भ से पढ़ने–पढ़ाने का जो कार्य था वह एहतमाम के समय भी जारी रहा। भाषण बहुत स्पष्ट और सुलझा हुआ होता था। अपने पिता के विशेष विषयों या ज्ञान पर काफ़ी पकड़ थी।

ह़ाफ़िज़ साह़ब को रियासत ह़ैदराबाद दकन में मुफ़्ती आज़म के पद पर नियुक्त किया गया। हुकूमत आसफ़ीया के इस सबसे बड़े दीनी पद पर आप 1922 ई. से 1925 ई. तक नियुक्त रहे। निज़ाामे ह़ैदराबाद को दारुल उ़लूम में आने का निमन्त्रण दिया जो स्वीकार कर लिया गया था। प्रोग्राम यह था कि निज़ाम जब दिल्ली जायेंगे तो दारुल उ़लूम भी देखेंगे। 1928 ई. में निज़ाम के दिल्ली आने की सम्भावना थी वादे की याद दोहराने के लिये आप ह़ैदराबाद तश्रीफ़ ले गये। जिस समय आप ह़ैदराबाद की तैयारी कर रहे थे तो स्वास्थ्य बिगड़ गया। अपनी बीमारी की परवाह न करते हुए दारुल उ़लूम के लाभ के लिये ह़ैदराबाद चल दिये वहां जाकर त़बीअ़त और ख़राब हो गयी। पहले तो प्रतीक्षा करते रहे कि त़बीअ़त सम्भले तो निज़ाम से मुलाक़ात की जाये। मगर जब मर्ज़ दिन बदिन बढ़ता गया तो साथियों ने राय बनाई कि वापस देवबन्द ले जाया जाये। अतः वापसी के इरादे से आप हैदराबाद से चल दिये, मगर अभी ट्रेन ह़ैदराबाद की सीमा में ही थी कि निज़ामाबाद स्टेशन पर ह़ाफ़िज़ साह़ब का स्वर्गवास हो गया। यह घटना 3 जुमादल ऊला 1347 हि./17 अकतूबर 1928 ई. को हुई।

निज़ामाबाद स्टेशन पर शव (लाश) उतार कर जनाज़ह तैयार किया गया, साथियों और निज़ामे दकन को तार द्वारा सूचित किया गया। निज़ाम का उत्तर आया कि ह़ाफ़िज़ साह़ब का जनाज़ह ह़ैदराबाद ही लाया जाये। निज़ामाबाद और ह़ैदराबाद में कई–कई बार नमाज़े जनाज़ह पढ़ी गई। अगले दिन सरकारी ख़र्च पर आप को विशेष क़ब्रिस्तान 'ख़ित्ता–ए–सालीह़ीन' में दफ़ना दिया गया।

ह़ाफ़िज़ साह़ब ने 45 वर्ष दारुल उ़लूम की सेवा की। आरम्भ के दस साल पढ़ाने में गुज़ारे और 35 साल मोहतमिम रहे।

ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी

आप ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रह़मान के बेटे थे। आरम्भ से अन्त तक दारुल उ़लूम में शिक्षा प्राप्त की। आप एक उच्च कोटि के विद्वान और अ़रबी भाषा के बड़े साहित्यकार थे। उनका अनुशासन और प्रशासन दारुल उ़लूम में प्रसिद्ध था। दारुल उ़लूम की तरक़्क़ी में इन का बड़ा योगदान रहा है।

1907 ई. में ह़ज़रत मौलाना ह़ाफ़िज़ अह़मद साह़ब की तल्लीनताओं के कारण और दारुल उ़लूम को उन्नति देने के लिये एक ऐसे योग्य और प्रशासनिक व्यक्ति की ज़रूरत अनुभव की गयी जो समय पड़ने पर ह़ाफ़िज़ साह़ब की सहायता कर सके इसके लिये आप से अधिक उचित कोई दूसरा व्यक्ति नहीं था। अतः इनकार के बावजूद आपको मजबूर करके उप–मोहतमिम बनाया गया। कहा जाता है कि यह दारुल उ़लूम का सौभाग्य था कि उसको मौलाना ह़बीबुर्रह़मान साह़ब उस्मानी जैसा काम करने वाला निःस्वार्थ व्यक्ति मिल गया। एहतमाम के कामों में उन को इतना अनुभव था कि उन्होंने दारुल उ़लूम के विभागों को इतना सुसंगठित कर दिया था कि जब ह़कूमते आसफ़िया की ओर से नवाब सदरयार जंग बहादुर ने दारुल उ़लूम के ह़िसाब किताब की जांच की तो उन को यह देखकर आश्चर्य हुआ कि एक–एक दो–दो आने तक के ह़िसाब के काग़ज़ात और रसीदें नियामानुसार फ़ाइल में मौजूद थीं। नवाब सदरयार जंग बहादुर का बयान है कि कोइ काग़ज़ ऐसा नहीं था जो मांगा गया हो और तुरन्त पेश न किया गया हो। ह़ाफ़िज़ साह़ब के समय की तरक़्क़ी वास्तव में आपके सहयोग से थी। आप सदैव उनके दाहिने हाथ और विश्वासनीय नायब रहे।

1925 ई. में जब ह़ाफ़िज़ साह़ब अपनी उ़म्र के कारण हैदराबाद के मफ़्ती–ए–आज़म के पद से मुक्ति पा गये तो उनकी जगह आप की नियुक्ति हुई परन्तु कुछ मतभेद के कारण आपने पद से त्याग पत्र दिया। इसी समय अ़ल्लामह अन्वर शाह कश्मीरी, ह़ज़रत मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रह़मान और ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी साह़ब और दूसरे अध्यापकों

और विद्यर्थियों की बड़ी जमात के साथ दारुल उ़लूम से अलग होगए। यह बड़ा नाज़ुक समय था। मगर आपके साहस और हिम्मत और बुद्धिमत्ता ने दारुल उ़लूम की किश्ती को डगमगाने से बचा लिया।

1347 / 1928 में ह़जरत़ हाफ़िज़ अह़मद साह़ब के बाद दारुल उ़लूम के मोहतमिम बनाये गये और 1348 / 1929 तक इस पद पर रहे।

मौलाना ह़बीबुर्रह़मान जिनका व्यक्तित्व हर प्रकार से अद्वितीय है उसके सम्बंध में विचार किया जाता है अगर आपको देश की राजनिति में भी इतना ही लगाव होता जितना दारुल उऱ्लूम से था तो आप दुनिया के बड़े लीडर सिद्ध होते। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की वसीयत थी कि जमीअ़तुल उ़लमा के दो सदस्यों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए उनमें पहला नाम आप ही का था। आप जमीअ़तुल उ़लमा के बेहतरीन परामर्शदाता सिद्ध हुए। 1921 ई. में जमीअ़तुल उ़लमा का इजलास गया (बिहार) में हुआ था उसमें आप को उसका सदर बनाया गया और उसकी राजनीतिक महत्ता को मुल्क के राजीतिक क्षेत्र में भी पसन्द किया गया।

अध्ययन की अधिकता के कारण आपका समान्य ज्ञान काफ़ी विस्तृत था ह़ज़रत शाह साह़ब फ़रमाया करते थे "अगर मुझपर किसी के इ़ल्म का प्रभाव पड़ता है ते वह मौलाना ह़बीबुर्रह़मान है।" अ़रबी अदब और तारीख़ से विशेष रूचि थी। निम्मन लिखित पुस्तकें उनकी यादगार हैं:

(1) क़सीदतुल मुअ़जिज़ात– यह ह़ज़रत मुह़म्मद स0 की नअ़त (प्रशंसा) में लगभग तीन सौ अ़रबी अशआ़र हैं जिनमें ह़ज़रत मुह़म्मद स0 के एक सौ मोअ़जिज़े बड़े साहित्यिक रूप में पेश किये गये हैं। मौलाना मुह़म्मद ऐजा़ज़ साह़ब अमरोहवी ने अ़रबी अशआ़र की सरल उर्दू में व्याख्या की है।

(2) इशाअ़ते इसलाम – दुनियां में इसलाम क्यों कर फैला? इस सवाल के जवाब में तक़रीबन पांच सौ पृष्ठों पर उन एतिहासिक घटनाओं को पेश किया गया है जो अपनी मनोवैज्ञानिक आकर्षण के आधार पर इशाअ़ते इसलाम का कारण बनीं।

(3) तअ़लीमाते इसलाम – इस पुस्तक में इस्लामी ह़कूमत के तरीक़े को बयान किया गया है कि मशवरह अमीरे ज़मात के लिये कितना आवश्यक है।

(4) रह़मतुल लिलआ़लमीन – यह ह़ज़रत मुह़म्मद स0 की जीवन पर बहुत अच्छी पुस्तक है।

(5) अल–क़ासिम – यह मासिक पत्रिका थी जिसे आप ने दारुल उ़लूम से जारी किया!

मृत्यु

4 रजब 1348 हि./5 दिसमबर 1929 ई. की रात में आप का स्वर्गवास हुआ।

ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब (1897–1983)

ह़ज़रत मौलाना कारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब दारुल उ़लूम के सातवें मोहतमिम, आल इण्ड़िया मुस्लिम प्रसनल्लाह बोर्ड के अध्यक्ष और एक अज़ीम आलिम थे। आप ह़ज़रत नानौतवी के पोते हैं। आप को अल्लाह ने असंख्य गुणों से नवाज़ा था। ज़ाहिरी उ़लूम में वह अल्लामा अनवरशाह कश्मीरी के प्रिय शिष्य थे और आत्मिक ज्ञान में उनको ह़कीमुल उम्मत ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी जैसे अ़ज़ीम शेख़ की ख़िलाफ़त प्राप्त थी उन्होंने अपने पठन–पाठन, भाषण, उपदेश, व दावत के विभिन्न साधनों से अपनी लम्बी उ़मर में न केवल हिन्दुस्तान बल्कि इस्लामी दुनिया को लाभ पहुंचाया।

1897 ई. में पैदा हुए। सात साल की आयु में दारुल उ़लूम में दाख़िल हुए। दो साल के अन्दर कुरआन शरीफ़ क़िराअत व तजवीद के साथ ह़िफ़्ज़ कर लिया। पांच साल फ़ारसी, ह़िसाब की कक्षायें पास करके अ़रबी पाठयक्रम आरम्भ किया जिससे 1918 ई. में शिक्षा पूरी करली। पढ़ते समय आपके पूर्वजों के सम्बन्ध से अध्यपकों ने उच्च कोटि की विशेष तरीक़े से तअ़लीम व तरबियत की। ह़दीस की विशेष सनद आपको उस समय के प्रसिद्ध उ़लमा से प्राप्त हुई।

शिक्षा पूर्ण करने के बाद आप ने दारुल उ़लूम में पढ़ाना आरम्भ कर दिया। ज्ञान, बुद्धि और परिवारिक निस्बत के कारण आपसे विद्यार्थी बहुत जल्दी प्रभावित हो गये। इसके बाद 1924 ई. में आप को नायब मोहतमिम बना दिया गया जिस पर 1928 ई. तक आप अपने पिता साह़ब और ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान साह़ब की देख–रेख में एहतमाम के कामों में ह़िस्सा लेते रहे। 1929 ई. में मौलाना ह़बीबुर्रह़मान की मृत्यु के पश्चात आपको दारुल उ़लूम का मोहतमिम बना दिया गया। पिछले अनुभव कार्य की दक्षता और पारिवारिक सम्बन्ध से यह सिद्ध हो चुका था कि आप के व्यक्तित्व में दारुल उ़लूम के एहतमाम की क़ाबिलियत

बहुत अच्छी है। अतः मोहतमिम होने के बाद आप को अपने ज्ञान और ख़ानदानी प्रभाव के कारण देश में शीघ्र ही प्रसिद्धि और बड़ाई मिली, जिस से दारुल उ़लूम को उच्चता और शोहरत (प्रसिद्धि) मिली। अतः दारुल उ़लूम ने आपके समय में बड़ी उन्नति प्राप्त की।

जब आप ने दारुल उ़लूम के एहतमाम की बागडोर संभाली तो उसके केवल आठ विभाग थे जिन की संख्या आपने 23 तक पहुंचा दी, उस समय दारुल उ़लूम की आमदनी का सालाना बजट 50262 रूपय था। आपके समय में 26 लाख तक पहुंच गया। 1929 ई. में दारुल उ़लूम के मुलाज़िमीन के अ़मले में 45 आदमी थे, आपने उनकी संख्या दो सौ तक पहुंचादी। उस समय अध्यापकों की संख्या 18 थी जो बढ़कर 59 हो गयी। विद्यार्थियों की संख्या 480 थी जो आप के समय में दो हज़ार तक पहुंच गयी। इसी प्रकार भवनों में भी बहुत अधिक उन्नती हुई। दारुत्तफ़सीर और दारुल इफ़ता व दारुल कु़रआन, मत़बख़, जदीद फ़ोक़ानी दारुल ह़दीस, बालाई मस्जिद, बाबुज़्ज़ाहिर, जामिया तिब्बिया, दो मंज़िला दारुल इक़ामह (होस्टल) मेहमान ख़ानह की इ़मारत, कुतुबख़ाने (पुस्तकालय) का बड़ा हाल, अफ़रीक़ी मंजिल (मत़बख़ के पास) और दरसगाहों की बढ़ोतरी हुइ। तात्पर्य यह कि दारुल उ़लूम के हर विभाग ने बहुत तरक़्क़ी की थी। दारुल उ़लूम की प्रबन्धक समिति ने अनेकों बार आप की सेवाओं की सराहना की। दारुल उ़लूम की शान को प्रजवलित रखने के लिये बुढ़ापे तक जवानी की भांति काम में लगे रहे।

शैक्षिक सिलसिले में पढ़ाने के अ़लावह भाषण देने में आप को अल्लाह की ओर से बड़ा अभ्यास मिला था। विद्यार्थी जीवन ही से आप का भाषण पब्लिक जलसों में बड़े ध्यान से सुना जाता था। अहम–अहम मसाइल (समस्या) पर दो–दो तीन–तीन घन्टे लगातार भाषण देने में आप को कोई रुकावट और तकलीफ़ नहीं होती थी। ह़क़ाइक़ और शरीअ़त के बयान करने में अपको विशेष अधिकार था। देश का कोई भाग ऐसा नहीं जिस में आपकी तक़रीरों की गूंज नहीं पहुंची। आपकी ज्ञान भरी तक़रीर जब इ़ल्म के गहरे समन्दर से गुजरती थी तो लहरों की शांति देखने योग्य होती थी।

जमीअ़तुल उ़लमा के सालाना इजलास में आपके अध्यक्षीय भाषण

बड़ी क़दर से देखे गये हैं। आपकी इल्मी तक़रीरों से एक विशेष वर्ग तैयार हो गया है। विदेशों में भी आप के भाषणों के प्रभाव वहां के इ़ल्मी हल्कों में पहुंच चुके हैं 1934 में हिजाज़ (अऊदी अ़रब) की यात्रा के समय जब एक वफ़द की अध्यक्ष की हैसियत से सुलतान इब्ने सऊ़द के दरबार में जो भाषण दिया उसने सुलतान (सम्राट) को बहुत प्रभावित किया। जिस से उन्होंने इनका बड़ा सम्मान किया।

1939 ई. में आपकी अफ़ग़ानिस्तान का सफर एक अलग इतिहास है। आप ने दारुल उ़लूम के सदस्य के रूप में, दारुल उ़लूम और अफ़ग़ानिस्तान सरकार के बीच शैक्षिक सम्बन्ध स्थापित करने के लिये यह यात्रा अपनाई थी। अफ़ग़ानिस्तान के शैक्षिक, साहित्यक, सरकारी और ग़ैर सरकारी अंजुमनों और सोसायटियों ने बुलाया था। आप की आ़लिमाना तक़रीरों से वहां के इ़ल्मी और अदबी क्षेत्र बहुत प्रभावित हुए। इसी प्रकार विदेशों में आपने ब्रमा, दक्षिणी अफ़्रीक़ा, ज़नजिबार, कीनिया, रोडेशिया, रियूनियन, मडगासकर, ह़ब्शह, मिश्र, इंग्लैण्ड, फ्रांस और जर्मनी आदि देशों का दौरा किया था।

शायरी से भी लगाव था। आप की काफ़ी नज़्में प्रकाशित हो चुकी हैं। आप का संग्रह इ़रफ़ान आ़रिफ़ के नाम से छप गया है। अध्यक्ष भाषण, तक़रीर की भांति तह़रीर पर भी आप का अधिकार था आप की पुस्तकों की संख्या काफ़ी है। कुछ पुस्तकों के नाम इस प्रकार हैं: (1) अत्तशब्बुह फ़िल इसलाम (2) मशाहीरे उम्मत (3) कलिमाते तय्यबात (4) अत्यबुस्समर (5) साइंस और इसलाम (6) तालीमाते इसलाम और मसीही अक़वाम (7) मसला–ए–ज़ुबान उर्दू व हिन्दुस्तान (8) दीन व सियासत (9) असबाबे उ़रूज व ज़वाल (10) इसलामी आज़ादी का मुकम्मल प्रोग्राम (11) अल–इजतिहाद वत्तक़्लीद (12) उसूल दअ़वते इसलाम (13) इसलामी मसावत तफ़्सीर सूरह फ़ील (14) फ़ित़री ह़कूमत आदि।

1980 ई. में आप के एहतमाम के समय दारुल उ़लूम के सदसाला इजलास की चहल पहल आज तक लोगों के दिलों में ताज़ा है। उस एतिहासिक इजलास में दुनियां ने देख लिया कि न केवल उपमहद्वीप बल्कि पूरी दुनिया पर दारुल उ़लूम के इ़ल्मी व रूह़ानी लाभ का सर्किल कितना बड़ा है। अपने बुढ़ापे और कमज़ोरी के बावजूद अपनी सोच और कार्य की पुख़्तगी दर्शाते हुए इस दुनिया भर के इजलास के द्वारा

देवबन्दी विचार धारा को आम किया और राष्ट्रीय अन्तरराष्ट्रीय प्रसिद्ध दुनिया भर की विभूतियों को समेट कर आ़म व ख़ास अ़वाम के ठाठे मारते समन्दर की लहरों के द्वारा यह सिद्ध कर दिया कि दारुल उ़लूम देवबन्द एक शैक्षिक संस्था ही नहीं बल्कि पूरी दुनियां के मुसलमानों की तमन्नाओं का केन्द्र है।

1980 ई॰ के पश्चात बृद्धावस्था के कारण एहतमाम की ज़िम्मेदारियां आप पर बोझ लगने लगी तो आपने मजलिसे शूरा में एक सहायक की ज़रूरत का इज़हार किया। अतः प्रार्थना पत्र के अनुसार मजलिसे शूरा ने सहायतक रूप में मौलान मरग़ूबुर्रह़मान साह़ब को नियुक्त किया।

लेकिन इस के बाद ह़ज़रत क़ारी साह़ब अपने समीपवर्ती सलाह कारों की गलत पालीसियों का शिकार होगये। कुछ एसे फैसले लिये जो कि नियम के विरूद्ध थे और एक बड़ा क़दम उठाया कि एक ग़ैर क़ानूनी इजतमा (जलसा) तलब कर के मजलिस–ए–शूरा तोड़ देने की घोषणा करदी। इस घटना ने दारुल उ़लूम के प्रबन्ध की जड़ें हिला दीं। प्रबन्ध कमैटी की सियासी खींचा तानी ने दुनिया भर के मुसलमानों को चिंता में डाल दिया। अक्तूबर 1981 में दारुल उ़लूम से विद्यार्थियों को दारुल उ़लूम से बाहर निकाल दिया गया। 23–24 मार्च 1982 ई॰ की रात में विद्यार्थी फिर दारुल उ़लूम के अन्दर लौट आये। और नियमानुसार मजलिसे शूरा के आधीन दारुल उ़लूम चल पड़ा। 15 अगस्त 1982 ई. को मजलिस–ए–शूरा के जलसे में आप ने त्याग पत्र जिस में दारुल उ़लूम से दिली लगाव के इज़हार के बाद एहतमाम की ज़िम्मेदारियों से अलग कर देने की दरख़ास्त थी। आपकी वृद्धावस्था को ध्यान में रखते हुए मजलिस–ए–शूरा के मेम्बरों ने उस को स्वीकार कर लिया।

1982 ई. के आरम्भ ही से आपका स्वास्थ्य दिन प्रति दिन गिरता जा रहा था। 17 जूलाई 1983 ई को अन्ततः दारुल उ़लूम देवबन्द और आल इण्ड़िया मुस्लिम प्रसनल लॉ बोर्ड के प्लेट फ़ार्म से क़ौम व मिल्लत की महान सेवा को पूर्ण करके आप इस दुनियां से रुख़्सत फ़रमा गये। क़ब्रिस्तान क़ासमी में ह़ज़रत मौलाना क़ासिम नानौतवी की बग़ल में दफन हैं।

हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान बिजनौरी (1914–2010)

हज़रत क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब के बाद दारुल उ़लूम देवबन्द के एहतमाम का पद हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साहब बिजनौरी को सौंपा गया। आप दारुल उ़लूम के आठवें मोहतमिम थे। आपने लगभग आधी सदी तक दारुल उ़लूम की सेवा की जिसमें शुरू में लगभग बीस सालों तक मजलिस–ए–शूरा के सदस्य रहे इसके बाद तीस साल तक आप दारुल उ़लूम के मोहतमिम रहे। आपने बडे कठिन समय में बडे साहस के साथ संस्था को मंझधार से किनारे पर लगाया।

हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साहब शहर बिजनौर मुहल्ला क़ाज़ीपाड़ह के एक दीनी और इल्मी सम्मानित ज़मींदार घराने में 1333 हि./1914 ई. को पैदा हुए। आपने बड़े धनी परिवार में जन्म लिया और जीवन का अधिकतर भाग इसी खुशहाली में गुज़ारा था। आपके रिशते के नाना हकीम रहीमुल्लाह बिजनौरी (मृत्यु 1347 हि./1929 ई.) दारुल उ़लूम के प्रथम समय के फ़रिग़ थे। हज़रत नानौतवी के अंतिम दौर के प्रिय छात्रों में से थे। आप के पिता हज़रत मौलाना मशीयतुल्लाह बिजनौरी (मृत्यु 1372 हि./1952 ई.) हज़रत शैखुल हिन्द के शागिर्द और हज़रत अल्लामा अनवर शाह कश्मीरी के सहपाठी थे। हज़रत हकीम साहब 1344 हि. में दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के सदस्य चुने गये और जीवन भर सदस्य रहे। मौलाना मरगूबुर्रहमान साहब के बडे भाई हकीम मतलूबुर्रहमान (मृत्यु 1408 हि./1988 ई.) भी दारुल उ़लूम देवबन्द के पढे थे। ये हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना मदनी के आरम्भिक सदारत के विद्यार्थियों में से थे। हज़रत मदनी से उनका बड़ा तअल्लुक़ था।

होश संभाला तो मदरसा रहीमिया मदीनतुल उ़लूम जामा मस्जिद बिजनौर में दाख़िल कर दिये गये। यह मदरसा हज़रत मौलाना हकीम रहीमुल्लाह साहब की वसीयत के मुताबिक़ उन्हीं के ख़र्च से चलाया

गया था। आपके पिता मौलाना मशीयतुल्लाह के संरक्षण और देखरेख में यह मदरसा चल रहा था। तीन साल में वहां की शिक्षा पूरी करके आपने 1351 हि./1932 ई. में ह़ज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना मदनी से सही बुख़ारी और जामे तिर्मिज़ी और दूसरे अध्यापकों से ह़दीस की किताबें पढकर शिक्षा पूरी करली। इसके बाद शोबा इफ़ता में (1353 हि. में) दाख़िल होकर शोबे के सदर ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सहूल भागलपुरी और मुफ़ती शफ़ी देवबन्दी आदि से इफ़ता पढ़ा।

शिक्षा प्राप्त करने के बाद पिता के कहने पर आरम्भिक शिक्षा के मदरसे रहीमिया मदीनतुल उ़लूम में पढ़ाना शुरू कर दिया लेकिन यह काफ़ी दिनों तक नहीं चल पाया। जायदाद और जनसेवा के कामों में आप इतने उलझ गये कि पढाने के काम को रोक देना पड़ा।

दारुल उ़लूम में

1382 हि./1962 ई. में मजलिस–ए–शूरा दारुल उ़लूम देवबन्द के सदस्य बने। इसी साल मौलाना अबुल हसन नदवी, मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन सज्जाद मेरठी, मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी, मौलाना हामिद अंसारी ग़ाज़ी और सय्यद हमीदुद्दीन फ़ैज़ाबादी शेखुल ह़दीस मदरसा आलिया कलकत्ता के विद्वानों को भी मजलिस–ए–शूरा का सदस्य बनाया गया। मजलिस–ए–शूरा में आपकी राय की बडी अहमियत होती थी। मजलिस–ए–शूरा जब कोई सब कमेटी बनाती तो आप का नाम उसमें ज़रूर रखती थी। इस से पता चलता है कि आपके विचारों पर मजलिस–ए–शूरा को पूरा भरोसा होता था।

दारुल उ़लूम के पूर्व मोहतमिम ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब ने मजलिस–ए–शूरा में 25 रजब 1401 हिजरी/1981 ई. में एक प्रार्थनापत्र दिया कि बुढ़ापे और बीमारी के कारण उनके कार्य को हल्का करने के लिये कुछ प्रबंध किया जाये। इसी पर ह़ज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब को मददगार मोहतमिम बनाया गया। बाद में जब दारुल उ़लूम के हालात ख़राब हुए और ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब ने एहतमाम से त्यागपत्र दे दिया तो मजलिस–ए–शूरा ने 24 शव्वाल 1402 हिजरी तदनुसार 15 अगस्त 1982 ई. को ह़ज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब को स्थाई मोहतमिम बना दिया गया।

हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब ने दारुल उ़लूम की बागडौर ऐसे समय में संभाली जब बडी उथल–पुथल चल रही थी। ऐसी दशा में पूरे इन्तज़ाम को ठीक–ठाक करके बडे साहस के साथ उसको पूरा किया और सुकून व शांति बनाई। आपके तीस साला एहतमाम के दौर में कभी कोई बडा झगड़ा नहीं उभरा जिसके कारण दारुल उ़लूम में दिन रात तरक़्क़ी होती चली गई। आपके एहतमाम के दौर में तालीमी स्तर उंचा हुआ। अ़रबी के चौथे साल तक की शिक्षा के लिये मदरसा सानविया बनाया गया। बुनियादी तालीम की ओर विशेष ध्यान दिया गया। इसी प्रकार हिफ़्ज़ व नाज़रा और प्राइमरी दर्जों की तालीम की ओर विशेष ध्यान दिया गया। दारुल कुरआन के नाम से अलग इमारत बनाई गई और अध्यापक बढाये गये। इसी दौर में दारुल उ़लूम में ह़दीस पर रिसर्च विभाग स्थापित हुआ और शोबा तख़स्सुस फ़िल ह़दीस क़ायम हुआ। आपके तीस साला दौर एहतमाम में बीस हज़ार से अधिक फ़ुज़ला तैयार हुए। छात्रों की संख्या प्रतिवर्ष 2000 से बढ़कर चार हज़ार तक हो गई। दारुल उ़लूम का बजट पैंतीस लाख से बढकर सतरह करोड तक चला गया।

इस दौर में कई विभाग भी वजूद में आये विशेष रूप से इस्लाम की रक्षा पर विशेष ध्यान दिया गया। इसी संदर्भ में मजलिस तह़फ़ुज़ खत्म नबुव्वत, शोबा रद्दे ईसाइयत, शोबा तह़फ़ुज़ सुन्नत, शोबा मुहाज़रात इल्मिया का सिलसिला आरम्भ हुआ। इसी प्रकार दारुल उ़लूम की दीनी और दावती ख़िदमात को वर्तमान समय के अनुसार बनाने के लिये शैखुल हिन्द एकेडमी, शोबा कम्प्यूटर, मीडिया सेल, शोबा अंग्रेज़ी और शोबा इन्टरनैट स्थापित किये गये। इस सम्बन्ध में पत्रकारिता, कम्प्यूटर, अंग्रेज़ी में डिप्लोमा आदि कोर्स आरम्भ किये गये। शोबा इन्टरनैट के द्वारा दारुल उ़लूम का परिचय पूरी दुनिया में फैलाया गया। पूरी दुनिया में लोगों को दारुल उ़लूम की वैब साईट के द्वारा सम्पर्क बढा। पूरे हिन्दुस्तान में मदारिस को एक प्लेटफ़ार्म पर जमा करने के लिये 'ऑल इण्डिया राब्ता मदारिस अरबिया' की स्थापना इसी समय हुई। आप इस राब्ता इस्लामिया अरबिया के जीवनभर अध्यक्ष रहे। ढाई हजार से अधिक मदरसे इस संगठन में शामिल हैं। हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब के समय का एक बडा कार्य शोबा तंज़ीम व तरक़्क़ी को चुस्त दुरूस्त

बनाना है। इस शोबे को आपने बडी तरक़्क़ी दी। यह शोबा जो पहले कठिनता से एक तिहाई ख़र्च जमा करता था आज दारुल उ़लूम के दो तिहाई ख़र्च उठाता है। आपके ही समय में शोबा ख़रीद व फ़रोख़्त और स्टॉक रूम भी बना।

आपके एहतमाम के समय में कई शानदार इमारतें भी बनीं और ज़मीन का क्षेत्रफल दो गुना हो गया। मस्जिद रशीद, दारुल तरबियत, मदरसा सानविया, दारुल मुदर्रिसीन, रुवाक़े ख़ालिद, शैखुल हिन्द मंज़िल (आसामी मंज़िल), हकीमुल उम्मत मंज़िल (तहफ़ीज़ुल कुरआन मंज़िल) आदि इमारतें इसी दौर में बनीं। छात्रावास 'दारे जदीद' का नये अन्दाज़ में निर्माण कार्य इसी दौर में शुरू हुआ।

इस दौर में दारुल उ़लूम को (अन्तर्राष्ट्रीय) शोहरत मिली। दारुल उ़लूम ने अपने ऐतिहासिक परम्पराओं को क़ायम रखकर अपने विचारकों की भरपूर नुमाईन्दगी की। इस दौर में पूरी दुनिया से बडे–बडे प्रतिनिधि मंडल आये। अमीरूल हिन्द हज़रत मौलाना असद मदनी सदर जमीअत उलमा–ए–हिन्द के बाद आप सर्वसम्मति से तीसरे अमीरूल हिन्द चुने गये। आपने मुस्लिम क़ौम का मार्गदर्शन किया और विभिन्न कॉन्फ़्रेंसों और जलसों में आपके सदारत के खुतबात छप चुके हैं। आपकी बौद्धिकता, समझदारी और जीवन के लम्बे अनुभव के साथ आपका अख़लाक़ी और मानवता का गुण एक नमूना था।

मृत्यु – सन हिजरी के आधार पर आपने सौ साल की आयु पाई। 1 मुहर्रम 1432 हि./18 दिसम्बर 2010 ई. को बिजनौर में आपका इन्तक़ाल हुआ। मज़ार क़ासमी देवबन्द में आपको दफ़नाया गया।

ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम मुह़म्मद वसतानवी

(जन्म: 1370 हि./1950 ई.)

ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम मुह़म्मद वसतानवी साह़ब, जामिया इशाअ़तुल उ़लूम अक्कल कुवा (महाराष्ट्र) के मोहतमिम और देश के असंख्य संसथाओं के संस्थापक और संरक्षक हैं।

ह़ज़रत मौलाना वसतानवी साह़ब का वतन 'वसतान' ज़िला सूरत (गुजरात) है। आप का जन्म 1370 हि./1950 ई. को हुआ। आप के पिता का नाम ह़ाजी मुह़म्मद इसमाईल था। आप की प्रारम्भिक शिक्षा मदरसा क़ुव्वतुल इसलाम कोसारी में हुई। इस के बाद आप ने 1965 ई. में उच्च शिक्षा के लिये दारुल उ़लूम फ़लाह़ दौरान तरकेसर ज़िला सूरत (गुजरात) में दाखिला लिया और वहां के उलमा से लाभ प्राप्त किया। फिर 1392 हि./1972 ई. में मज़ाहिर उ़लूम सहारनपूर आ गए और शैखुल ह़दीस मौलाना ज़करिया कांधलवी आदि उसतादों से ह़दीस पढ़ी।

ह़ज़रत मौलाना वसतानवी ने अपने अध्यापक के कार्य को ज़िला सूरत के क़सबा उधाना से आरमभ किया। कुछ दिनों तक दारुल उ़लूम कंथरिया में भी रहे। अंत में महाराष्ट के एक पिछड़े क्षेत्र अक्कल कुवा ज़िला नंदूरबार में मदरसा इशाअ़तुल उ़लूम की नीव रखी जो उन्नति करते हुए आत एक बड़ा विद्ययालय बन गया है और उस की सैकड़ों शाखैं देश के विभिन्न स्थानों पर स्थापित हो चुकी हैं। मदरसा इशाअ़तुल उ़लूम अक्कल कुवा और उस की शाखों से हज़ारों ह़ाफ़िज़ और आ़लिम पैदा हो चुके हैं।

ह़ज़रत मौलाना वसतानवी साह़ब ने मदरसों के अलावह मुसलिम नैजवानों के लिये वर्तमान शिक्षा संसथाओं का सिलसिला भी आरमभ किया जिस में प्रइमरी स्कूल, हायर सेकंडरी स्कूल, बी एड कालेज, इंजीनियरिंग कालेज और मेडिकल कालेज शामिल हैं। आधुनिक शिक्षा के मैदान में भी आप की सेवाऐं बहुत अधिक हैं और मुसलिम नैजवानों

को इन संसथाओं से बहुत लाभ मिल रहा है।

हज़रत मौलाना वसतानवी साह़ब देश के अनेकों मदरसों की सरपरसती (संरक्षण) भी करते हैं। मदरसों और मुसलिम संसथाओं की आर्थिक मदद और विकास के लिये प्रयत्न करने में लगे रहते हैं।

1419 हि./1998 ई. में आप को दारुल उ़लूम देवबन्द की मजलिस–ए–शूरा का सदस्य चुना गया। आप दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–आ़मिला के अहम सदस्य हैं।

दारुल उ़लूम के भूतपूर्व मोहतमिम हज़रत मौलाना मरगूबुर्रहमान साह़ब की मृत्यु के बाद 5 सफ़र 1432/10 जनवरी 2011 को मजलिस–ए–शूरा के जलसे में आप को दारुल उ़लूम के मोहतमिम पद के लिये चुना गया जिस पर आप 21 शाबान 1432 हि./23 जूलाइ 2011 ई. तक बने रहे। इस प्रकार सफ़र से शाबान 1432 हि./जनवरी से जूलाई 2011 तक कुल सात महीने आप दारुल उ़लूम के मोहतमिम रहे।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी

(जन्मः 1366 हि./1947 ई.)

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साहब दारुल उ़लूम देवबन्द के दसवें मोहतमिम हुए। आप मुलक के प्रसिद्ध आलिम और मुफ़्ती हैं। दारुल उ़लूम के मोहतमिम पद पर आने से पहले जामिया इसलामिया रेवड़ी तालाब बनारस के शैखुल हदीस और मुफ़्ती थे। दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के वरिष्ठ मिमबर होने के साथ साथ जमीअ़त उ़लमा–ए–हिन्द की मजलिस आमिला (कार्यकारिणी समिति) के अहम सदस्य भी रहे।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साहब का जन्म 22 फरवरी 1366 हि./14 जनवरी 1947 ई. को बनारस (वारांसी) शहर के मोहल्ला मदनपूरा में हुआ। आप के पिता का नाम हाजी मुहम्मद हनीफ़ था। आप की प्रारम्भिक शिक्षा घर पर ही पिता और दादा जनाब क़ारी मुहम्मद निज़ामुद्दीन साहब की देख रेख में हुई। फिर जामिया इसलामिया मदनपूरा में पढ़ा। बाद में अ़रबी शिक्षा के लिये उस क्षेत्र के प्रसिद्ध मदरसा दारुल उ़लूम मऊनाथ भंजन में प्रवेश लिया। 1381 हि./1962 ई. में मिफ़्तरहुल उ़लूम मऊ में एक साल शिक्षा प्राप्त कर के उच्च शिक्षा के लिये दारुल उ़लूम देवबन्द आ गये।

दारुल उ़लूम में 1382 हि./1963 ई. से 1388 हि./1969 ई. तक दाखिल रहे। 1387 हि./1968 ई. में दौरा हदीस पूरा किया और फिर एक साल तक दारुल इफ़्ता से मुफ़्ती का कोर्स पढ़ा। अ़रबी भाषा और साहित्य से भी आप को दिलचस्पी रही और आप ने मौलाना वहीदुज़्ज़माप कैरानवी से लाभ प्राप्त किया। दारुल उ़लूम के विद्यार्थीयों की अंजुमन में आप बढ़ चढ़ कर हिस्सा लेते थे।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साहब ने दारुल उ़लूम देवबन्द से शिक्षा प्राप्ति के बाद अपने शहर बनारस के पुरीने मदरसे

जामिया इसलामिया रेवड़ी तालाब में पढ़ाना आरमभ किया। दारुल उ़लूम में मोहतमिम पद पर नियुक्त होने तक इस मदरसे में शैख़ुल ह़दीस और सदर मुफ़ती रहे।

1413 हि./1992 ई. में आप को दारुल उ़लूम देवबन्द की मजलिस–ए–शूरा का सदस्य चुना गया। आप जमीअ़त उ़लमा–ए–हिन्द की मजलिस आमिला (कार्यकारिणी समिति) के भी सरगर्म सदस्य रहे और एक बार जमीअ़त के नाएब सदर भी नियुक्त हुए। आप दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के अहम सदस्यों में थे और कई बार मजलिस आमिला (कार्यकारिणी समिति) और अन्य समितियों के मिमबर रहे। 1 मुहर्रम 1432 हि./18 दिसम्बर 2010 ई. को ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साह़ब बिजनौरी के निधन के बाद मजलिस–ए–शूरा हाने तक आप को कार्यवाहक मोहतमिम नियुक्त किया गया।

ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम मुह़म्मद वसतानवी साह़ब के मोहतमिम बन्ने के बाद 19 रबीउल अव्वल 1432 हि./23 फरवरी 2011 को मजलिस–ए–शूरा की हंगामी मीटिंग बुलाई गई तो उस में ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती अबुल क़ासिम नोमानी को कार्यवाहक मोहतमिम नियुक्त किया गया। फिर 21 शाबान 1432 हि./23 जूलाइ 2011 ई. को मजलिस–ए–शूरा ने ह़ज़रत मौलाना वसतानवी साह़ब की जगह आप को दारुल उ़लूम का स्थाई मोहतमिम बना दिया। उस वक़्त से आप दारुल उ़लूम का प्रबंध भली भांति देख रहे हैं।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब प्रसिद्ध बुज़ुर्ग और आलिम ह़ज़रत मुफ़्ती महमूद हसन साह़ब गंगोही के ख़लीफ़ा भी हैं। आप एक कामयाब मुक़र्रिर (वक्ता) हैं और मुलक के अंदर व बाहर के जलसों और कॉन्फरंसों में भाग लेते रहते हैं। दारुल उ़लूम की देख रेख के साथ साथ आप दौरा ह़दीस के छात्रों को ह़दीस का सबक़ भी पढ़ाते हैं।

दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रिस और शैखुल ह़दीस

क्र.	नाम/कब से-कब तक	समय	जन्म-मृत्यु	पद
1	ह़ज़रत मौलाना याकूब साह़ब नानौतवी 1283/1866-1302/1884	19 साल	(1833-1884)	सदर व शैख़
2	ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद साह़ब देहलवी 1302/1884-1307/1890	6 साल	(मृत्यु 1894)	सदर व शैख़
3	शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन 1308/1891-1333/1915	25 साल	(1851-1920)	सदर व शैख़
4	ह़ज़रत अल्लामा अनवर शाह साह़ब कश्मीरी 1333/1915-1346/1927	12 साल	(1875-1933)	सदर व शैख़
5	ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी साह़ब 1346/1927-1377/1957	32 साल	(1879-1957)	सदर व शैख़
6	ह़ज़रत अल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम बलियावी 1377/1957-1387/1967	10 साल	(1887-1967)	सदर मुदर्रिस
7	ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन मुरादाबादी 1377/1957-1387/1967 ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन 1387/1967-1392/1972	10 साल 5 साल	(1889-1972)	शैखुल ह़दीस सदर व शैख़
8	ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुल हसन मुरादाबादी 1392/1972-1401/1981	9 साल	(1905-1981)	सदर मुदर्रिस
9	ह़ज़रत मौलाना शरीफुल ह़सन साह़ब देवबन्दी 1392/1972-1397/1977	5 साल	(1920-1977)	शैखुल ह़दीस
10	ह़ज़रत मौलाना मेराजुल हक़ साह़ब देवबन्दी 1401/1981-1412/1991	11 साल	(1910-1991)	सदर मुदर्रिस
11	ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी 1397/1977-1412/1991 ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी 1412/1991-1429/2008	15 साल 17 साल	(1919-2010)	शैखुलह़दीस सदर व शैख़
12	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी 1429/2008-अभी तक	जारी	(जन्म 1943)	सदर व शैख़

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यअ़क़ूब नानौतवी (1833–1884)

दारुल उ़लूम के इस उच्चतम पद पर सबसे पहले ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यअ़क़ूब नानौतवी साह़ब नियुक्त हुए। उन्होंने अपने पिता ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली और ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल ग़नी मुजद्दिदी देहलवी से शिक्षा प्राप्त की थी।

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यअ़क़ूब साह़ब नानौतवी 13 सफ़र 1249 हि./जूलाई 1833 को नानौता में पैदा हुए। क़ुरआन मजीद नानौता में हिफ़्ज़ (कण्ठस्थ) किया। मुह़र्रम 1260 हि. में जब कि इन की उ़मर गयारह साल की थी, इन के पिता इनको दिल्ली लेगये। तमाम शिक्षा अपने पिता से प्राप्त की लेकिन ह़दीस की शिक्षा ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल ग़नी मुजद्दिदी से प्राप्त की। ज़ुलह़िज्जह 1267 हि./1851 ई. में आपके पिता ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली की मृत्यु हो गयी।

शिक्षा प्राप्ति के बाद अजमेर कालेज में 30 रूपये माहवार नौकरी पर चले गये। प्रिंसिपल की सिफ़ारिश पर आप को डिप्टी कलक्ट्री का पद दिया गया मगर आप ने स्वीकार नहीं किया। इसके बाद आप को सौ रूपये माहवार बनारस पर भेजा गया। वहां से डेढ़सौ रूपये माहवार तनखाह पर डिप्टी इन्सपेक्टर बनाकर सहारनपुर में भेजे गये। यहीं पर 1857 ई. की क्रांति पेश आई। सरकारी नौकरी से इसतफ़ा (त्याग पत्र) देकर मेरठ में मुंशी मुम्ताज़ अ़ली के प्रेस में काम करने लगे।

1283 हि./1866 ई. में देवबन्द तशरीफ़ लाये और यहां सदर मुदर्रस के पद पर नियुक्त हुए। दारुल उ़लूम के प्रथम शैख़ुल ह़दीस थे। उन के पढ़ाये हुए बहुत से बड़े आ़लिम हुए। 19 वर्ष के समय में 77 विद्यार्थियों ने आप से सनदे फ़राग़त प्राप्त की। मौलाना अ़ब्दुल ह़क़ पुरक़ाज़ी, अब्दुल्लाह अम्बेहटा, मौलाना फ़तेह़ मुह़म्मद थानवी, शेख़ुल हिन्द मौलाना महमूद ह़सन देवबन्दी, मौलाना ख़़लील अह़मद अम्बेहटा, मौलाना अह़मद ह़सन अमरोहवी, मौलाना फ़ख़रुल ह़सन गंगोही, मौलाना

मंसूर खां मुरादाबादी, मौलाना मुफ़्ती अ़ज़ीज़ुर्रह़मान देवबन्दी, मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी, मौलाना ह़ाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद और मौलाना ह़बीबुर्रह़मान उस्मानी आदि प्रसिद्ध विद्वानों ने आप से शिक्षा प्राप्त की है।

ह़ज़रत मौलाना यअ़क़ूब साह़ब और उनके शिष्यों की शिक्षा के सिलसिले को देखते हुए अगर यह कहा जाये कि उस समय हिन्दुस्तान, बंगाल, अफ़ग़ानिस्तान और मध्य ऐशिया में जितने भी विद्वान हैं वे किसी न किसी रूप में आप से लाभ प्राप्त हैं तो यह अतिश्योक्ति न होगी। अशरफ़ुस्सवानेह़ में लिखा है: "ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यअ़क़ूब– जो प्रत्येक विषय में माहिर और बहुत बड़े दूरदर्शी भी थे– से ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी ने बड़ा लाभ उठाया है और अधिकतर विचित्र ज्ञान उन्हीं से प्राप्त किया है। (अश्रफ़ुस्सवानेह़ भाग 1 पृष्ठ 33)

मकतूबाते यअ़क़ूबी की प्रस्तावना लिखने वाले ह़कीम अमीर अह़मद लिखते हैं: "आप के सैकड़ों शार्गिद और मुरीद, फिर शागिर्दों के शागिर्द भारत के नगरों, क़ाबुल, बख़ारा वग़ैरह में मौजूद हैं। आप महान विद्वान होने के अ़लावा रूह़ानी (आत्मिक) ह़कीम भी थे।"

ह़ज़रत मौलाना यअ़क़ूब ने ह़ज़रत ह़ाजी इम्दादुल्लाह साह़ब मुहाजिर मक्की से सुलूक व मार्फ़त के मक़ामात तय किये थे। संसारिक आकर्षण बिल्कुल नहीं था।आप बहुत प्रसन्न चित्त, विनम्रभाषी और कमाल के व्यक्ति थे। स्वभाव में जलाल और जज़्ब का प्रभाव था और उस पर रोब और प्रभाव की यह दशा थी कि लोग बात करते हुए घबराते थे। मगर आप प्रत्येक व्यक्ति से बड़े प्यार के साथ मिलते थ। अपने पूर्वजों की भांति स्वभाव में बड़ा संतोष था जिस का अन्दाज़ह इस घटना से लगाया जा सकता है कि एक व्यक्ति ने जिनको मौलाना से बेतकल्लुफ़ी थी उसने निवेदन किया कि अमुक नवाब साह़ब की बड़ी इच्छा है कि एक बार आप उन के यहां तशरीफ ले जायें, मौलाना ने फ़रमाया "हमने सुना है कि जो मोलवी नवाब साह़ब के यहां जाता है नवाब साह़ब उसको सौ रूपये देते हैं। हमें वह ख़ुद बुला रहे हैं इस लिये शायद दो सौ रूपये देदें। सौ दो सौ रूपय हमारे कितने दिन के हैं हम वहां जाकर मौलवियत पर धब्बा नहीं लगायेंगे।"

मोलवी जमालुददीन भोपाली, ह़ज़रत मौलाना ममलूकुल अ़ली के शार्गिद थे। उन्होंने इसी सम्बन्ध से मौलाना यअ़क़ूब साह़ब को एक बड़ी

तनखा पर भोपाल बुलाया, मगर आपने दारुल उ़लूम की कम तनख़ाह पर काम करना पसन्द किया।

आपने दो ह़ज किये, पहला ह़ज 1860 ई. में ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम साह़ब के साथ। यह यात्रा पंजाब और सिंध के रास्ते से की गयी। दूसरे ह़ज के लिये 1877 ई. में तशरीफ़ लेगये। इस बार भी उ़लमा की एक जमात साथ रही। ह़ज़रत मौलाना नानौतवी, ह़ज़रत मौलाना गंगोही, ह़ज़रत मौलाना मज़हर नानौतवी, मौलाना मुनीर नानौतवी, मौलाना ह़कीम ज़ियाउददीन रामपुरी, शेखुल हिन्द मौलाना महमूदुल ह़सन देवबन्दी आदि ह़ज़रात के अ़लावह इस क़ाफ़िले में लगभग सौ आदमी थे।

मौलाना यअ़क़ूब साह़ब को शेर व शायरी का भी शौक़ था। गुमानाम, तख़ल्लुस था। उनहों ने दिल्ली में विद्यार्थी जीवन में ग़ालिब, ज़ोक़, सहबाई आज़ुर्दह जैसे प्रसिद्ध शायरों को देखा था, उनकी मजलिसों में शरीक हुए थे। मौलाना का फ़ारसी और उर्दू कलाम 'बयाज़े यअ़क़ूबी' में दर्ज है। अशआ़र क़ुदरते कलाम के साथ संवेदना और दर्द का प्रभाव है।

लेखन में तीन रिसाले उनकी यादगार हैं। ह़ज़रत मौलाना नानौतवी की जीवनी अगरचे बहुत संक्षिप्त है मगर भाषा और लेखन, दर्शन व वाक़िआ़त के लिहाज़ से बहुत उत्तम है। उनका दूसरा संग्रह मकतूबाते यअ़क़ूबी है जो 64 ख़तो पर आधारित है। ख़ुतूत प्रश्न के उत्तर में लिखे गये हैं। तीसरा संग्रह बयाज़े यअ़क़ूबी है। यह सफ़र ह़ज के ह़ालात, ह़दीस की किताबों की सनदें, मनज़ूमात और अ़मलियात आदि पर आधारित है। अन्त में तिब्बी नुस्ख़े लिखे गये हैं।

मृत्यु से कुछ दिन पूर्व अपने जन्म स्थान नानौता तशरीफ़ लेगये थे। वहीं 3 रबीलअव्वल 1302 हि./20 दिसम्बर 1884 को ताऊ़न की बीमारी में मृत्यु हुई।

हज़रत मौलाना सय्यद अहमद देहलवी (मृत्यु 1894)

आप उच्च कोटि के विद्वान थे। मनकूलात के साथ–साथ माकूलात के इमाम समझे जाते थे। विशेष रूप से, गणित, और हैयत में तो उनकी प्रसिद्धि योरोप तक पहुंची हुई थी। हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम कहा करते थे कि मोलवी सय्यद अहमद साहब को अल्लाह ने गणित विषय में वह ज्ञान दिया है कि इस विषय के आविषकारक को भी शायद इतनी हो।

दारुल उ़लूम की स्थापना के तीसरे साल 1868 ई. में द्वितीय श्रेणी के अध्यापक के रूप में बुलाये गये। हज़रत मौलाना यअ़कूब साहब की मृत्यु के बाद सदर मुदर्रसीन के पद पर नियुक्त किये गये। छह साल तक आप इस पद पर रहे। इस समय में 28 विद्यार्थियों ने दौरह हदीस (मौलवियत का अंतिम साल) पूरा किया।

1885 ई. में भोपाल तशरीफ़ लेगये और 1894 ई. में वहीं इन्तक़ाल फ़रमाया।

शेखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूदुल हसन

हज़रत शेखुल हिन्द दारुल के हालात 'दारुल उ़लूम के सरपरस्त (संरक्षक)' में आचुके हैं।

ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कशमीरी (1875–1933)

ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह साह़ब इस ज़माने के बहुत प्रसिद्ध और उच्चकोटि के विद्वान थे। अगर ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने दारुल उ़लूम की प्रसिद्धी का झंडा संसार में ऊंचा किया है तो शाह साह़ब ने शिक्षक के रूप में इस्लामी दुन्या को दीन की रोशनी से रोशन कर दिया। फ़िक़ह के ज्ञान में फ़क़ीहे आ़ज़म थे। इसलामी दुनिया ने इतना बड़ा विद्वान और आलिम बहुत कम पैदा किये हैं। शाह साह़ब यद्यपि एक ओर महान विद्वान थे तो दूसरी ओर तक़्वा में भी उनकी शख़्सियत बेमिसाल थी। तेज़ बुद्धि में वह अपनी मिसाल नहीं रखते थे। वह एक बाकमाल मुफ़स्सिर, मुह़द्दिस और फ़लसफ़ी थे। आदमी का एक कमाल का होना भी कम नहीं होता, मगर उनके अन्दर अनेको कमाल थे। वास्तविकता यह है कि इ़ल्मी दुनिया में एक इन्क़लाब पैदा हो गया था। ज्ञान के इच्छुक लोगों ने जिस अधिकता से इस महान विद्वान से जितना ज्ञान प्राप्त किया वह आप अपनी मिसाल हैं। ह़ज़रत गंगोही से ख़िलाफ़त प्राप्त की थी।

ह़ज़रत शाह साह़ब कशमीर के रहने वाले थे। 1292 हि./1875 ई. में एक सम्मानित शिक्षित परिवार में आप का जन्म हुवा। यह परिवार शिक्षा और ज्ञान के आधार पर उच्चतम समझा जाता था। साढे चार साल की आयु में अपने पिता मौलाना सय्यद मुअ़ज़्ज़म शाह से क़ुरआन मजीद शुरू की। तेज़ बुद्धि स्मरण शक्ति आरम्भ ही से थे अतः डेढ साल की इतनी कम आयु में क़ुरआन शरीफ़ के साथ फ़ारसी की कुछ पुस्तकें समाप्त करके अगली शिक्षा प्राप्त करने में लग गये। अभी 14 साल की आयु होगी कि शिक्षा प्राप्ति के शौक़ ने वतन छुडवा दिया। लग भग तीन साल हज़ारा के मदरसे में रह कर विभिन्न विषयों को पढ़ा, मगर देवबन्द की प्रसिद्धी ने आगे शिक्षा पूरी करने में बेचैन बना दिया।

अतः 1311 हि./1893 में देवबन्द आये। ह़ज़रत शेखुल हिन्द सदर मुदर्रस थे। उस्ताद ने शागिर्द को शागिर्द ने उस्ताद को पहली ही मुलाक़ात में पहचान लिया। पाठयक्रम की पुस्तकें पढ़ने के पश्चात तफ़्सीर की किताबें पढ़ना आरम्भ किया और कुछ ही सालों में दारुल उ़लूम देवबन्द में प्रसिद्धी प्राप्त करके शान प्राप्त की। 1314 हि. तक ह़दीस व तफ़्सीर का ज्ञान प्राप्त कर के आप ह़ज़रत गंगोही की ख़िदमत में उपस्थित हुए और ह़दीस की सनद के साथ–साथ आत्मिक ज्ञान से भी लाभान्वित हुए।

दारुल उ़लूम से शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात मदरसा अमीनिया दिल्ली में कुछ दिनों पढ़ाया। इस के बाद 1903 ई. में कशमीर चले गये। वहां अपने क्षेत्र में फ़ैज़े आ़म नाम का एक मदरसा स्थापित किया। 1905 ई. में ह़ज करने के गये, कुछ दिनों तक ह़िजाज़ में रहे और वहां के पुस्तकाल्यों से लाभ प्राप्त किया।

1909 ई. में आप देवबन्द तशरीफ़ लाये। ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने आप को यहां रोक लिया। 1915 ई. के अंत जब ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने अ़रब की यात्रा का इरादह किया तो अपने स्थान पर इनको नियुक्त किया। सदर मुदर्रसीन के पद पर लगभग बारह साल तक रहे। 1927 ई. के आरम्भ में दारुल उ़लूम के एहतमाम से कुछ मतभेद के कारण आप सदर मुदर्रसीन के पद से त्याग पत्र देकर गुजरात के मदरसा डाभेल में चले गये जहां 1932 ई. तक ह़दीस की शिक्षा देते रहे।

मध्य एशिया से लेकर चीन तक इन के इ़ल्म का प्रभाव रहा भारत और भारत से बाहर हज़ारों ज्ञान प्यासों ने अपनी प्यास बुझाई है। अविभाजित हिन्दुस्तान, अ़रब, ईरान, इ़राक़, अफ़ग़ानिस्तान, चीन, मिश्र, दक्षिण अफ़्रीक़ा, इन्डोनेशिया, मलेशिया के काफ़ी संख्या के विद्यार्थियों ने आप से लाभ उथया। दारुल उ़लूम में आपके समय में 809 विद्यार्थी ह़दीस से फ़ारिग़ हुए।

ह़ज़रत शाह साह़ब को अल्लाह की ओर से स्मरण शक्ति इतनी महत्व की मिली थी कि एक बार की देखी हुई किताब के विषय व मतलब की तो दूर की बात पृष्ठ और पंक्तियां याद रहती थीं। जो बात कान या दृष्टि के रास्ते दिमाग़ में पहुंच जाती वह सदैव के लिये सुरक्षित हो जाती। वह भाषण के बींच बिना झिझक हवाले पर हवाले देते चले

जाते थे। इसी के साथ अध्ययन का यह शौक़ था कि विभिन्न ज्ञान के ख़ज़ाने उन की जुस्तजू को संतुष्ठ न कर पाते थे। अधिक अध्ययन और स्मरण शक्ति के कारण मानों एक चलता फिरता कुतुबख़ाना थे। सिह़ाह़ सित्ता के अ़लावह अधिकतर किताबें ज़ुबानी याद थी। ख़ोज पर्ण मसले जिनकी ख़ोज में उमरें गुज़र जाती हैं उन को चन्द क्षण में ही स्पष्ट कर देते थे। वह हर एक इ़ल्म व फ़न पर स्पष्ट भाषण करते थे जैसे उन को तमाम विषय ज़ुबानी याद हैं। भाषण देते समय असंख्य पुस्तकों के ह़वाले बे रोक टोक देते चले जाते थे यहां तक कि अगर किसी किताब के पांच–पांच और दस–दस फ़ुटनोट होते तो हर एक की इ़बारत पृष्ठ व पक्ति याद होती थी। ह़दीसों का पूरा संग्रह और उनके सह़ी ग़लत के विवाद और उन के दरजे ज़ुबानी याद थे। प्रसिद्ध पुस्तकाल्यों के मख़्तूतात दृष्ठि से गुज़र गये थे। और ह़ाफज़े में सुरक्षित थे।

अध्यन केवल शरीअ़त तक ही सीमित न था बल्कि जिस विषय की भी किताब हाथ में आती उसका आरम्भ से अन्त तक अध्यन आवश्य कर लेते थे और जब कभी उस के सम्बन्ध में बात चीत हो जाती तो उस किताब के सम्बन्ध में ह़वालों के साथ बयान करते कि सुन्ने वाला आशचर्य करने लगता।

शाह साह़ब की स्मरण शक्ति ग़ज़ब की थी। शेख़ इब्ने हुमाम की पुस्तक फ़तहुन क़दीर जो आठ खण्ड़ों में है उसका अध्यन 20 दिन में इस प्रकार किया था कि फ़तहुल क़दीर की किताबुल–ह़ज की तलख़ीस (सारांश) भी साथ–साथ करते चले गये थे और इब्ने हुमाम साह़ब ने हिदायह पर जो एतराज़ किये थे उन के उत्तर भी लिखते गये। पढ़ाते समय एक बार फ़रमाया कि अब से 26 साल पहले मैंने फ़तहुल क़दीर का अध्यन किया था अब तक दोबारह देखने की ज़रूरत नहीं आई आज भी उसका मज़मून पेश कारूगां तो उस में बहुत कम अन्तर पाओगे। यह एक घटना है इस प्रकार के वाक़िआ़त उन के जीवन में असंख्य हैं।

अ़ल्लामा इक़बाल को शाह साह़ब से बहुत लगाव था। अधिकतर इ़ल्मी वाद विवाद में उन से सम्पर्क करते थे। अ़ल्लामा इक़बाल मरहूम को अपने जीवन के अन्तिम दिनों में इसलाम से जो लगाव उत्पन्न हो गया था उसमें शाह साह़ब का योगदान है। अल्लामा इक़बाल ने इसलामियात में शाह साह़ब से बहुत कुछ लाभ प्राप्त किया। अतः

अ़ल्लामा साह़ब आपका बहुत सम्मान करते थे।

तात्पर्य यह कि तफ़सीर व ह़दीस और फ़िक़ह की जितनी सेवा में अपनी मिसाल आप हैं। उच्चस्तरीय मसलों पर पुस्तकें लिखी। दरसे ह़दीस का अन्दाज़ह 'फ़ैज़ुल बारी' से किया जा सकता है जो सह़ीह़ बुख़ारी की तक़रीर है और अनेक जिल्दों में छपी है। विभिन्न इसलामी विषयों पर अ़रबी फ़ारसी उर्दू में एक दर्जन से अधिक पुस्तकें लिखीं।

तफ़सीर व ह़दीस, फ़िक़ह व अन्य उ़लूम के अ़लावह तसव्वुफ़ पर भी उन की दृष्टि बड़ी गहरी थी। मौलाना सय्यद सुलेमान नदवी ने शाह साह़ब की मृत्यु पर मआ़रिफ़ में लिखा थाः "उनकी मिसाल उस समन्दर कीसी थी जिसके ऊपर की सतह़ साकिन (ठहरी) लेकिन अन्दर की सतह मोतियों के बहुमूल्य ख़ज़ानों से भारी होती है। वह विशाल दृष्टि स्मरण शक्ति और कसरते हिफ़्ज़ से इस युग में बेमिसाल थे। ह़दीस के ज्ञान के ह़ाफ़िज़ और उ़लूमे अदब में बलन्द पाया, माक़ूलात में माहिर और ज़ोहद व तक़्वा में कामिल थे।"

मिस्र के मशहूर आ़लिम सय्यद रज़ा साह़ब देवबन्द तशरीफ़ लाये और शाह साह़ब से उन की मुलाक़ात हुई तो बे साख़्ता बार–बार कहते थे– "मैंने इस अज़ीम उस्ताज़ जैसा कोई आ़लिम नहीं देखा।"

ह़ज़रत थानवी ने नफ़ह़तुल अ़म्बर की प्रस्तावना में लिखा हैः "मेरे नज़दीक इसलाम की ह़क़्क़ानियत की बहुत सी दलीलों में से एक दलील ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह का वजूद भी है। अगर इसलाम में कोई कमी होती तो मौलाना अनवर शाह यक़ीनन इसलाम को छोड़ देते।"

ह़ज़रत शाह साह़ब की मृत्यु पर ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी ने शोक संदेश में कहा था– "मुझे अगर मिस्र व शाम का कोई आदमी पूछता कि क्या तुमने ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर अ़सक़लानी, शेख़ तक़ीउद्दीन बिन दक़ीकुल ईद और सुल्तानुल–उ़लमा शेख़ अ़जुद्दीन बिन अ़ब्दुस्सलाम को देखा है? तो मैं कह सकता था कि हां देखा है क्योंकि समय का अन्तर है। अगर शाह साह़ब भी छटी सातवीं सदी में होते तो इन विशेषताओं के ह़ामिल होने के कारण उन्ही मरतबा के होते।"

दारुल उ़लूम की यह ख़ुश क़िस्मती थी कि ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के बाद सदर मुदर्रसीन का काम आपके सपुर्द हुआ। आप के जमाने में

विद्यर्थियों के ज्ञान में बड़ा इन्क़लाब हुवा और अच्छे–अच्छे योग्य विद्यार्थी आप के दरस से लाभानवित हुए। मुल्की सियासत में शाह साहब अपने अपने उस्ताज़ शेखुल हिन्द के पैरोकार थे। हिन्दुस्तान के मुसलमानों में सही इस्लामी ज़िन्दगी पैदा करना उ़लमा का प्रथम कर्तव्य समझते थे।

ढाभेल में कुछ साल क़याम रहा। अन्त में मरज़ के कारण देवबन्द आगये थे। यहीं 3 सफ़र 1352 हि./27 मई 1933 ई. को 60 साल की उ़म्र में मृत्यु हो गयी। देवबन्द ईदगाह के पास मज़ार है।

मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ बिन्नौरी ने 'नफ़हतुल अ़म्बर' में शाह साहब के विस्तार से हालात लिखे हैं। यह किताब अ़रबी में है। दूसरी किताब 'हयाते अनवर' उर्दू में है। 'अल–अनवर' और 'नक़शे दवाम' में भी आप के हालात लिखे हैं।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी (1879–1957)

शैखुल इसलाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी बहुत प्रसिद्ध और उच्चकोटि के विद्वान, शैखे वक़्त और मुजाहिद आज़ादी थे। ह़ज़रत शेखुल हिन्द की मृत्यु के बाद सर्वसम्मति से आप को उन का अत्तराधिकारी माना गया। आपका ह़दीस का पढ़ाना विद्वता के आधार पर इस्लामी दुनिया में अपनी क़िस्म का अलग समझा जाता था। अतः उसकी प्रसिद्धि और आकर्षण साल बसाल विद्यार्थियों की बढ़ोतरी का कारण बना। ह़दीस शरीफ़ के सबक़ में आपके शिष्यों की संख्या का विस्तार होता गया। उप महाद्वीप का कोई कोना ऐसा नहीं है जहां आप के शागिर्द मौजूद न हों। जिस प्रकार आप ने संसार में दारुल उ़लूम को इस्लमी शिक्षा में महत्ता दी है इसी प्रकार आपकी महत्ता भी विशेष स्थान रखती थी।

ह़ज़रत मदनी का वतन मौज़ा अल्लाह दादपुर टांडा ज़िला फ़ैज़ाबाद है। 19 शव्वाल 1296 हि./5 अकतूबर 1879 ई. को पैदा हुए। आपके पिता का नाम सय्यद ह़बीबुल्लाह था। इ़ल्म व परहेज़गारी के लिह़ाज़ से सादात का यह परिवार हमेशा विशेष सम्मान और शाही ज़माने में एक बड़ी जागीर का मालिक था।

आरम्भिक शिक्षा प्राइमरी स्कूल में प्राप्त करने के बाद 14 साल की आयु में आप देवबन्द तशरीफ़ लाये। यहां ह़ज़रत शेखुल हिन्द ने विशेष प्यार मुह़ब्बत से आपकी शिक्षा दीक्षा फ़रमाई। दारुल उ़लूम के निसाब की शिक्षा प्राप्त करके जब अपने वतन तशरीफ़ लेगये तो पिता साह़ब हिजरत करके मदीने के लिये तैयारी कर चुके थे। आपभी मां–बाप के साथ चल दिये। चलने से पूर्व आप ह़ज़रत गंगोही से बैअ़त हो चुके थे। मक्का मुकर्रमा से लाभान्वित होने के पश्चात आप मदीना मुनव्वरह में पिता साह़ब के साथ स्थापित होगये। आपने हिन्दुस्तान से हिजरत का इरादह नही किया था फिर भी पिता के जीवन तक पिता को छोडकर

हिन्दुस्तान आना पसन्द नहीं किया।

मदीने में रहते समय लगभग दस साल तक मस्जिद नबवी में ह़दीस पढ़ाते रहे। तंगी और निर्धनता के बावजूद अल्लाह के भरोसे कार्य करते रहे। लगभग प्रति दिन बारह–बारह घंटे लगातार पढ़ाने का कार्य चलता रहता था। विभिन्न जमातें एक के बाद दूसरी उपस्थित होकर विद्या ग्रहण करती थीं। मस्जिद नब्वी में आपका ह़दीस पढ़ाना वहां के तमाम शेख़ों के ह़दीस पढ़ाने से अधिक पसन्द किया जाता था। इस प्रसिद्धी ने विभिन्न मुल्कों के विद्यार्थियों की एक बड़ी जमात इकट्ठी कर दी थी। ह़िजाज़ की पवित्र भूमि और ख़ास मस्जिदे नब्वी में एक हिन्दुस्तानी अ़ालिम की ओर इतनी आकर्षण का कारण आपके पढ़ाने की विशेषता समझी जाती थी जो आपको दारुल उ़लूम के अध्यापकों से प्राप्त हुई थी।

मदीना मुनव्वरह में रहते समय आप कई बार हिन्दुस्तान आये और इसी बीच ह़ज़रत गंगोही से ख़िलाफ़त प्राप्त की। 1911 ई. में लगभग एक साल देवबन्द में रहे और पढ़ाया। 1915 ई. में जब ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ह़िजाज़ तशरीफ़ लेगये तो आप के यहां ठहरे। आपही के द्वारा तुर्की के वज़ीरे जंग, अनवर पाशा और जमाल पाशा से मुलाक़ात करके अपनी इन्क़ालाबी स्कीम उनको बतलाई थी। जब अ़रबों ने तुर्की के ख़िलाफ़ बग़ावत की और शरीफ़ हुसैन ने ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द को गिरफ़तार करके अंग्रेज़ों के ह़वाले किया तो आप भी ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के साथ थे। अतः सवा तीन साल तक आप को भी मालटा में जंगी क़ैदी की भांति रहना पड़ा। 1920 ई. में जब मालटा से रिहाई हुई तो आप ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के साथ हिन्दुस्तान तशरीफ़ लाये।

मालटा से वापसी का युग ख़िलाफ़त आन्दोलन का आरम्भिक युग था। आप यहां पहुंच कर ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के नेतृत्व में सियासत में शरीक होगये। उस ज़माने में अपकी मुजाहिदाना क़ुर्बानियों ने मुसलमानों के दिलों को आपके प्यार से भर दिया था। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द की मृत्यु के बाद सर्वसम्मति से आप को उन का अत्तराधिकारी मान लिया गया। सियासी कामों में लगे रहने के कारण आप को काई बार कई–कई साल तक क़ैद में भी रहना पड़ा और देश की स्वतन्त्रता के लिये जेल भी काटनी पड़ी।

1927 ई. में ह़ज़रत कशमीरी ने दारुल उ़लूम से इस्तीफ़ा दे दिया तो आप के सिवा दारुल उ़लूम की जमात में कोई ऐसा व्यक्ति मौजूद न था जो दारुल उ़लूम के इस बड़े पद को संभाल सकता। इसलिये आपही को सदर मुदर्रसीन के पद पर लाया गया। आप की सदारत के समय विद्यार्थियों की संख्या दोगुनी से भी अधिक बढ़ गई थी। दौरह ह़दीस की जमात में तीन गुना बढ़ोतरी हुई। 1346 हि. से 1377 तक 32 साल में आप के सदर रहते 4483 विद्यार्थियों ने दौरह ह़दीस पूरा किया। जबकि आप से पहले तमाम विद्यार्थियों की संख्यां 275 है।

आपका दस्तरखान (भोज भण्डारा) बड़ा विस्तृत था, कम से कम दस पन्द्रह मेहमान आप के दस्तरखान पर अवश्य उपस्थि रहते थे।

12 जुमादस्सानिया 1377 ई./5 दिसम्बर 1957 ई. आपकी वफात हुई। ह़ज़रत मौलाना ज़करया साह़ब शेखुल ह़दीस मज़ाहिरुल उ़लूम सहारनपुर ने नमाज़ जनाज़ह पढ़ाई और क़ास्मी क़ब्रिस्तान में दफन किया गया।

ह़ज़रत मौलाना मदनी के जीवन के सम्बन्ध में खुद उन की स्वयं की आत्माकथा 'नक्शे ह़यात', अलजमीअत का शेख़ुल इस्लाम नम्बर और अनफ़ासे कुदसियह लेखक मफ़्ती अ़ज़ीज़ुर्रह़मान बिजनौरी की पुस्तक पढ़िये।

सदर मुदर्रसीन से सम्बंधित आवश्यक विस्तार

दारुल उ़लूम में ह़ज़रत मौलाना यअ़क़ूब नानौतवी (जो दारुल उ़लूम के सबसे पहले सदर मुदर्रिस थे) के समय से यह नियम चला आरहा था कि सह़ीह़ बुख़ारी का सबक़ सदर मुदर्रिस पढ़ाया करते थे। बाद में जब तअ़लीमात के कामों में काम का दबाव बढ़ा तो उनकी पूरी ज़िम्मेदारी भी सदर मुदर्रिस पर ही डाल दी गयी। ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी की मृत्यु के पश्चात बुख़ारी शरीफ़ का पढ़ाना और तअ़लीमी कामों की देख रेख दो भागों में बांट दिये गये। सदर मुदर्रसी और शिक्षा की देख रेख का काम मौलाना मुह़म्मद इब्राहीम बलयावी के ह़िस्से में आया और बुख़ारी का सबक़ मौलाना फ़ख़रूद्दीन अह़मद को सौंपा गया।

मजलिस-ए-शूरा के यह शब्द हैं: "मजलिसे शूरा ने इस

वास्तविकता को सामने रखते हुए कि शेख़ुल इसलाम ह़ज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी की मृत्यु के बाद दारुल उ़लूम के लिये ऐसा कामिल उच्च व्यक्तित्व वाला विद्वान नज़र नहीं आता इसलिये मजलिसे शूरा दारुल उ़लूम के शैक्षिक विभाग को महत्वपूर्ण बनाने के लिये सर्वसम्मिति से यह तैय करती है कि दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रसीन और नाज़िमे तअ़लीमात के पद पर ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इब्राहीम साह़ब को नियुक्त किया जाता है और ह़दीस शरीफ़ की महत्ता को सामने रखते हुए ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुधीन अह़मद साह़ब को शेख़ुल ह़दीस के पद पर नियुक्त किया जाता है।"

ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम बलियावी (1887–1967)

ह़ज़रत अ़ल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम बलियावी दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रसीन और ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के ख़ास शागिर्द थे।

1304 हि./1887 ई. में पूर्वी उत्तर प्रदेश के शहर बलिया में एक इ़ल्मी घराने में जनमे। इन का परिवार पंजाब के ज़िला झंग से जौनपुर आया, फिर कुछ दिनों बाद बलिया में आबाद हो गया। जौनपुर में फ़ारसी अ़रबी की आरम्भिक शिक्षा मशहूर ह़कीम मौलाना जमीलुद्दीन नगीनवी से प्राप्त की और मअ़कूलात की किताबें मौलाना फ़ारूक़ अह़मद चरयाकोटी और मौलाना हिदायतुल्लाह ख़ान (शिष्य मौलाना फ़ज़्ले ह़क़ ख़ैराबादी) से पढ़ीं। दीनयात की तअ़लीम के लिये मौलाना अ़ब्दुल ग़ुफ़्फ़ार के पास गये जो ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही के शागिर्द थे। 1325 हि. में दारुल उ़लूम में दाख़िल होकर हिदायह और जलालैन की किताबें बढ़ीं और 1327/1909 में दारुल उ़लूम से फ़ारिग़ हो गये।

शिक्षा प्रप्ति के बाद उसी साल मदरसा आ़लियह फ़तेह़पुरी में अध्यापक बनाये गये। फिर उ़मरी ज़िला मुरादाबाद के मदरसे में कुछ दिनों तक पढ़ाया 1331 हि. में आपको दारुल उ़लूम में बुला लिया गया। 1340 हि. से 1344 हि. तक मदरसा दारुल उ़लूम मऊ और मदरसा इमदादियह दरभंगा में सदर मुदर्रिस की ख़िदमत अंजाम दीं। 1344 हि. में फिर आपको दारुल उ़लूम देवबन्द में बुला लिया गया। 1333 हि. की रूदाद में आप का वर्णन इस प्रकार है: "मोलवी मुह़म्मद इब्राहीम साह़ब तमाम विषयों में पारंगत हैं। माक़ूल व फ़लसफ़े की तमाम किताबें भली प्रकार पढ़ा सकते हैं। ⌟ह्न विद्यार्थियों का बहुत अधिक झुकाव उन की ओर रहता है। अच्छा लेक्चर देते हैं। तात्पर्य यह कि एक क़ाबिले क़दर और प्रसिद्धी प्राप्त करने वाले अध्यापक हैं।"

1362 हि. में फिर दारुल उ़लूम से अलग हो कर पहले जामिआ़

इस्लामीयह ढाबेल में सदर मुदर्रिस बने वहां के बाद कुछ समय तक मदरसा आ़लियह फ़तेह़पुरी में सदर मुदर्रिस रहे। इसके बाद बंगाल में हाटहज़ारी जिला चाटगाम के मदसा में सदर मुदर्रिस रहे। और अंत में 1366 हि. में फिर दारुल उ़लूम देवबन्द में आगये। 1377 हि./1957 ई. में ह़ज़रत मौलाना मदनी की मृत्यु के पश्चात आप दारुल उ़लूम के सदर मुदर्रिस बना दिये गये। अन्त तक इसी पद पर रहे। इन के शागिर्दों की संख्या हज़ारों से भी अधिक है।

ह़ज़रत अ़ल्लामा इब्राहीम बलयावी प्रत्येक विषय विशेष रूप से इ़ल्मे कलाम और अ़क़ाइद में प्रवीण थे। उन्होंने तफ़सीर व ह़दीस, अ़क़ाइद, कलाम और दूसरे विषयों को शानदार रूप से पढ़ाया। उन के पढ़ाने की मुद्दत 1327 से 1387 हि. तक 60 साल तक होती है। विद्यार्थी उनकी कक्षा में बड़े चाव से उपस्थित होते और उनसे लाभ प्राप्त करते थे। कक्षा के सबक़ संक्षिप्प और विद्वतापूर्ण होते थे। पढ़ाने का अन्दाज़ बड़ा प्रभावपूण होता था लेकिन इसके साथ—साथ लतीफ़ों से बड़े संजीदह अंदाज़ में मसलों को ह़ल कर दिया जाता था। क़िस्से मसलों पर इस प्रकार लागू कर देते थे कि मसले के सभी पक्ष स्पष्ट हो जाते थे।

उनके सबक़ की एक और विशेषता होती थी कि विद्यार्थियों को विषय से काफ़ी गहरा लगाव हो जाता था। तथा उन पर ज्ञान के दरवाज़े खुल जाते थे। वह अपने समय में अ़क़ाइद, कलाम, व मंतिक़ के बेनज़ीर विद्वान थे। ह़दीस में रिवायत से अधिक दिरायत से काम लेते थे। ह़ज़रत नानौतवी के इ़ल्म पर गहरी नज़र थी। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के शागिर्द होने के साथ—साथ उनसे बैअ़त भी थे।

अ़ल्लामह बलियावी की पुस्तकों में रिसाला मुसाफ़हा और रिसाला तरावीह़ उर्दू में हैं। एक रिसाला अनवारुल ह़िकमत फ़ारसी में है। यह रिसाला मंतिक़ व फ़लसफ़ा के विषयों पर आधारित है। सुल्लमुल उ़लूम पर उन का ह़ाशियह अ़रबी में ज़ियाउन्नुजूम है। मेबज़ी और ख़्याली पर भी उन्होंने फुट नोट लिखे थे जो नष्ट होगये। अन्त में तिरमिज़ी शरीफ़ पर ह़ाशिया लिख रहे थे जो पूरा न हो सका।

24 रमज़ान 1387 हि./25 दियम्बर 1967 ई. को 84 साल की उमर में मृत्यु हुई। क़ासमी क़ब्रिस्तान में दफ़नाये गये।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन अह़मद (1889–1972)

आप का जन्म स्थान हापुड़ है। आप के पूर्वजों में सय्यद कुतब और सय्यद आ़लम अपने दूसरे दो भाईयों के साथ शाहजहां के समय में हिरात से दिल्ली आये। यह ह़ज़रात अपने समय के उच्चकोटि के विद्वानों में से थे। शाहजहां ने उनके पढ़ाने के लिये हापुड़ में एक मदरसा बनाकर दिया। सय्यद आ़लम का सिलसिला 26 पुश्तों से ह़ज़रत हुसैन (र.अ.) से मिल जाता है।

1889 ई. में आपका जन्म अजमेर में हुआ। आप के दादा सय्यद अ़ब्दुल करीम पुलिस विभाग में थानेदार थे। चार साल की उम्र में शिक्षा आरम्भ हुई। कुरआन शरीफ़ पिता साह़ब से पढ़ा। फ़ारसी की तालीम अपने ख़ानदान के बुज़ुर्गों से प्राप्त की। उ़मर के बारहवें साल अपने ख़ानदानी बुज़ुर्ग और आ़लिम मौलाना ख़ालिद साह़ब से अ़रबी सर्फ़ व नह़व शुरू किया। इसी बीच आपकी माता को अपने पूर्वजों के मदरसे को ज़िन्दा करने का ख़्याल आया जो 1857 ई. में नष्ट हो गया था। कुछ दिन उस में शिक्षा प्राप्त करने के बाद आप को गुलावठी के मदरसा मम्बउ़ल उ़लूम में भेज दिया गया। वहां मौलाना माजिद अ़ली से विभिन्न पुस्तकें पढ़ीं। इस के बाद अपने उस्ताद मौलाना माजिद अ़ली के साथ दिल्ली चले गये। दिल्ली के मदरसे में माक़ूलात की किताबें पढ़ीं।

1326 हि./1908 ई. में दारुल उ़लूम आये। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द ने प्रवेश परीक्षा ली। इम्तिह़ान में ऊँचे नम्बरों से पास हुए। ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द के निर्देशों के मुताबिक़ एक साल के बजाये दो साल में दौरह ह़दीस पास किया। दारुल उ़लूम के विद्यार्थी जीवन में ही विद्यार्थियों को मअ़क़ूलात की किताबें पढ़ाने लगे थे।

1910 ई. में शिक्षा प्राप्त करने के बाद दारुल उ़लूम में अध्यापक हो गये। मगर कुछ समय के बाद दारुल उ़लूम के ज़िम्मेदारों ने आपको मदरसा शाही में भेज दिया जहां लग भाग 48 साल रहे। इस आधी सदी

में बहुत से विद्यार्थियों ने आप से ह़दीस शरीफ़ पढ़ी।

1957 ई. में ह़ज़रत मौलाना मदनी की मृत्यु के पश्चात दारुल उ़लूम की मजलिस–ए–शूरा के मेम्बरों ने दारुल उ़लूम देवबन्द के लिये आप का चुनाव किया। ह़ज़रत मौलाना मदनी ने अपनी बीमारी के समय मुरादाबाद से बुला कर अपने स्थान पर बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाने पर नियुक्त किया था। इससे पहले भी दो बार ह़ज़रत मदनी की गिरफ़्तारी और छुट्टी के समय आप दारुल उ़लूम में बुख़ारी पढ़ा चुके थे। 1970 ई. में पोने तीन सौ विद्यार्थी आप के ह़दीस के सबक़ में सम्मिलित थे। लगभग प्रति वर्ष इतने ही विद्यार्थी आप के सबक़ में रहते थे।

मौलाना फ़ख़रुद्दीन साह़ब चूंकि ह़ज़रत शेख़ुल हिन्द और ह़ज़रत मौलाना अनवर शाह कशमीरी के विशिष्ट शागिर्द थे इस लिये आप के ह़दीस पढ़ाने के तरीक़े में दोनों का मेल पाया जाता है। आपका बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाना बड़े विस्तार से होता था जिस में ह़दीस के तमाम पक्षों पर प्रकाश डाला जाता था। फ़ुक़हा के मज़हब को बयान करने के बाद, अह़नाफ़ के फ़िक़ही मसलक के पक्ष विपक्ष की स्पष्टता में ऐसी दलीलें पेश करते थे जिनके बाद सुनने वाले के मन में कोई शंका नहीं रह पाती थी। सबक़ के बीच में सह़ीह़ बुख़ारी की विभिन्न ख़ुलासे के साथ–साथ अपने उस्तादों के कथन को भी स्थान–स्थान पर बयान करते थे। ह़दीस के सबक़ में आपका लेक्चर विस्तार से होने के साथ–साथ आसान भी होता था। इसलिये कम बुद्धि विद्यार्थी भी पूरा–पूरा लाभ उठा लेते थे। आप के बुख़ारी शरीफ़ के पढ़ाने को प्रसिद्धी थी कि आप इस क्षेत्र में विशिष्ट माने जाते थे विद्यार्थी उनसे पढ़ना सौभाग्य समझते थे।

देश की राजनीति से आपको तअ़ल्लुक़ रहा। इस के परिणाम स्वरूप जेल की कठिनाइयां भी झेली। ह़ज़रत मौलाना मदनी की जमीअ़त उ़लमा–ए–हिन्द की अध्यक्षता के समय में दो बार नायब सदर रहे और इसके बाद सदर बने और मृत्यु तक जमीअ़त उ़लमा–ए–हिन्द के सदर रहे।

अन्त में जब स्वास्थ्य ने जवाब दे दिया तो इ़लाज के लिये मुरादाबाद ले जाये गये। मुरादाबाद में कुछ दिन बीमार रह कर 15 अप्रेल 1972 ई. को आधी रात के बाद इन्तिक़ाल फ़रमाया। ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब पूर्व मोहतमिम देवबन्द ने जनाज़े की नमाज़

पढ़ाई, बाद में मुरादाबाद में दफ़न किये गये।

दारुल उ़लूम देवबन्द में सही़ बुख़ारी के सबक़ का यह अ़ज़ीम पद लगभग 60 साल से ह़ज़रत शेखुल हिन्द के शागिर्दों में लगातार चला आरहा था। ह़ज़रत मौलाना फ़ख़रुघीन अह़मद के बाद यह सिलसिला समाप्त हो गया।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुल ह़सन साह़ब (1910–1991)

10 रजब 1323 हि./8 सितम्बर 1905 को अपने पूर्वजों के वतन उ़मरी ज़िला मुरादाबाद में पैदा हुए। क़ुरआन शरीफ़ उर्दू, दीनियात और आरम्भिक फ़ारसी की शिक्षा ह़ाफ़िज़ नसीमुद्दीन और ह़ाफ़िज़ अब्दुल क़ादिर अमरोहवी से प्राप्त की। आपके पिता मदरसा शाही मुरादाबाद में कुतबख़ाने के नाज़िम थे। इसलिये लगभग 1335 हि. में मदरसा शाही मुरादाबाद में दाख़िल हो गये। यहां फ़ारसी पढ़ी अगली कुछ किताबें अपने पिता से पढ़ीं, फिर मज़ाहिर उ़लूम सहारनपुर में दाखिला लिया। 1343 हि. को दारुल उ़लूम में दाखिल हुए और 1347 हि. में दौरह पढ़ा और शिक्षा पूरी करली।

शिक्षा प्राप्ति के बाद मदरसा आ़लियह फ़तेहपुरी में अध्यापक हुए। फिर वहां से आप बिहार चले गये और मदरसा शम्सुल हुदा पटना में अध्यापक हो गये। मगर डेढ़ साल के बाद फिर मदरसा आ़लियह फ़तेह़पुरी में वापस आ गये और सह़ीह़ मुस्लिम तथा दूसरी किताबें पढ़ाने लगे।

1362/1943 में आपकी नियुक्ति दारुल उ़लूम देवबन्द में होगयी। आपके सबक़ में सह़ीह़ मुस्लिम और तफ़्सीर बेज़ावी को विशेष प्रसिद्धी मिली। अतः बेज़ावी आपकी दरसी तक़रीर 'तफ़्सीरुल ह़ावी' प्रकाशित होकर बड़ी स्वीकार्य हो चुकी है। भाषण देने में भी महारत थी।

ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन अह़मद के ज़माने में ही आाप नायब सदर मुदर्रिस नियुक्त हुए। 1392 हि./1972 ई. को ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन अह़मद की मृत्यु के बाद आपको दारुल उ़लूम का सदर मुदर्रिस बनाया गया जिस पर आप मृत्यु समय तक क़ायम रहे। ह़ज़रत शाह अ़ब्दुल क़ादिर साह़ब रायपुरी से आपको इजाज़त व ख़िलाफ़त प्राप्त थी।

1401 हि./1981 ई. में आपकी मृत्यु हुई।

ह़ज़रत मौलाना शरीफ़ हसन साह़ब देवबन्दी (1920–1977)

ह़ज़रत मौलाना शरीफ़ हसन साह़ब देवबन्दी दारुल उ़लूम के शैखुल ह़दीस थे। आप देवबन्द के रहने वाले थे। 4 ज़ुलहिज्ज 1338 हि./19 अगस्त 1920 ई. को देवबन्द में जन्मे। यहीं हाफ़िज़ अब्दुल ख़ालिक़ से कुरान हिफ़्ज़ किया, फिर तीन साल तक फारसी और अ़रबी की आरम्भिक पुस्तकें बेहट जिला सहारनपुर के मदरसे में रह कर पढीं। इसके बाद दारुल उ़लूम में दाखिला लेकर 1358 हि./1939 ई. में शिक्षा पूर्ण की।

शिक्षा पूर्ण करने के बाद शव्वाल 1360 हि./1941 ई. में मदरसा इमदादुल उ़लूम ख़ानक़ाह थानाभवन में मुख्य अध्यापक बने। आपको ह़दीस और इफ़्ता से ख़ास लगाव था। 1364 हि. में मदरसा इशातुल उ़लूम बरेली में सदर मुदर्रिस बने। आपका पूरा जीवन पठन–पाठन में गुज़रा। नौ साल बाद डाभेल गुजरात में शैखुल ह़दीस नियुक्त हुए। इस मदरसे में बुख़ारी और तिरमिज़ी शरीफ़ पढाई।

1393 हि./1963 ई. में आपको दारुल उ़लूम देवबन्द में बुलाया गया। आपको इल्म ह़दीस से काफी लगाव था। मौलाना फ़ख़रूद्दीन अह़मद के बाद बुख़ारी शरीफ़ पढाना आरम्भ किया। मृत्यु से चन्द घन्टे पहले भी आप पढाने में लगे रहे। मौलाना शरीफ़ हुसैन साह़ब बुजुर्गों की यादगार थे। प्रत्येक छोटे बडे से प्रसन्नता से मिलते थे। 14 या 15 जुमादस्सानी 1397 हि./जून 1977 ई. में लगभग 58 वर्ष की आयु में हार्ट अटैक हो जाने से कुछ ही घन्टों की बीमारी के बाद आपकी मृत्यु हो गई। क़ास्मी क़ब्रिस्तान में आपको दफ़नाया गया।

ह़ज़रत मौलाना मेअ़राजुल ह़क़ देवबन्दी (1910–1991)

ह़ज़रत मौलाना मैराजुल हक़ साह़ब देवबन्दी दारुल उ़लूम के नायब मोहतमिम, सदर मुदर्रिस और योग्य उस्ताद थे। शैक्षिक और इंतज़ामी सलाहियतों (प्रबन्धन) में बहुत माहिर थे। आप लगभग 40 साल तक दारुल उ़लूम देवबन्द की सेवा करते रहे।

1328 हि./1910 ई. में देवबन्द में जन्मे। आपकी अच्छी तरबियत हुई आपके पिता मुंशी नूरूल हक़ साह़ब बडे दीनदार थे। आपने एक होनहार विद्यार्थी की हैसियत से दारुल उ़लूम में शिक्षा ग्रहण की। 1351 हि. में दारुल उ़लूम से फ़राग़त हासिल की और अपने गुरूजनों के सुझाव से हैदराबाद दक्षिण के गुलबर्गा शहर में स्थित एक मदरसे में अध्यापक बनकर चले गये। आपने वहां अपनी बौद्धिक योग्यता प्रयोग करते हुए अपने अध्यापन में बड़ा कमाल पैदा किया। तथा एक सफल अध्यापक के रूप में उभर कर सामने आये।

दारुल उ़लूम देवबन्द के प्रबन्धन ने आपकी योग्यता पहचानकर आपको दारुल उ़लूम में बुला लिया। 1363 हिजरी से आप दारुल उ़लूम में उस्ताद बन गये। हिदाया आख़रैन का आपका सबक़ काफ़ी मक़बूल रहा। आपके अन्दर इंतज़ामी (प्रबंधन) गुण भरे हुए थे। एक लम्बे समय तक आप नाज़िम दारुल इक़ामा (हास्टल इंचार्ज) रहे और विद्यार्थियों की ज़रूरी बातों को पूरा किया। हालांकि आप बडे शान्त स्वभाव के थे लेकिन छात्रों पर आपका बडा रौब रहता था। बच्चे आपका बहुत सम्मान करते थे।

आपके कामों को देखकर 11 शव्वाल 1386 हिजरी को मौलाना बशीर अह़मद साह़ब की मृत्यु के बाद आपको मजलिस–ए–शूरा ने उप मोहतमिम बनाया। आप ने ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब की नयाबत का भरपूर हक़ अदा किया। आप के कार्य प्रणाली से दारुल उ़लूम की शूरा के मेम्बर बड़े प्रभावित हुए और 1401 हि. में आप को सदर

मुदर्रसीन के पद पर नियुक्त कर दया। आप जीवन के अन्तिम क्षणों तक इस पद पर क़ायम रहे।

यह आपके चरित्र का गुण था कि आप दारुल उ़लूम में शिक्षा के साथ–साथ इंतज़ामी कामों को पूरा करते रहे। आप एक अल्लाहवाले बुजुर्ग थे। आपकी ज़ात से कभी किसी को हानि नहीं पहुंची। आप हमेशा दूसरों के काम आते थे। छात्रों के मसलों में आपको हमेशा दिलचस्पी रहती थी।

जीवन को 83 बहारें देखने के बाद आप 6 स़फ़र 1412 हि./16 अगस्त 1991 ई. को आपकी मृत्यु हो गई। आपको क़ब्रिस्तान क़ासमी में दफ़नाया गया।

ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी
(1919–2010)

ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब बुलन्दशहरी दारुल उ़लूम के शेखुल ह़दीस और सदर मुदर्रिस थे। आपने दारुल उ़लूम में छह दशकों से अधिक अध्यापन कार्य किया है और लगभग 32 साल तक बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाई है। इस बीच लगभग बीस हज़ार छात्रों ने आपसे बुख़ारी का दर्स लिया। आपके ह़दीस के दर्स को काफ़ी मक़बूलियत थी। स्वभाव में सादगी और विनम्रता थी। आपका अन्दर और बाहर का एक ही रूप था।

21 जुमादल उला 1337 हि./22 जनवरी 1919 ई. को ज़िला बुलन्दशहर में पैदा हुए। कुरआन मजीद हिफ़्ज़ करने के बाद फ़ारसी और अ़रबी की विभिन्न पुस्तकें मदरसा मम्बउल उ़लूम गुलावठी ज़िला बुलन्दशहर में पढ़ीं। दारुल उ़लूम देवबन्द में 1362 हि./1942 ई. में दौरा ह़दीस में दाख़िला लिया। आपकी शिक्षा और तरबियत में आपके बड़े भाई मौलाना बशीर अह़मद ख़ान साह़ब का बडा योगदान रहा है जो आपसे पहले मदरसा मम्बउल उ़लूम गुलावठी और बाद में दारुल उ़लूम देवबन्द में उस्ताद बने। उन दिनों स्वतन्त्रता के आन्दोलन के कारण शैखुल इस्लाम ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी नैनी जेल में क़ैद थे। इसलिये इस साल बुख़ारी और तिर्मिज़ी शरीफ़ शैखुल अदब ह़ज़रत मौलाना ऐजाज़ अली साह़ब से पढ़ी थी। मगर ह़ज़रत मदनी से लाभ प्राप्त करने की इच्छा थी। इसलिये अगले साल 1363 हिजरी में फिर ह़ज़रत मदनी से बुख़ारी और तिर्मिज़ी शरीफ़ पढ़ी। अपनी क़ाबलियत बढ़ाने के लिये दूसरी विधाओं (विषयों) की किताबें भी पढ़ीं और तजवीद (क़िरअत) की शिक्षा प्राप्त की।

ज़ुलहिज 1365 हि./1946 ई. में इब्तदाई अध्यापक की हैसियत से आपका तक़र्रुर हुआ। आपने बिल्कुल आरम्भिक पुस्तकें पढ़ानी शुरू कीं। आप बड़ी लगन से पढाते थे। आपका कार्य हमेशा उत्तम रहता था।

कुछ पुस्तकों के पढाने में बड़ी मक़्बूलियत मिली। मक़ामात हरीरी, मेबज़ी, शरह जामी, जलालैन शरीफ़, अलफ़ौज़ुल कबीर और मिशकात शरीफ़ आदि पुस्तकें आपने काफ़ी समय तक पढ़ाईं। इल्म हैयत का सबक़ भी आपके पास रहा। निहायत मेहनत, परिश्रम और लगन के कारण आप आरम्भिक दर्जे से तरक़्क़ी करते हुए ऊँचे दर्जे तक पहुंच गये। 1391 हिजरी में दौरा ह़दीस की पुस्तकें भी पढ़ाने लगे। 1391 हिजरी से 1397 हिजरी तक आप तहावी शरीफ़, मुस्लिम शरीफ जिल्द सानी, मोअत्ता इमाम मालिक पढ़ाते रहे।

1397 हिजरी में दारुल उ़लूम के शैखुल ह़दीस ह़ज़रत मौलाना शरीफ़ुल हसन साह़ब देवबन्दी की वफ़ात के बाद आप बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाने लगे। इसके बाद आप लगातार बुख़ारी शरीफ़ पढ़ाते रहे। एक साल बुख़ारी की दानों जिल्दें पढ़ाईं, इसके बाद हमेशा पहली जिल्द पढ़ाते रहे। आपके अन्दर इल्मी और इन्तज़ामी दोनों योग्यतायें पाई जाती थीं। पढ़ाने के साथ–साथ इन्तज़ामी काम भी आपने भली–भांति निभाया। काफ़ी दिनों तक आप हास्टल इंचार्ज रहे। सफ़र 1391 हि. को मजलिस–ए–शूरा ने आपको दारुल उ़लूम देवबन्द का नायब मोहतमिम बना दिया। ह़ज़रत मौलाना मेराजुल हक़ देवबन्दी के बाद 1412 हि. में आप सदर मुदर्रिस बनाए गये।

1429 हिजरी में विभिन्न बीमारियों के कारण अध्यापन से त्याग पत्र दे दिया। 1391 हिजरी से 1429 हिजरी तक लगभग 40 सालों तक आप ह़दीस पढ़ाते रहे।

ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान स्वभाव से बडे नेक और शरीफ़ थे। बुज़ुर्गों की यादगार और उन का नमूना थे। आप बेहतरीन उस्ताद और आलिम भी थे। आपके स्वभाव का एक बड़ा गुण यह था कि तवाज़ो, रहमदिली, ख़ैर ख़्वाही और मुहब्बत जैसे गुण आपमें कूट–कूट कर भरे थे। आपके यहां छोटा भी छोटा नहीं था। सबका बराबर सम्मान करते थे। आपके द्वारा किसी को तकलीफ़ नहीं पहुंचती थी। नमाज़ बड़े इत्मीनान से पढ़ते थे। देखने वाला यह समझता था कि इससे अच्छी नमाज़ नहीं हो सकती। अंतरात्मा भी गुणों से भरपूर थी। आपकी आवाज़ बुलन्द मगर आकर्षक थी। बात करने का ढंग सरल और लुभावना था।

ह़ज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अह़मद मदनी से आप

आत्मिक लगाव था। आपको हकीमुल इस्लाम ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब से बैअ़त व ख़िलाफ़त प्राप्त थी।

आपने 96 वर्ष की लम्बी आयु पाई। लगभग पैंसठ साल दारुल उ़लूम में अध्यापक रहे। 1429 हिजरी में विभिन्न बीमारियों के कारण दर्स और मदरसे की हाज़िरी से विवश हो गये।

19 सफ़र 1431 हि./4 फरवरी 2010 ई. बृहस्पतिवार की रात में आपकी मृत्यु हुई। अगले दिन आपको क़ासमी क़ब्रिस्तान में दफ़ना दिया गया।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती सईद अह़मद पालनपूरी

(जन्मः 1362 हि./1942 ई.)

ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती सईद अह़मद साह़ब पालनपूरी दारुल उ़लूम देवबन्द के र्वतमान सदर मुदर्रिस और शैख़ुल ह़दीस हैं। आप ह़दीस के मशहूर विद्वान, मुफती, कामयाब उसताद और अनेक अहम किताबों के लेखक हैं।

मौलाना मुफ़ती सईद अह़मद साह़ब पालनपूरी 1362 हि./1942 ई. में पैदा हुए। आप का वतन 'कालेड़ह' ज़िला बनास कांठा (गुजरात) है। आप पालनपूरी की निसबत से मशहूर हुए जो आप के घर से 30 मील दूरी पर है।

आप ने अपने पिता जनाब मुह़म्मद यूसुफ़ साह़ब से शिक्षा आरम्भ की, फिर आप ने प्रारम्भिक शिक्षा के लिये गांव के मकतब में दाखिला लिया। उस के बाद दारुल उ़लूम छापी में प्रवेश लिया जहां अपने मांमू मौलाना अबदुर्रह़मान साह़ब की निगरानी में पढ़ते रहे। फिर पालनपूर में मौलाना नज़ीर अह़मद साह़ब के मदरसे में दाखिल हुए और चार साल तक वहीं पढ़ते रहे। 1377 हि./1958 ई. में मज़ाहिर उ़लूम सहारनपूर में प्रवेश लिया। तीन साल के बाद 1380 हि./1961 ई. में दारुल उ़लूम देवबन्द आ गए और 1382 हि./1963 ई. में दौरा हदीस पूरा किया। सालाना परीक्षा में प्रथम आये। फिर एक साल तक दारुल इफ़ता में ऐक साल तक फ़तवा लिखने की मश्क़ की।

शिक्षा पूरी करने के बाद 1384 हि./1965 ई. में दारुल उ़लूम अशरफ़िया रांदेर ज़िला सूरत (गुजरात) में उच्च श्रेणी उसताद नियुक्त हुए और वहां 1393 हि./1973 ई. तक अध्यापक रहे।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती सईद अह़मद साह़ब को ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी की कोशिश से 1393 हि./1973 ई. में दारुल उ़लूम देवबन्द में नियुक्त किया गया। उस वक़्त से लेकर आज तक

सेवाएं अंजाम दे रहे हैं।

हज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब दारुल उ़लूम देवबन्द में तफ़सीर, हदीस आदि पुस्तकें पढ़ाईं। आप ह़दीस के मशहूर विद्वान, बड़े मुफती और कामयाब उसताद माने जाते हैं।

1429 हिजरी/2008 ई. में जब ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान साह़ब बुलन्दशहरी विभिन्न बीमारियों के कारण मदरसे की हाज़िरी से विवश हो गये तो मजलिस–ए–शूरा (5 शाबान 1429/अगस्त 2008) में आप को सदर मुदर्रिस और शैख़ुल ह़दीस का पद सोंपा गया।

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपूरी अनेक अहम किताबों के लेखक भी हैं। आप ने तफ़सीर, हदीस आदि विषयों पर तीन दर्जन से अधिक छोटी बड़ी किताबें लिखीं। आप की कुछ मशहूर और अहम किताबों के नाम यह हैं –

(1) रह़मतुल्लाह अल–वासिअ़ह शरह़ हुज्जतुल्लाह अल–बालिफ़ह
(2) तोह़फ़तुल क़ारी शरह सह़ीह़ बुख़ारी
(3) तोह़फ़तुल अलमई शरह तिरमिज़ी
(4) अल अवनुल कबीर शरह अल–फौज़ुल कबीर
(5) हिदायतुत क़ुरआन तक्मीलह
(6) फ़ैज़ुल मुनइम शरह़ मुक़द्दिमाए मुस्लिम
(7) ह़वाशी इमदादुल फ़तावा
(8) मबादियुल फ़लसफ़ा
(9) तोह़फ़तुद्दुरर शरह नुखबतुलफ़िकर
(10) आप फ़तवा कैसे दें?

दारुल उ़लूम के उलमा
एक नज़र में

दारुल उ़लूम के संस्थापक

क्र.	नाम	जन्म–मृत्यु
1	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी	1832–1880
2	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब	1835–1913
3	ह़ज़रत मौलाना महताब अली देवबन्दी	मृत्यु 1887
4	ह़ज़रत मौलाना ज़ुलफ़िक़ार अली देवबन्दी	1822–1905
5	ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान देवबन्दी	1832–1907
6	ह़ज़रत मुंशी फ़ज़्ल हक़	
7	ह़ज़रत शेख़ निहाल अह़मद	मृत्यु 1887

दारुल उ़लूम के सरपरस्त (संरक्षक)

क्र.	सरपरस्त का नाम	जन्म–मृत्यु
1	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी	1832–1880
2	ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही	1827–1905
3	शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन देवबन्दी	1851–1920
4	ह़ज़रत मौलाना अबदुर्रहीम रायपूरी	0000–1919
5	ह़ज़रत मौलाना अश्रफ़ अली थानवी	1863–1943

मजलिस–ए–शूरा के सदस्य

क्र.	सदस्य का नाम	कब से–कब तक
1	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब	1866–1892
2	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी	1866–1880

3	ह़ज़रत मौलाना महताब अली देवबन्दी	1866–1887
4	ह़ज़रत मौलाना ज़ुलफ़िक़ार अली देवबन्दी	1866–1903
5	ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुर्रहमान देवबन्दी	1866–1905
6	ह़ज़रत मुंशी फ़ज़्ल हक़ देवबन्दी	1866–1893
7	ह़ज़रत शैख़ निहाल अह़मद देवबन्दी	1866–1887
8	ह़ज़रत हकीम मुशताक़ अह़मद साह़ब	1881–1891
9	ह़ज़रत मौलाना रशीद अह़मद गंगोही	1881–1905
10	ह़ज़रत हकीम ज़ियाउद्दीन साह़ब, रामपूर	1888–1894
11	ह़ज़रत शैख़ ज़हूरुद्दीन साह़ब, देवबन्द	1894–1905
12	ह़ज़रत मौलाना अह़मद ह़सन साह़ब, अमरोहा	1895–1911
13	ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी मुहि़उद्दीन साह़ब, मुरादाबाद	1895–1928
14	ह़ज़रत मौलाना मु. अ़बदुलह़क़ साह़ब पूरक़ाज़ी	1895–1923
15	ह़ज़रत शाह मज़हर हुसैन साह़ब गंगोही	1895–1920
16	ह़ज़रत हकीम मु. इसमाईल साह़ब, रामपूर	1895–1923
17	ह़ज़रत शाह सईद अह़मद साह़ब अमबेथवी	1895–1921
18	ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अ़ली थानवी	1903–1935
19	ह़ज़रत मौलाना अबदुर्रहीम रायपूरी	1903–1921
20	ह़ज़रत हाफ़िज़ हकीम अह़मद साह़ब, देवबन्द	1903–1923
21	ह़ज़रत खलीफ़ा अह़मद ह़सन साह़ब, देवबन्द	1905–1910
22	ह़ज़रत हाफ़िज़ दाद इलाही साह़ब, देवबन्द	1905–1906
23	ह़ज़रत मुंशी मज़हर ह़सन साह़ब, देवबन्द	1905–1931
24	ह़ज़रत मुंशी फ़रागत अली साह़ब, देवबन्द	1905–1910
25	ह़ज़रत शैख़ मु. हुसैन साह़ब, देवबन्द	1905–1906
26	ह़ज़रत मौलाना हकीम मसूद अह़मद गंगोही	1906–1931
27	ह़ज़रत मौलाना सईदुद्दीन साह़ब रामपूरी, भोपाल	1906–1928
28	ह़ज़रत मौलाना ज़हूर अ़ली अह़मद पूरक़ाज़ी, भोपाल	1906–1928
29	ह़ज़रत शैख़ ह़बीबुर्रह़मान साह़ब, देवबन्द	1906–1907
30	ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी मुह़म्मद ह़सन साह़ब, भोपाल	1912–1946
31	ह़ज़रत ह़ाजी हाफ़िज़ फसीहुद्दीन साह़ब, मेरथ	1925–1925

32	हज़रत मौलाना हकीम जमीलुद्दीन, नगीना बिजनोर	1925–1935
33	हज़रत हकीम मु. इसहाक़, किठोर मेरथ	1925–1954
34	हज़रत मौलाना हकीम मशीयतुल्लाह साहब, बिजनोर	1925–1953
35	हज़रत मौलाना अबदुर्रहमान साहब, सेवहारा बिजनोर	1925–1931
36	हज़रत मौलाना हकीम मु. अशफ़ाक़ साहब राएपूरी	1925–1948
37	हज़रत मौलाना हकीम रज़ीयुल हसन साहब कांधलवी	1926–1930
38	हज़रत हाजी शैख़ रशीद अहमद साहब, मेरथ	1926–1952
39	हज़रत मौलाना कारी मुहम्मद तय्यब साहब, मोहतमिम	1929–1981
40	हज़रत मौलाना मनाज़िर अहसन गीलानी साहब	1931–1948
41	हज़रत मौलाना हकीम मक़सूद अ़ली जंग, हैदराबाद	1931–1961
42	हज़रत मौलाना मुहम्मद सादिक़ साहब, कराची	1931–1948
43	हज़रत मौलाना हकीम सईद अहमद साहब गंगोही	1931–1940
44	हज़रत मौलाना मुहम्मद सहूल साहब भागलपूरी	1931–1943
45	हज़रत खवाजा फीरोज़ुद्दीन साहब, रियासत कपूरथल्ला	1931–1943
46	हज़रत मौलाना मुहम्मद फ़ज़्लुल्लाह साहब, मद्रास	1931–1933
47	हज़रत मौलाना अ़बदुर्रहमान ख़ान साहब, बुलंदशहर	1931–1940
48	हज़रत मौलाना सईद अहमद साहब, हाटहज़ारी	1931–1948
49	हज़रत मौलाना शाह रहमत अ़ली साहब, जालंधर	1931–1932
50	हज़रत मौ. हाफ़िज़ महमूद रामपूरी, रियासत राजपूताना	1932–1940
51	हज़रत मौलाना मुहम्मद शफ़ी साहब देवबन्दी	1932–1933
52	हज़रत मौलाना मुहम्मद इलयास साहब कांधलवी	1932–1934
53	हज़रत मौलाना नवाब हबीबुर्रहमान शेरवानी साहब	1933–1940
54	हज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुहम्मद यूसुफ़ साहब गंगोही	1933–1944
55	हज़रत मौलाना हुसैन अहमद मदनी, सदर मुदर्रिस	1934–1957
56	हज़रत नवाब अ़बदुलबासित खान साहब, हैदराबाद	1934–1947
57	हज़रत खान बहादुर शैख़ ज़ियाउलहक़ साहब, राजूपूर	1935–1954
58	हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद उसमानी, सदर मोहतमिम	1935–1943
59	हज़रत मुफ़ती किफ़ायतुल्लाह साहब, सदर जमीअ़त उलमा	1936–1954

60	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इबराहीम साह़ब, रानदेर सूरत	1936–1948
61	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम मुह़म्मद यासीन साह़ब, नगीना	1941–1958
62	ह़ज़रत मौलाना शाह अ़बदुलक़ारि साह़ब राएपुरी	1941–1942 1957–1961
63	ह़ज़रत मौलाना ज़ह़ीरुल ह़सन साह़ब, कांधला	1941–1943
64	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम अ़बदुर्रशीद मह़मूद साह़ब गंगोही	1943–1948
65	ह़ज़रत मौलाना ह़िफ़ज़ुर्रह़मान साह़ब सेवहारवी	1943–1962
66	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद मंज़ूर नोमानी साह़ब, लखनऊ	1944–1996
67	ह़ज़रत मौलाना खैर मुह़म्मद साह़ब, जालंधर	1944–1947
68	ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अ़ली साह़ब थानवी	1944–1947
69	ह़ज़रत मौलाना बशीर अह़मद साह़ब, किठोर मेरथ	1944–1954
70	ह़ज़रत मौलाना अह़मद सईद साह़ब देहलवी	1945–1957
71	ह़ज़रत मौलाना सै. फ़ख़रुद्दीन अह़मद साह़ब सदर मुदर्रिस के तौर पर दोबारा	1949–1957 1967–1972
72	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद नबीह साह़ब खानजहानपूरी	1949–1961
73	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अ़तीक़ुर्रह़मान उसमानी साह़ब	1949–1984
74	ह़ज़रत मौलाना सय्यद सुलैमान साह़ब नदवी	1950–1951
75	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद मियां साह़ब देवबन्दी	1951–1965
76	ह़ज़रत मौ. डा. मुस़तफ़ा ह़सन अ़लवी साह़ब, लखनऊ	1951–1981
77	ह़ज़रत मौलाना शैख़ ज़करिया साह़ब कांधलवी	1951–1962
78	ह़ज़रत मुफ़्ती मह़मूद नानौतवी, मुफ़्ती मालवा उज्जैन	1954–1968
79	ह़ज़रत मौलाना ह़बीबुर्रह़मान मुह़द्दिस आ़ज़मी साह़ब	1954–1991
80	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुस्समद रह़मानी साह़ब, मोंगीर	1954–1973
81	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद सईद समलकी साह़ब, सुरत	1954–1990
82	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मिन्नतुल्लाह रह़मानी, मोंगीर	1955–1991
83	ह़ज़रत मौ. ह़कीम मुह़म्मद इसमाईल नगीनवी, देहली	1955–1962
84	ह़ज़रत मौ. अ़ल्लामा मुह़म्मद इबराहीम बलयावी	1957–1967
85	ह़ज़रत मौ. डा. सय्यद अ़बदुलअ़ली साह़ब, लखनऊ	1957–1960

86	ह़ज़रत मौलाना सय्यद अबुलह़सन अ़ली नदवी, लखनऊ	1962–1999
87	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुलक़ादिर साह़ब, मालेगॉव	1962–1992
88	ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुलआ़बिदीन सज्जाद, मेरथ	1962–1991
89	ह़ज़रत मौलाना सईद अह़मद अकबराबादी, अलीगढ़	1962–1985
90	ह़ज़रत मौलाना ह़ामिदुल अनसारी साह़ब ग़ाज़ी	1962–1985
91	ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान साह़ब बिजनौरी दोबारा मोहतमिम के तौर पर	1962–1982 1982–2010
92	ह़ज़रत मौलाना फ़ज़्लुल्लाह साह़ब, हैदराबाद	1962–
93	ह़ज़रत मौलाना सय्यद ह़मीदुद्दीन साह़ब फ़ैज़ाबादी	1962–1967
94	ह़ज़रत मौलाना सै. फ़ख़रुल ह़सन साह़ब, सदर मुदर्रिस	1967–1982
95	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुल ह़लीम साह़ब जौनपूरी	1972–1998
96	ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती अबू सऊद साह़ब, बेंगलौर	1972–1986
97	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम मुह़म्मद ज़मान साह़ब, कलकत्ता	1972–2000
98	ह़ज़रत मौ. ह़कीम मुह़म्मद इफ़हामुल्लाह साह़ब, अलीगढ़	1972–1997
99	ह़ज़रत मौलाना मेराजुलह़क़ देवबन्दी, सदर मुदर्रिस	1981–1991
100	ह़ज़रत मौ. मुह़म्मद उस्मान चेयरमैन देवबन्दी	1981–1985
101	ह़ज़रत मौलाना क़ारी सिद्दीक़ अह़मद साह़ब बांदवी	1981–1985
102	ह़ज़रत मौलाना ह़ाजी अ़लाउद्दीन साह़ब, मुमबई	1981–1988
103	ह़ज़रत नवाब उबैदुर्रह़मान ख़ान शेरवानी, अ़लीगढ़	1981–1991
104	ह़ज़रत मौलाना सय्यद अ़सअ़द मदनी साह़ब	1985–2006
105	ह़ज़रत मौलाना ह़कीम अ़बदुलजलील सिद्दीक़ी, देहली	1986–1990
106	ह़ज़रत हाफ़िज़ मुह़म्मद सिद्दीक़ साह़ब एम पी, मुरादाबाद	1986–2012
107	ह़ज़रत मौलाना मुफ़ती अ़बदुलअ़ज़ीज़ साह़ब, सहारनपूर	1988–1991
108	ह़ज़रत मौलाना अ़बदुलअ़ज़ीज़ साह़ब, हैदराबाद	1988–2011
109	ह़ज़रत मौलाना ग़ुलाम रसुल खामोश साह़ब, छापी	1989–2010

110	हज़रत मौलाना इसमाईल मोटा साहब, रांदेर सूरत	1990–2006
111	हज़रत मौलाना नाज़िर हुसैन साहब, हापुड़	1990–2009
112	हज़रत मौलाना नसीर अहमद ख़ान साहब बुलंदशहरी	1991–2008
113	हज़रत मौलाना इसमाईल साहब, कटक उड़ीसा	1992–2006
114	हज़रत मौलाना मुहम्मद आ़क़िल साहब, सहारनपूर	1992–1992

मजलिस–ए–शूरा के वर्तमान सदस्य

क्र.	नाम सदस्य	चयन वर्ष
1	ह़ज़रत मौ. मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब, शूरा सदस्य मोहतमिम दारुल उ़लूम	1413 / 1992 1432 / 2011
2	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालनपुरी, सदर मुदर्रिस, दारुल उ़लूम	1429 / 2008
3	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती मंजूर अह़मद साह़ब, क़ाज़ी कानपुर	1405 / 1985
4	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद याकूब मदरासी साह़ब, मद्रास (चेन्नई)	1406 / 1986
5	ह़ज़रत मौलाना अज़हर नोमानी साह़ब, मोहतमिम मदरसा हुसैनिया रांची	1406 / 1986
6	ह़ज़रत मौलाना बदरूद्दीन अजमल साह़ब, अध्यक्ष जमीअत उलमा आसाम	1413 / 1992
7	ह़ज़रत मौलाना निज़ामुद्दीन साह़ब, नाज़िम इमारत शरिया पटना	1413 / 1992
8	ह़ज़रत मौलाना गुलाम मुह़म्मद वुस्तानवी साह़ब, मोहतमिम मदरसा अक्कलकुआ	1419 / 1998
9	ह़ज़रत मौलाना अब्दुल अलीम फ़ारूक़ी साह़ब, दारुल मुबल्लिग़ीन लखनऊ	1419 / 1998
10	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद राबे हसन नदवी साह़ब, नाज़िम नदवतुल उलमा लखनऊ	1428 / 2007
11	ह़ज़रत मौलाना तलहा साह़ब, मज़ाहिर उ़लूम सहारनपुर	1428 / 2007
12	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मियां ख़लील हुसैन साह़ब, मदरसा असग़रिया देवबन्द	1428 / 2007
13	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इस्माईल साह़ब, मालेगांव महाराष्ट्र (एम एल ए)	1428 / 2007
14	ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद इश्तियाक़ साह़ब, मुज़फ़्फ़रपुर बिहार	1428 / 2007
15	जनाब अलहाज जमील साह़ब, कोलकाता	1428 / 2007

16	ह़ज़रत मौलाना मलक मुह़म्मद इब्राहीम साह़ब, मीलविशारम तमिलनाडू	1428/2007
17	ह़ज़रत मौलाना हकीम कलीमुल्लाह साह़ब, अलीगढ़	1433/2012
18	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अह़मद ख़ानपुरी साह़ब, जामिया इस्लामिया डाभेल गुजरात	1433/2012
18	ह़ज़रत मौलाना रहमतुल्लाह कश्मीरी साह़ब, मोहतमिम बांडीपुरा कश्मीर	1433/2012
20	ह़ज़रत मौलाना अनवारूल रहमान साह़ब, बिजनौर	1433/2012

दारुल उ़लूम के मोहतमिम

क्र.	मोहतमिम का नाम	आरम्भ व अन्त	समय
1.	ह़ज़रत हाजी मुह़म्मद आ़बिद साह़ब (1835–1913)	1283/1866–1284/1867 1286/1869–1288/1871 1306/1888–1310/1893	10 वर्ष
2.	ह़ज़रत मौलाना रफ़ीउद्दीन साह़ब (1836–1891)	1284/1867–1285/1868 1288/1872–1306/1888	19 वर्ष
3.	ह़ज़रत हाजी फ़ज़्ल हक़ साह़ब	1310/1893–1311/1894	1 वर्ष
4.	ह़ज़रत मौलाना मुनीर साह़ब नानौतवी (जन्म 1831)	1311/1894–1313/1895	डेढ वर्ष
5.	ह़ज़रत मौलाना हाफ़िज़ मुह़म्मद अह़मद (1862-1928)	1313/1895-1347/1928	34 वर्ष
6.	ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमाना उस्मानी (मृ. 1929)	1347/1928-1348/1929	स व ा साल
7.	ह़ज़रत मौलाना कारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब (1897-1983)	1348/1930-401/1981	52 वर्ष
8.	ह़ज़रत मौलाना मरग़ूबुर्रहमान बिजनौरी (1914-2010)	1402/1982-1432/2010	32 वर्ष
9.	ह़ज़रत मौलाना गुलाम मुह़म्मद वुस्तानवी (जन्म 1950)	1432/2010	7 माह
10.	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी (ज. 1947)	1432/2011- जारी	जारी

सदर मोहतमिम:

ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी 1935/1354-1943/1362

कारगुज़ार मोहतमिमः

हज़रत मौ. गुलाम रसूल ख़ामोश 2003/1424–2010/1431

दारुल उ़लूम के नायब मोहतमिम

क्र.	नाम/कब से–कब तक		समय
1	हज़रत मौलाना अब्दुल क़दीर देवबन्दी	1308/1890–1309/1892	2 साल
2	हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान	1309/1892–1310/1893 1317/1899–1323/1905	7 साल
3	हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान देवबन्दी	1325/1907–1343/1925	1 8 साल
4	हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब	1344/1926–1347/1928	2 साल
5	हज़रत मौ. सय्यद मुबारक अली नगीनवी	1350/1931–1388/1968	3 7 साल
6	हज़रत मौलाना मुहम्मद ताहिर क़ासमी	1351/1932–1352/1933	1 साल
7	हज़रत मौलाना बशीर अहमद बुलन्दशहरी	1384/1964–1385/1965	1 साल
8	हज़रत मौलाना मेराजुलहक़ देवबन्दी	1386/1966–1396/1976	1 0 साल
9	हज़रत मौ. नसीर अहमद ख़ान बु.शहरी	1391/1971–1414/1994	2 3 साल
10	हज़रत मौ. मु. उस्मान चेयरमैन देवबन्दी	1401/1981–1405/1985	4 साल
11	हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान ख़ैराबादी	1412/1992–1418/1997	5 साल
12	हज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ मद्रासी	1418/1997–अभी तक	जारी
13	हज़रत क़ारी मुहम्मद उस्मान मन्सूरपुरी	1418/1997–1429/2008	1 1 साल
14	हज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ सम्भली	1429/2008–अभी तक	जारी

मुआविन मोहतमिमः हज़रत मौ॰ वहीदुज़्ज़मां कैरानवी 1405/1984–1410/1990

सदर मुदर्रिस और शैख़ुल ह़दीस ह़ज़रात

क्रं	नाम/कब से–कब तक	समय	जन्म–मृत्यु	पद
1	हज़रत मौलाना याक़ूब साहब नानौतवी 1283/1866–1302/1884	19 साल	(1833–1884)	सदर व शैख़

2	ह़ज़रत मौलाना सय्यद अह़मद साह़ब देहलवी 1302/1884–1307/1890	6 साल	(मृत्यु 1894)	सदर व शैख़
3	शेखुल हिन्द ह़ज़रत मौलाना महमूद हसन 1308/1891–1333/1915	25 साल	(1851–1920)	सदर व शैख़
4	ह़ज़रत अल्लामा अनवर शाह साह़ब कश्मीरी 1333/1915–1346/1927	12 साल	(1875–1933)	सदर व शैख़
5	ह़ज़रत मौलाना हुसैन अह़मद मदनी साह़ब 1346/1927–1377/1957	32 साल	(1879–1957)	सदर व शैख़
6	ह़ज़रत अल्लामा मुह़म्मद इब्राहीम बलियावी 1377/1957–1387/1967	10 साल	(1887–1967)	सदर मुदर्रिस
7	ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन मुरादाबादी 1377/1957–1387/1967 ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुद्दीन 1387/1967–1392/1972	10 साल 5 साल	(1889–1972)	शैखुल ह़दीस सदर व शैख़
8	ह़ज़रत मौलाना सय्यद फ़ख़रुल हसन मुरादाबादी 1392/1972–1401/1981	9 साल	(1905–1981)	सदर मुदर्रिस
9	ह़ज़रत मौलाना शरीफुल ह़सन साह़ब देवबन्दी 1392/1972–1397/1977	5 साल	(1920–1977)	शैखुल ह़दीस
10	ह़ज़रत मौलाना मेराजुल हक़ साह़ब देवबन्दी 1401/1981–1412/1991	11 साल	(1910–1991)	सदर मुदर्रिस
11	ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी 1397/1977–1412/1991 ह़ज़रत मौलाना नसीर अह़मद ख़ान बुलन्दशहरी 1412/1991–1429/2008	15 साल 17 साल	(1919–2010)	शैखुल्ह़दीस सदर व शैख़
12	ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद पालनपुरी 1429/2008–अभी तक	जारी	(जन्म 1943)	सदर व शैख़

दारुल उ़लूम के नाज़िम तालीमात

क्र.	नाम	कब से–कब तक	समय
1	ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुर्तज़ा हसन चांदपुरी	1339/1921–1351/1921	10 वर्ष
2	कोई नहीं रहा	1352/1932–1356/1937	5 वर्ष

3	हज़रत मौलाना सय्यद हुसैन अह़मद मदनी (नायब नाज़िम हज़रत मौ. ऐज़ाज़ अली अमरोही)	1357 / 1938–1377 / 1957	19 वर्ष
4	हज़रत अल्लामा मुह़म्मद इबराहीम बलियावी	1377 / 1957–1387 / 1967	10 वर्ष
5	हज़रत मौलाना मियां अख़्तर हुसैन देवबन्दी	1387 / 1967–1397 / 1977	10 वर्ष
6	हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साह़ब कश्मीरी	1398 / 1978–1401 / 1981	3 वर्ष
7	हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साह़ब कैरानवी	1402 / 1982–1405 / 1985	3 वर्ष
8	हज़रत मौलाना रियासत अली बिजनौरी (नायब नाज़िम हज़रत मौ. सय्यद अरशद मदनी)	1405 / 1985–1410 / 1990	5 वर्ष
9	हज़रत मौलाना क़मरूद्दीन साह़ब गोरखपुरी	1410 / 1990–1416 / 1995	5 वर्ष
10	हज़रत मौलाना सय्यद अरशद साह़ब मदनी	1416 / 1995–1429 / 2008	13 वर्ष
11	हज़रत मौलाना मुजीबुल्लाह साह़ब गोन्डवी	1429 / 2008–अभी तक	जारी

दारुल उ़लूम के मुफ़्ती हज़रात

क्र.	नाम	कब से–कब तक	समय
1	हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साह़ब देवबन्दी	1310 / 1892–1329 / 1911 1329 / 1912–1346 / 1927	26 वर्ष
2	हज़रत मौलाना ऐज़ाज़ अली साह़ब अमरोहवी	1347 / 1928–1348 / 1929 1364 / 1945–1366 / 1947	4 वर्ष
3	हज़रत मौलाना मुफ़्ती रियाज़ुद्दीन बिजनौरी	1349 / 1930–1349 / 1930	1 वर्ष
4	हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साह़ब देवबन्दी	1350 / 1931–1354 / 1935 1359 / 1940–1361 / 1942	6 वर्ष
5	हज़रत मौलाना मुह़म्मद सहूल भागलपुरी	1355 / 1936–1358 / 1938	2 वर्ष
6	हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह गंगोही	1358 / 1939–1358 / 1939	1 वर्ष
7	हज़रत मौलाना मुफ़्ती फ़ारूख़ अम्बेहटवी	1362 / 1943–1363 / 1944	1 वर्ष
8	हज़रत मुफ़्ती मेहदी हसन शाहजहांपुरी	1367 / 1948–1387 / 1967	20 वर्ष
9	हज़रत मुफ़्ती महमूद हसन साह़ब गंगोही	1385 / 1965–1401 / 1981	16 वर्ष
10	हज़रत मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साह़ब आज़मी	1385 / 1965–1420 / 2000	35 वर्ष
11	हज़रत मुफ़्ती हबीबुर्रहमान साह़ब खैराबादी	1402 / 1982–जारी	जारी

12	हज़रत मुफ़्ती ज़फ़ीरूद्दीन साहब मिफ़्ताही	1403/1983–1429/2008	26 वर्ष

दारुल उ़लूम के नाएब मुफ़्ती

क्र.	नाम	कब से–कब तक	समय
1	मुफ़्ती क़ाज़ी मसूद अह़मद साहब	1338/1920–1384/1964	46 साल
2	मुफ़्ती अह़मद अली सईद नगीनवी	1357/1938–1401/1981	44 साल
3	मुफ़्ती जमीलुर रहमान साहब सेवहारवी	1374/1955–1386/1966	11 साल
4	मुफ़्ती कफीलुर रहमान साहब देवबन्दी	1397/1977–1427/2006	30 साल
5	मुफ़्ती मह़मूद ह़सन साह़ब बुलन्दशहरी	1413/1992–1433/2012	जारी
6	मुफ़्ती मुह़म्मद ताहिर ग़ाज़ियाबादी	1414/1993–1417/1996	3 साल
7	मुफ़्ती अबदुल्लाह साह़ब कशमीरी	1418/1997–1424/2003	6 साल
8	मुफ़्ती ज़ैनुलइसलाम साह़ब इलाहाबादी	1427/2006–1433/2012	जारी

दारुल उ़लूम के वर्तमान वरिष्ठ उलमा

नाम	पद
ह़ज़रत मौ. मुफ़्ती अबुल क़ासिम नोमानी साह़ब बनररसी	मोहतमिम
ह़ज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ साह़ब मद्रासी	नायब मोहतमिम
ह़ज़रत मौलाना अब्दुल ख़ालिक़ साह़ब सम्भली	नायब मोहतमिम
ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अह़मद साह़ब पालनपुरी	सदर मुदर्रिस व शैखुल ह़दीस
ह़ज़रत मौलाना मुजीबुल्लाह साह़ब गोन्डवी	नाज़िम तालीमात
ह़ज़रत मौलाना शैख़ अबदुल ह़क़ साह़ब आज़मी	उच्च श्रेणी उसताद
ह़ज़रत मौलाना क़मरूद्दीन साह़ब गोरखपुरी	= =
ह़ज़रत मौलाना रियासत अली साह़ब बिजनौरी	= =
ह़ज़रत मौलाना सय्यद अरशद साह़ब मदनी	= =
ह़ज़रत क़ारी मुह़म्मद उस्मान साह़ब मन्सूरपुरी	= =
ह़ज़रत मौलाना नेमतुल्लाह साह़ब आज़मी	= =
ह़ज़रत मौलाना हबीबुर रह़मान साह़ब आज़मी	= =
ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद अमीन साह़ब पालनपुरी	= =

ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ साह़ब ताउलवी	= =
ह़ज़रत मौलाना जमील अह़मद साह़ब सिकरौडवी	= =
ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद अह़मद साह़ब फ़ैज़ाबादी	= =
ह़ज़रत मौलाना नूर अ़ालम खलील अमीनी साह़ब	= =
जनाब मौलाना मुह़म्मद जमाल मेरठी साह़ब	
जनाब मौलाना अ़बदुर्रह़ीम बस्तवी साह़ब	
जनाब मौलाना नसीम अह़मद बाराबंकवी साह़ब	

दारुल उ़लूम देवबन्द के कुछ मशहूर विद्वान

मशाइख़ (धार्मिक व आत्मिक मार्गदर्शक)

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर मक्की
हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोही
हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी
हकीमुल उम्मत हज़रत मौलाना अशरफ़ अली थनवी साहब
शैखुल इस्लाम हज़रत मौलाना सय्यद हुसैनअहमद मदनी
हज़रत मौलाना मुहम्मद अली मुंगेरी साहब
हज़रत मौलाना शाह अब्दुर्रहीम रायपुरी साहब
हज़रत मौलाना सय्यद मियां असग़र हुसैर साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना नाज़िर ग़ामुददीन साहब फ़ैज़ाबादी
हज़रत मौलाना शाह अब्दुल क़ादिर साहब रायपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़ूर अब्बासी साहब मदनी
हज़रत मौलाना अहमद अली लाहौरी साहब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद हसन साहब
हज़रत मौलाना ख़ैर मुहम्मद जालन्धरी साहब
हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद तय्यब साहब क़ासमी
हज़रतशैखुल हदीस मौलाना ज़करिया साहब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना असदुल्लाह साहब रामपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ साहब अकरोडवी
हज़रत मौलाना मिन्नतुल्लाह साहब रहमानी
हज़रत मौलाना शाह अब्दुल ग़नी साहब फूलपुरी
हज़रत मौलाना शाह वसीउल्लाह साहब फ़तेहपुरी
हज़रत मौलाना मसीहुल्लाह ख़ान साहब जलालाबादी

हज़रत मौलाना क़ारी फ़ख़रूददीन साहब गयावी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद हसन साहब गंगोही
हज़रत मौलाना अब्दुल जब्बार साहब मारूफ़ी
हज़रत मौलाना अबरारूल हक़ साहब हरदोईवी
हज़रत मौलाना सय्यद असद मदनी साहब
हज़रत मौलाना क़ारी मुहम्मद सिददीक़ साहब बान्दवी
हज़रत मौलाना इनामुल हसन साहब कांधलवी
हज़रत मौलाना मुहम्मद साहब कांधलवी
हज़रत मौलाना अहमद अली साहब आसामी

कुरान करीम के व्याख्याता व अनुवादक

हज़रत शैखुल हिन्द मौलाना महमूद हसन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुहम्मद यूसुफ़ साहब कश्मीरी
हज़रत मौलाना आशिक़ इलाही साहब मेरठी
हज़रत मौलाना अहमद साहब लाहौरी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब अमरोहवी
हज़रत मौलाना सनाउल्लाह साहब अमृतसरी
हज़रत हकीमुल उम्मत मौ. अशरफ़ अली साहब थानवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साहब बिजनौरी
हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद उस्मानी साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुहम्मद नईम साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना अहमद अली साहब लाहौरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अहमद साहब पालनपुरी
हज़रत मौलाना अहमद सईद साहब देहलवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती ज़फ़ीरूददीन साहब
हज़रत मौलाना हुसैन अली साहब पंजाबी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती तक़ी उस्मानी साहब
हज़रत मौलाना इदरीस साहब कांधलवी
हज़रत मौलाना मुहम्मद अन्ज़र शाह कश्मीरी साहब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती शफ़ी साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुहम्मद उस्मान काशिफ़ साहब हाशमी

हज़रत मौलाना अल्लामा शमसुल हक़ अफ़ग़ानी साहब
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साहब मरवानी
हज़रत मौलाना ग़ुलामुल्लाह ख़ान साहब
हज़रत मौलाना शाईक़ अहमद उस्मानी साहब
हज़रत मौलाना क़ाज़ी ज़ाहिदुल हुसैनी साहब
हज़रत मौलाना याक़ूबुर्रहमान उस्मानी साहब
हज़रत मौलाना अख़लाक़ हुसैन साहब क़ासमी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब कांधलवी
हज़रत मौलाना सय्यद हसन साहब देहलवी
हज़रत मौलाना अब्दुल हई फ़ारूक़ी साहब
हज़रत मौलाना सिब्ग़तुल्लाह साहब
हज़रत मौलाना अरशद मदनी व प्रोफ़ेसर मुहम्मद सुलैमान (हिन्दी)
हज़रत मौलाना सय्यद अनवारूल हक़ साहब काकाख़ैल (पश्तों भाषा)
हज़रत मौलाना मुहम्मद जमाल साहब मेरठी

मुहुद्दिस (हदीस के प्रवक्ता)

हज़रत मौलाना अहमद अली साहब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब कामिलपुरी
हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही
हज़रत मौलाना सरफ़राज़ ख़ान सफ़दर साहब पाकिस्तान
हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ साहब अकौड़ा, खटक पाकिस्तान
हज़रत मौलाना मज़हर साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना शरीफ़ुल हसन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना अहमद हसन साहब अमरोहवी
हज़रत मौलाना नसीर अहमद ख़ान साहब बुलन्द शहरी
हज़रत मौलाना याक़ूबसाहब नानौतवी
हज़रत मौलाना अन्ज़र शाह साहब कश्मीरी
हज़रत मौलाना सय्यद अहमद साहब देहलवी
हज़रत मौलाना अब्दुल जब्बार आज़मी साहब
हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब देवबन्दी

हज़रत मौलाना ख़ुरशीद आलम साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना फ़ख़रूल हसन साहब गंगोही
हज़रत मौलाना सलीमुल्लाह ख़ान साहब पाकिस्तानी
हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती सईद अहमद साहब
हज़रत मौलाना अब्दुल अली साहब मेरठी
हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ आज़मी साहब
हज़रत मौलाना अनवर शाह साहब कश्मीरी
हज़रत मौलाना नैमतुल्लाह साहब आज़मी
हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहकद साहब मदनी
हज़रत मौलाना अरशद साहब मदनी
हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्हाक़ अमृतसरी साहब
हज़रत मौलाना रियासत अली साहब बिजनौरी
हज़रत मौलाना बदर आलम साहब मेरठी
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साहब क़ासमी आज़मी
हज़रत मौलाना इदरीस साहब कांधलवी
मौलाना डॉक्टर मुस्तुफ़ा साहब आज़मी
हज़रत मौलाना फ़ख़रूद्दीन साहब मुरादाबादी
मौलाना डॉक्टर अबुलैस आज़मी साहब
हज़रत मौलाना अब्दुल अज़ीज़ साहब गुजरांवाला (पाकि.)
हज़रत शैखुल हदीस मौलाना मुहम्मद ज़करिया साहब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान मुहद्दिस्स साहब आज़मी
हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद यूसुफ़ साहब बिन्नौरी
हज़रत मौलाना माजिद अली साहब जौनपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुल ग़फ़्फ़ार साहब मऊवी
हज़रत मौलाना ज़फ़र अहमद साहब उस्मानी
हज़रत मौलाना शब्बीर अहमद साहब उस्मानी
हज़रत मौलाना हमीदुद्दीन साहब फ़ैज़ाबादी
हज़रत मौलाना अशफ़ाक़ुर्रहमाना साहब कांधलवी

फ़ुक़हा (मुफ़्ती)

हज़रत मौलाना रशीद अह़मद साह़ब गंगोही
हज़रत हकीमुल उम्मत मौलाना अशरफ़ अली साह़ब थानवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अज़ीज़ुर्रहमान साह़ब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साह़ब देहलवी
हज़रत मौलाना सआदत अली साह़ब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद यूसुफ़ साह़ब कश्मीरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती सहूल साह़ब भागलपुरी
हज़रत मौलाना रशीद अह़मद साह़ब लुधियानवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती रियाज़ुद्दीन साह़ब बिजनौरी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहीम लाजपुरी साह़ब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद फ़ारूक़ साह़ब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुल करीम साह़ब गुमथलवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साह़ब मेरठी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती हबीबुर्रहमान साह़ब ख़ैराबादी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती सय्यद मेहदी हसन साह़ब शाहजहांपुरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती ज़फ़ीरूद्दीन साह़ब मिफ़्ताही
हज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद हसन साह़ब गंगोही
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मन्ज़ूर अह़मद साह़ब मज़ाहिरी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती निज़ामुद्दीन साह़ब आज़मी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अबुल क़ासिम साह़ब नौमानी बनारसी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुह़म्मद इस्माईल बिस्मिल्लाह साह़ब सूरती
हज़रत मौलाना मुफ़्ती अब्दुर्रहमान साह़ब देहलवी
हज़रत मौलाना अह़मद सईद साह़ब अजराडवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती शब्बीर अह़मद साह़ब मदरसा शाही
हज़रत मौलाना फ़क़ीरूल्लाह साह़ब रायपुरी
हज़रत मौलाना क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम साह़ब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद साह़ब सरहदी
हज़रत मौलाना अबू ज़ैदा साह़ब बान्दा
हज़रत मौलाना मुफ़्ती जमील अह़मद साह़ब थानवी

ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती कफ़ीलुर्रहमान निशात साह़ब देवबन्दी
ह़ज़रत मौलाना मुफ़्ती हबीबुर्रहमान साह़ब ख़ैराबादी

इस्लामी तालीमात के प्रवक्ता, लेखक और इतिहासकार

ह़ज़रत मौलाना क़ासिम साह़ब नानौतवी
ह़ज़रत मौलाना अशरफ़ अली साह़ब थानवी
ह़ज़रत मौलाना रहीमुल्लाह साह़ब बिजनौरी
ह़ज़रत मौलाना मुरतज़ा हसन साह़ब चांदपुरी
ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी साह़ब
ह़ज़रत मौलाना क़ारी मुह़म्मद तय्यब साह़ब
ह़ज़रत मौलाना अल्लामा इब्राहीम साह़ब बलियावी
ह़ज़रत मौलाना शब्बीर अह़मद उस्मानी साह़ब
ह़ज़रत मौलाना अल्लामा शम्सुल हक़ साह़ब अफ़ग़ानी
ह़ज़रत मौलाना सय्यद मनाज़िर हसन साह़ब गीलानी
ह़ज़रत मौलाना अल्लामा ख़ालिद महमूद साह़ब
ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी मज़हर हुसैन साह़ब
ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन साह़ब
ह़ज़रत मौलाना नूरूल हसन साह़ब शेरकोट
ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान उस्मानी साह़ब
ह़ज़रत मौलाना याक़ूबुर्रहमान साह़ब
ह़ज़रत मौलाना मंजूर साह़ब नौमानी
ह़ज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साह़ब सियौहारवी
ह़ज़रत मौलाना सरफ़राज़ अह़मद सफ़दर साह़ब
ह़ज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साह़ब आज़मी
ह़ज़रत मौलाना सय्यद नूरूल हसन साह़ब बुख़ारी
ह़ज़रत मौलाना क़ाज़ी मुह़म्मद अतहर साह़ब मुबारकपुरी
ह़ज़रत मौलाना सईद अह़मद साह़ब अकबराबादी
ह़ज़रत मौलाना तक़ी साह़ब उस्मानी
ह़ज़रत शैखुल ह़दीस मौलाना ज़करिया साह़ब सहारनपुरी
ह़ज़रत मौलाना मुह़म्मद यूसुफ़ साह़ब लुधियानवी
ह़ज़रत मौलाना सय्यद मुह़म्मद मियां साह़ब देवबन्दी

हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साहब कैरानवी

मशहूर उस्ताद

हज़रत मौलाना याकूब साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना करीम बख़्श साहब सम्भली
हज़रत मौलाना सय्यद अहमद साहब देहलवी
हज़रत अल्लामा मुहम्मद इबराहीम साहब बलियावी
हज़रत मौलाना अहमद हसन साहब अमरोहवी
हज़रत मौलाना अब्दुर्रहमान साहब कामिलपुरी
हज़रत मौलाना मुनफ़ैत अली साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुहम्मद सिद्दीक़ साहब कशमीरी
हज़रत मौलाना अब्दुल अली साहब मेरठी
हज़रत मौलाना मुहम्मद अब्दस्समी साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना अब्दुल मौमिन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना ज़ैनुल आ़बिदीन साहब आज़मी
हज़रत मौलाना मुहम्मद मज़हर साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना मुहम्मद याहया सहसरामी साहब
हज़रत मौलाना गुलाम रसूल ख़ान साहब हज़ारवी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती मुहम्मद सहूल साहब भागलपुरी
हज़रत मौलाना सिद्दीक़ साहब अम्बेहटवी
हज़रत मौलाना मुहम्मद ऐज़ाज़ अली साहब अमरोहवी
हज़रत मौलाना मुहम्मद मुराद साहब पाक पट्टनी (पाकि.)
हज़रत मौलाना मुहम्मद हुसैन साहब बिहारी
हज़रत मौलाना सय्यद असग़र हुसैन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना शुकरूल्लाह साहब आज़मी
हज़रत मौलाना मुहम्मद रसूल ख़ान साहब
हज़रत मौलाना अली अहमद साहब आज़मी
हज़रत मौलाना अब्दुल हक़ साहब अकरोडवी
हज़रत मौलाना अब्दुस्समद साहब
हज़रत मौलाना हमीदुद्दीन साहब फ़ैज़ाबादी
हज़रत मौलाना अख़्तर हुसैन साहब देवबन्दी

हज़रत मौलाना मुहम्मद हयात साहब सम्भली
हज़रत मौलाना फ़ख़रूल हसन साहब मुरादाबादी
हज़रत मौलाना अहमद हसन साहब कानपुरी
हज़रत मौलाना नसीर अहमद ख़ान साहब बुलन्द शहरी
हज़रत मौलाना अब्दुस्सत्तार साहब मारूफ़ी
हज़रत मौलाना नईम साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना बशीर अहमद साहब बुलन्दशहरी
हज़रत मौलाना सालिम साहब क़ासमी
हज़रत मौलाना मैराजुल हक़ साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना वहीदुज़्ज़मां साहब कैरानवी

दावत व मुनाज़रा के प्रवक्ता

हज़रत मौलाना क़ामिस साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना अब्दुस्सलाम फ़ारूक़ी साहब लखनऊवी
हज़रत मौलाना अहमद हसन साहब लाहौरी
हज़रत मौलाना अब्दुल हलीम फ़ारूक़ी साहब
हज़रत मौलाना ख़लील अहमद साहब सहारनपुरी
हज़रत मौलाना क़ाज़ी मुहम्मद मज़हर हुसैन साहब
हज़रत मौलाना सय्यद मुरतज़ा हसन साहब चांदपुरी
हज़रत मौलाना अब्दुस्सत्तार साहब तौंसवी
हज़रत मौलाना अबुल वफ़ा साहब शाहजहांपुरी
हज़रत मौलाना लाल हुसैन अख़्तर साहब
हज़रत मौलाना असदुल्लाह साहब रामपुरी
हज़रत मौलाना अहमद हयात साहब फ़ातेह क़ादयान
हज़रत मौलाना सय्यद इरशाद अहमद फ़ैज़ाबादी साहब
हज़रत मौलाना अल्लामा ख़ालिद महमूद साहब
हज़रत मौलाना मुफ़्ती महमूद हसन साहब गंगोही
हज़रत मौलाना मुहम्मद इस्माईल साहब कटकी
हज़रत मौलाना मन्ज़ूर अहमद साहब नौमानी
हज़रत मौलाना इमाम अली दानिश साहब लखीमपुरी
हज़रत मौलाना नूर मुहम्मद टांडवी साहब

हज़रत मौलाना मुहम्मद अमीन सफ़दर साहब औकाडवी
हज़रत मौलाना अब्दुल्लतीफ़ साहब आज़मी
हज़रत मौलाना मुहम्मद ताहिर साहब गयावी

आज़ादी की जंग में भाग लेने वाले कुछ देवबन्दी उलमा

हज़रत हाजी इमदादुल्लाह मुहाजिर साहब मक्की
हज़रत मौलाना महमूद क़ासिम साहब नानौतवी
हज़रत मौलाना रशीद अहमद साहब गंगोही
शैखुल हिन्द हज़रत मौलाना महमूद हसन साहब देवबन्दी
हज़रत मौलाना मुफ़्ती किफ़ायतुल्लाह साहब शाहजहांपुरी
इमाम इंक़लाब हज़रत मौलाना उबैदुल्लाह साहब सिंधी
हज़रत शैखुल इस्लाम मौलाना हुसैन अहमद साहब मदनी
हज़रत मौलाना मुहम्मद मियां मन्सूर अन्सारी साहब
हज़रत मौलाना मुहम्मद सादिक़ साहब कराची सिंध
हज़रत मौलाना अहमद अली साहब लाहौरी
मुजाहिद मिल्लत हज़रत मौलाना हिफ़्ज़ुर्रहमान साहब सियौहारवी
रईसुल अहरार हज़रत मौलाना हबीबुर्रहमान साहब लुधियानवी
हज़रत मौलाना ख़लीफ़ा गुलाम मुहम्मद साहब दीनपुरी
हज़रत मौलाना सज्जाद हुसैन साहब बिहारी
हज़रत मौलाना अहतेशाम हुसैन साहब थानवी
हज़रत मौलाना सय्यद मुहम्मद मियां साहब देवबन्दी

लेखक व पत्रकार

नाम / कार्यक्षेत्र
मौलाना हबीबुर्रहमान साहब उसमानी संपादक मासिक अल–क़ासिम व अल–रशीद दारुल उ़लूम, देवबन्द
मौलाना सय्यद मनाज़िर हसन गीलानी संपादक मासिक अल–क़ासिम, दारुल उ़लूम
मौलाना मन्ज़ूर अहमद साहब नौमानी संपादक अल–फ़ुरक़ान, बरेली व लखनऊ
मौलाना सईद अहमद साहब अकबराबादी संपादक बुरहान, देहली

मौलाना अहसानुल्लाह ख़ान ताजवर साह़ब नजीबाबादी आपके संपादन में बहुत सी पत्रिकायें प्रकाशित हुईं
मौलाना मज़हरूद्दीन साह़ब बिजनौरी दैनिक अल–अमान, दिल्ली
मौलाना शाईक़ उस्मानी साह़ब असर–ए–जदीद, कलकत्ता
मौलाना आमिर उस्मानी साह़ब मासिक तजल्ली, देवबन्द
मौलाना क़ाज़ी ज़ैनुल आ़बिदीन मेरठी अल–हरम, मेरठ
मौलाना हबीबुर्रहमान साह़ब बिजनौरी मन्सूर और अलख़ैल साप्ताहिक
मौलाना अब्दुल वहीद साह़ब सिद्दीक़ी नई दुनिया, दिल्ली
मौलाना खलीक़ अह़मद साह़ब सरधन्वी पूर्व संपादक माहनामा दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना अज़हर शाह कैसर साह़ब पूर्व संपादक माहनामा दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना हामिद अन्सारी ग़ाज़ी साह़ब संपादक मदीना, बिजनौर व जम्हूरियत, देहली
मौलाना रियासत अ़ली साह़ब बिजनौरी पूर्व संपादक माहनामा दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना तक़ी उस्मानी साह़ब अलबलाग़, कराची पाकिस्तान
मौलाना समीउल हक़ साह़ब अलहक़, अकौडा, ख़टक
मौलाना मुफ़्ती यूसुफ़ साह़ब लुधियानवी बईनात, बिन्नौरी टाऊन कराची, पाकिस्तान
मौलाना मुह़म्मद सादिक़ साह़ब बस्तवी नक़ूश हयात, बस्ती

मौलाना असीर अदरवी साह़ब तिमाही तर्जुमान–ए–इस्लाम, बनारस
मौलाना हबीबुर्रहमान क़ासमी आज़मी माहनामा दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना वहीदुज़्ज़मान साह़ब कैरानवी अल–किफ़ाह़ (अरबी मासिक), दिल्ली
मौलाना बदरुल ह़सन क़ासमी साह़ब पूर्व संपादक अल–दाई (अरबी मासिक), दारुल उ़लूम देवबन्द
मौलाना नूर आलम अमीनी साह़ब अल–दाई (अरबी मासिक), दारुल उ़लूम
मौलाना ऐजाज़ अली साह़ब आज़मी अल–मुआसिर तिमाही, मऊ
मौलाना मुफ़्ती सलमान साह़ब मन्सूरपुरी निदा–ए–शाही, मुरादाबाद
मौलाना नूरूलहसन राशिद साह़ब तिमाही अहवाल व आसार, कांधला
मौलाना मुह़म्मद हाशिम क़ासमी साह़ब अल–फ़ैसल, हैदराबाद
मौ. क़ाज़ी मुजाहिदुल इस्लाम क़ासमी तिमाही, बहस व नज़र, पटना
मौलाना रिज़वान क़ासमी साह़ब सफ़ा, जामिया सबीलुस्सलाम, हैदराबाद
मौलाना कफ़ील अह़मद अलवी कैरानवी आईना–ए–दारुल उ़लूम देवबन्द, पाक्षिक
मौलाना मुह़म्मद सालिम जामई साह़ब अल–जमीअत, साप्ताहिक, देहली
मौलाना ह़क़्क़ानी क़ासमी साह़ब इस्तआ़रा, नई देहली
मौलाना वारिस साह़ब मज़हरी तर्जुमान–ए–दारुल उ़लूम, नई देहली

मौलाना नदीमुल वाजिदी साह़ब देवबन्दी तर्जुमान–ए–देवबन्द, देवबन्द
मौलाना असरारूल हक़ साह़ब मिल्ली इत्तिहाद, नई देहली
मौलाना अब्दुल क़ादिर शम्स क़ासमी मिल्ली इत्तिहाद, नई देहली
मौलाना बुरहानुद्दीन साह़ब क़ासमी ईसटर्न किरिसेंट (इंगलिश मासिक), मुमबई

शब्दावली

उर्दू/अ़रबी शब्द	**हिंदी अर्थ**
सरप्रस्त	संरक्षक
मोहतमिम	कुलपति
सदर मुदर्रिस	प्रधानाध्यापक
शैख़ुल हदीस	ह़दीस की पुस्तक बुख़ारी के अध्यापक
मजलिस–ए–शूरा	प्रबन्धक निकाय
मजलिस–ए–आ़मिला	कार्यकारिणी समिति
मजलिस तालीमी	शैक्षणिक परिषद
मुफ़ती	फ़तवा देने वाला
मुहुद्दिस	ह़दीस के प्रवक्ता
मौलाना	विद्वान
आ़लिम/उ़लमा	विद्वान
फ़ाज़िल/फ़ुज़ला	स्नातक
फ़राग़त	स्नातक स्तर की पढ़ाई
दौरह ह़दीस	आ़लिम पाठ्यक्रम का अन्तिम वर्ग
फ़क़ीह/फ़ुक़हा	इसलामी क़ानून के विद्वान
दीन	धर्म
मसलक	विचारधारा
दावत	इसलाम धर्म का प्रचार
मुनाज़रा	धार्मिक वादविवाद
तफ़सीर	कुरान करीम की व्याख्या
फ़िक़ह	इसलामी क़ानून का संग्रह
किताब व सुन्नत	कुरान व ह़दीस
इ़लम	ज्ञान
तालीम	शिक्षा
शोबा	विभाग

दफ़्तर	कार्यालय
रूदाद	रिपोर्ट
नाज़िम	प्रबन्धक
सदर	अध्यक्ष
इजलास	बैठक
जलसा	बैठक, सम्मेलन
हिजरी	मुसलिम कैलंडर
मुह़र्रम	मुसलिम कैलंडर का पहला महीना
सफ़र	मुसलिम कैलंडर का दूसरा महीना
रबीउ़लअव्वल	मुसलिम कैलंडर का तीसरा महीना
रबीउ़स्सानी	मुसलिम कैलंडर का चौथा महीना
जुमादलऊला	मुसलिम कैलंडर का पॉचवां महीना
जुमादसानिया	मुसलिम कैलंडर का छठा महीना
रजब	मुसलिम कैलंडर का सातवां महीना
शाबान	मुसलिम कैलंडर का आठवां महीना
रमज़ान	मुसलिम कैलंडर का नौवां महीना
शव्वाल	मुसलिम कैलंडर का दसवां महीना
ज़ूलक़ादह	मुसलिम कैलंडर का ग्यारहवां महीना
ज़ूलहि़ज्जह	मुसलिम कैलंडर का बारहवां महीना
माहनामा	मासिक
सालाना	वार्षिक
वफ़ात	मृत्यु, निधन
इंतिक़ाल	मृत्यु, निधन

मकतबा दारुल उलूम, शैखुल हिंद अकेडमी व तहफ़्फ़ुज़–ए–ख़तम–ए–नबुव्वत

की प्रकाशित पुस्तकें

1 तारीख़ दारुल उलूम देवबन्द, 2 खण्ड [illegible]
2 तारीख़ दारुल उलूम देवबन्द, 2 खण्ड [illegible]
3 दारुल उलूम देवबन्द [illegible]
4 फ़तावा दारुल उलूम देवबन्द, 17 खण्ड [illegible]
5 उलमा–ए–देवबन्द का दीनी रुख़ और मसलकी मिज़ाज
6 हज़रत मौलाना मुहम्मद क़ासिम नानौतवीः हयात और कारनामे
7 हज़रत मौलाना रशीद अहमद गंगोहीः हयात और कारनामे
8 शैखुल हिंद हज़रत मौ. महमूद हसनः हयात और कारनामे
9 सवानेह क़ासमी [illegible]ज़रत नानौतवी की जीवनी[illegible]
10 दारुल उलूम देवबन्द के इबतिदाई नुक़ूश
11 मक़ालात–ए–हबीब, 3 खण्ड
12 इशाअत–ए–इसलाम
13 अफ़कार–ए–आलम, 2 खण्ड
14 आईन–ए–हक़ीक़त नुमा
15 तदवीन–ए–सेयर व मग़ाज़ी
16 तज़किरतुन नोमान
17 अयोध्या के इसलामी आसार
18 इसलाम और अक़लियात
19 खवातीन–ए–इसलाम की इलमी व दीनी खिदमात
20 खैरुलकुरून की दरसगाहें और उन का निज़ाम–ए–तालीम
21 अहद–ए–रिसालत
22 उलूमुल कुरान
23 मखतूतात दारुल उलूम
24 मुसलमानों के हर तबक़े में इलम व उलमा
25 सवानेह–ए–अइम्मा अरबअ़ह
26 शूरा की शरई हैसियत
27 निकाह व तलाक़ः अक़ल व शरअ़ की रौशनी में

अकाबिर की पुस्तकें

28 मजमूआ हफ़्त रसाइल
29 आब–ए–ह़यात
30 इंतसारुल इसलाम
31 तसफ़ितुल अक़ाइद
32 तक़रीर–ए–दिल पज़ीर
33 [illegible]सलाम
34 हिकमत क़ासमियह
35 अहसनुल कुरा तौज़ीह़ औसकि़ल उ़रा
36 अररायुन्नजीह़ फ़ी रकआ़त अल–तरावीह
37 औसकुल उ़रा फ़ी तह़क़ीक़ अल–जुमअ़ति फ़िल कुरा
38 हिदायतुल फ़ी कि़रअतिल मुक़तदी
39 अदिल्ल–ए–कामिला
40 ईज़ाहुल अदिल्लह
41 बराहीन–ए–क़ासमियह
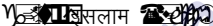
फिरक़ों के खण्डन में पुस्तकें

42 मुह़ज़रात सेट [illegible]रैलवियत व अन्य[illegible]
43 [illegible]ण्डन का पूरा सेट
44 रद्दे मिरज़ाइयत के ज़र्रीं उसूल
45 सुबूत ह़ाज़िर हैं
46 खतम–ए–नुबूव्वत
47 गैर मुक़ल्लिदियत [illegible]खण्डन का पूरा सेट
48 फ़िरक़ा–ए–अहल ह़दीस का जाएज़ह
49 मजमूआ़ रसाइल चांदपूरी
50 मजमूआ़ रसाइल शाहजहांपूरी
51 बरैलवियतः तलिस्म या फरेब
52 दुरर–ए–मंसूरह
53 गलत फ़हमियों का इज़ाला
54 जमाअ़त इसलामी का दीनी रुख
55 मौदूदी मज़हब
56 मौदूदी दसतूर और अ़क़ाइद की ह़क़ीक़त

57 मकतूबात–ए–सलासा

58 मकतूब–ए–हिदायत

59 नेक बीबियां नमाज़ कहां पढें

60 नमाज़ के अहम मसाइल की तह्क़ीक़

61 चंद अहम अ़सरी मसाइल

अ़रबी पुस्तकें

62 उलमाउ देवबन्दः खिदमातुहुम फ़िल ह़दीस

63 उलमाउ देवबन्दः इत्तिजाहुहुम अल–दीनी

64 अल–ह़दीस अल–ह़सन

65 ह़सनुन सह़ीह 3 खण्ड

66 ह़सनुन ग़रीब 2 खण्ड

67 अल–इसलाम व अल–अ़क्लानियह

68 अल–इमाम मुह़म्मद क़ासिम नानौतवी......

69 मुह़वरीत फिद दीन

70 अल–ह़ालत अल–तालीमियह

71 अल–फ़ितनत अल–दज्जालियह

72 [illegible]इसलाम [illegible]

73 [illegible]

74 [illegible]

75 [illegible]

76 तसहीलुल उसूल

77 बाबुल अदब [illegible]

78 क़साइद मुंतखबह [illegible]

79 मबादियुल फ़लसफ़ह

80 तफ़सीरुन नुसूस

आरडर का पता

मकतबा दारुल उ़लूम

देवबन्द ज़िला सहारनपूर यू.पी. 247554

Phone: 01336-222429 Fax: 222768

info@darululoom-deoband.com